चिड़िया टापू पर सूर्यास्त का दृश्य

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय,भारत सरकार, नई दिल्ली

अक्तूबर- दिसम्बर, 2020

कलिम्पोंग से ल्हासा जाने वाला सिंह रोड़(पश्चिम बंगाल)

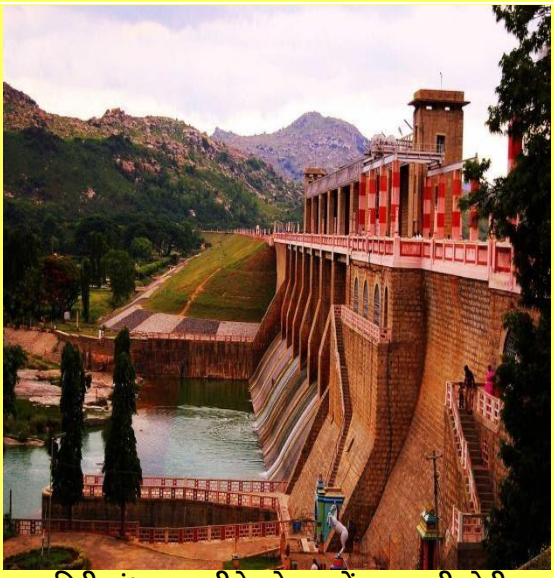

कृष्णगिरी बांध तथा (नीचे) होस्सुर में गुलाब की खेती

आगामी अंक में ....

खजुराहो की यात्रा तथा राजस्थान में पर्यटन पर एक नई पहल

अतुल्य भारत

।। पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका।।

संरक्षक : श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, सचिव, पर्यटन मंत्रालय,
भारत सरकार
प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : श्री ज्ञान भूषण,
आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
सम्पादक : सुश्री संतोष सिल्पोकर,संयुक्त निदेशक,
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
प्रबंध-संपादक : श्री मोहन सिंह, कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय
अन्य सहयोगी : श्री राज कुमार, पर्यटन मंत्रालय

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
कुछ चित्र लेखकों द्वारा उपलबध कराएं गए है और कुछ 'गूगल' से लिए गए हैं, जिनके के लिए गूगल को धन्यवाद ज्ञापित।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :
संपादक, अतुल्य भारत,
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,
36, जनपथ, नई दिल्ली – 110011.
दूरभाष : 011-23724255
ई-मेल- editor.atulybharat@gmail.com

सूचनाओं के प्रचार हेतु नि:शुल्क वितरण

इस अंक में .....

वर्ष : 6 अंक – 22

प्रधान सम्पादक की ओर से... 06

अदभुत अष्टलक्ष्मी कोविल	प्रो. के.के.नम्बूदिरि	08
विविध पर्यटन स्थलों का संगम	एन.रमेश कुमार	14
दुनिया में कश्मीरी केसर की महक	डा. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा	33
योग सीखना : सन्यासी बनना नहीं	श्री क्षेत्रपाल शर्मा	39
एमराल्ड और ब्लयू	सुश्री सौम्या मुखर्जी	44
हरिद्वार कुम्भ 2021	डॉ. विदुषी शर्मा	57
कविताएं और गज़ल	श्री घनश्याम बैरवा,	66
	सुश्री कंचन बडोला और	67
	डा.विश्वरंजन	68
याद इन्हें भी कर लें : संगीत मार्तण्ड पं.जसराज		69
पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिधियां और समाचार		72

परामर्शदाता व प्रधान सम्पादक
ज्ञान भूषण,आई.ई.एस.
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

'अतुल्य भारत' का 22वां अंक आपके सामने हैं। मंदिरों आदि की यात्रा को हम तीर्थ यात्रा भी कह सकते हैं। अब यह मंदिर कहां स्थित हैं, यह महत्वपूर्ण होता है। दक्षिण भारत में ऐसे कई मंदिर हैं जो समुद्र तट के एकदम निकट हैं। तमिलनाडु के चेन्नई में एक ऐसा ही एक सुन्दर और आघ्यात्मिक-पर्यटन स्थल है

: अष्टलक्ष्मी कोविल। इस गंतव्य की विशेषता, यहां के उत्सवों आदि के बारे में श्री के.के. नम्बूदिरि ने पाठकों को अवगत कराया है।

कृष्णागिरी दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य एक ऐसा नगर है, जो अपनी एक खास ग्रामीण जीवनशैली, हरे-भरे खेतों और गुलाब के बगीचों के कारण एक खूबसूरत पर्यटन स्थल है। यह शहर किलों, प्राचीन मंदिरों, संग्रहालयों, बांधों और झीलों के आश्चर्यजनक प्राकृतिक नजारों के साथ ही प्रागैतिहासिक काल के ऐतिहासिक अजूबों का मिश्रण है। श्री एन.रमेश कुमार ने अपने आलेख 'विविध पर्यटन स्थलों का संगम' के माध्यम से अभी तक कम ज्ञात गंतव्यों के बारे में जानकारी दी है।

पिछली जुलाई में ही कश्मीर की केसर को GI Tag यानी की भौगोलिक पहचान की मान्यता मिली है। इससे कश्मीरी केसर को विश्व में एक विशिष्ट पहचान मिल गई है। कश्मीर के लिए इसे शुभ संकेत माना जा रहा है। 'दुनिया में महकेगी कश्मीरी केसर की महक' में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा ने कश्मीर में केसर की खेती के पुनरोद्धार में सरकार द्वारा किए गए प्रयासों से कश्मीरी केसर के इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत को रेखांकित किया है।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह को स्नेह से "एमराल्ड आइलैंड्स" यानि पन्ने जैसे द्वीप कहा जाता है। इसकी अनुपम सुंदरता, चकित कर देने वाली वनस्पति और जीव-जंतु का अलग ही महत्व है। यहां अनेक आकर्षक स्थान, सूरज को चूमते समुद्री तट, मोहक पिकनिक स्पॉट्स और कई अन्य आश्चर्य हैं, जो राज्य के पर्यटन को एक नए ही मुकाम पर लेकर जा रहे हैं। सुश्री सौम्या मुखर्जी ने अपने आलेख 'एमराल्ड और ब्ल्यु में द्वीप के बारे में उल्लेखनीय जानकारी प्रस्तुत की है।

भारत में कुम्भ का आयोजन आस्था से जुड़ा है क्योंकि कि इसे हमारी सभ्यता का संगम तथा आत्म-जागृति का प्रतीक माना जाता है। डॉ. विदुषी शर्मा ने अपने आलेख '**हरिद्वार कुम्भ - 2021'** में इसके पौराणिक महत्व पर प्रकाश डाला है।

इनके अलावा श्री क्षेत्रपाल शर्मा का आलेख 'योग सीखना : सन्यासी बनना नही।' के साथ ही घनश्याम दास बैरवा की ग़ज़ल, सुश्री कंचन बडोला तथा डॉ. विश्वरंजन की कविताओं के साथ ''पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिधियां और समाचार'' भी समाहित किए गए हैं।

पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास कर रहा है और इसमें कोई दो राय नहीं हैं कि ''अतुल्य भारत'' पत्रिका निश्चित रूप से अपना योगदान दे रही है। इस पत्रिका के माध्यम से मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का अवसर दिया जा रहा है। हम सभी लेखकों के सहयोग तथा गणमान्य अतिथियों के प्रोत्साहन के लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं ।

अतुल्य भारत पत्रिका को प्रोत्साहित करने के लिए हम माननीय पर्यटन मंत्री जी के आभारी हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में हम आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदय का भी आभार व्यक्त करते हैं जो देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए हमें सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं ।

अंत में, सभी लेखकों तथा पाठकों का धन्यवाद करता हूं जो इस पत्रिका में निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं । आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा ।

ह/-
(ज्ञान भूषण)
प्रधान संपादक

चेन्नई

अद्भुत अष्टलक्ष्मी कोविल

-प्रो. के.के.नम्बूदिरि

तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई के पास सम्भ्रांत समुद्र तट तटरेखा के निकट बना है, अष्टलक्ष्मी कोविल यानि एक हिंदू मंदिर। यह मंदिर देवी लक्ष्मी और उनके आठ प्राथमिक रूपों को समर्पित है। इस मंदिर की विशेषता है कि इसके 'बहु-स्तरीय' अभयारण्यों का इस प्रकार से निर्माण किया गया है कि दर्शन करते समय भक्तगण मंदिर में स्थापित किसी भी देवी के ऊपर (अभयारण्य पर) कदम नहीं रखते हैं।

समुद्र तटपर अष्टलक्ष्मी मंदिर का विहंगम दृश्य

विशाल गुंबद वाले अष्टलक्ष्मी मंदिर में घड़ी की सुईयों की दिशा में आगे बढ़ते हुए ही सभी प्रतिमाओं के दर्शन किए जा सकते हैं। अंत में नवम मंदिर है, जो भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित है। देवी लक्ष्मी आठ अलग-अलग रूपों यानि अष्टलक्ष्मी के रूप में, नौ गर्भगृह में, चार स्तरों पर विराजमान हैं। देवी लक्ष्मी की सभी प्रतिमाएं अलग-अलग तल पर स्थापित की गई हैं।

लक्ष्मी और विष्णुजी का मंदिर दूसरे स्तर पर है। प्रथम पूजा-अर्चना यहीं से शुरू होती है। सीढ़ियों से चढ़ते हुए, श्रृद्धालु तीसरे स्तर की ओर जाते हैं, जिसमें संतानलक्ष्मी, विजयलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी और गजलक्ष्मी

के मंदिर हैं। चौथे स्तर पर मात्र धनलक्ष्मी मंदिर स्थित है। इसके बाद नीचे आते समय पहले तल पर आदिलक्ष्मी, धैर्यलक्ष्मी और ध्यान लक्ष्मी का तीर्थस्थल है।

मूर्तियों की स्थापना : महालक्ष्मी को समर्पित मंदिर के गर्भगृह में नौ अलग-अलग मंदिर हैं। यह सब अलग अलग स्तरों पर इस तरह से निर्मित हैं कि सभी आठ रूप किसी एक स्थान से दिखाई देते हैं। कुल चार स्तर या तल और नौ ही अलग अलग गर्भगृह हैं।

वैसे तो देश में लक्ष्मीजी के अनेक एक से बढ़कर एक सुन्दर मंदिर हैं पर चेन्नई के अडयार इलाके में समुद्र के किनारे पर बना अष्टलक्ष्मी मंदिर बेहद खास है। इस मंदिर में महालक्ष्मी (उनके आठ रूपों में) और महाविष्णु प्रतिस्थापित किए गए हैं । इस मंदिर में देवी लक्ष्मी के अष्ट स्वरूपों में लक्ष्मी जी की प्रतिमाओं के अलावा गणेशजी और अन्य कई देवी-देवाताओं की भी मूर्तियां स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त श्री विष्णु के दशावतार के चित्र बनाए हैं।

ॐ आकार में बना विशाल मंदिर

लक्ष्मी के सभी स्वरूपों को समर्पित ॐ के आकार में बना माता अष्टलक्ष्मी का यह मंदिर बाहर से देखने पर भी बहुत सुन्दर है। दक्षिण भारत के अन्य मंदिरों की भांति, इस पर भी विशाल कलश बनाया गया है। यहां देवी लक्ष्मी के आठ स्वरूप विराजमान हैं , इसलिए इसे अष्टलक्ष्मी मंदिर कहा जाता है। लोक मान्यताओं के अनुसार, अष्टलक्ष्मी के दर्शन करने से श्रृद्धालुओं को धन, विद्या, वैभव, शक्ति और सुख की प्राप्ति होती है। महालक्ष्मी के आठ रूपों को मंदिर के आठ भागों द्वारा दर्शाया गया है।

इसका निर्माण "ॐ" आकृति के रूप में किया गया है और इसे ओम क्षेत्र कहा जाता है। मंदिर का डिजाइन और निर्माण, प्रथम वैदिक मंत्र, प्रणव ॐ के आकार में किया गया था। बंगाल की खाड़ी की चिरस्थायी गर्जन, तरंग प्रणव ध्वनि को पुन: उत्पन्न करती हैं और एक याद दिलाती हैं कि भगवान और देवी प्राणध्वनि में निवास करते हैं। इसलिए ओंकार क्षेत्र के रूप में जाना जाता है।

32 कलशों वाला त्रिस्तरीय मंदिर

मंदिर का निर्माण कांचीकामकोटी मठ के श्री चन्द्रशेखरेंद्र सरस्वती की इच्छा पर किया गया था। विद्वान श्रीनिवास वरदाचार्य के कुशल नेतृत्व में देवी लक्ष्मी के भक्तों की एक समिति ने 1974 में इस मंदिर का निर्माण आरंभ करवाया था। जनवरी 1974 में जनभागीदारी से इसकी नींव रखी गई थी और 5 अप्रैल 1976 को अहोबिल मठ के 44वें गुरु वेदांतीर श्री यतेन्द्र स्वामी की उपस्थिति में मंदिर के अभिषेक के साथ इस मंदिर में विधिवत पूजा-अर्चना शुरू हुई थी।

तीन मंजिला यह मंदिर 65 फीट लंबा और 45 फीट चौड़ा है। जिसके चारों ओर विशाल आंगन हैं। मंदिर की द्रविड वास्तुशैली उथिरामेरुर के वैंकट सुंदरराज पेरुमल मंदिर से ली गई है। इस मंदिर को 1976 से ही संरक्षित क्षेत्र माना गया है।

2012 में, 70 लाख रुपए की लागत से मंदिर का जीर्णोद्धार (पुनर्निमाण) किया गया था। मंदिर में कुल 32 कलशों का नवनिर्माण किया गया था, जिसमें गर्भगृह के ऊपर 5.5 फीट ऊंचा स्वर्णजटित कलश भी शामिल है।

एक और विशेषता है कि मंदिर के गुम्बदों का निर्माण इस प्रकार से किया गया है कि गुम्बदों की छाया जमीन पर नहीं पड़ती है।

धर्म और संस्कृति पर प्रभाव

अष्टलक्ष्मी मंदिर में देवी लक्ष्मी को आठ अलग-अलग रूपों में विराजमान किया गया है। अत: भक्तगण आठ रूपों में ही उनकी पूजा –अर्चना करते हैं। श्रृद्धालुओं का मानना है कि देवी के आठ अलग-अलग

रूपों आराधना करने से उन्हें आशीर्वाद के रूप में धन, संतान, सफलता, समृद्धि, साहस, शौर्य, धान्य (भोजन) और ज्ञान की आठ विभिन्न प्रकार की उपलब्धियों में सफलता प्रदान करती है। मंदिर में प्रति दिन हजारों भक्त दर्शन/ यात्रा करने आते हैं जिन्हें तीर्थयात्री भी कहा जाता है । दर्शनार्थी देवियों के चरणों में कमल के फूल चढ़ा कर जीवन में सुख-सम्पत्ति का आशीर्वाद मांगते हैं। कमल के फूल अर्पित करना यहां की परम्परा है।

मंदिर की प्रमुख देवी महाविष्णु के साथ महालक्ष्मी हैं। यद्यपि यह मंदिर विशेष रूप से महालक्ष्मी को समर्पित है परन्तु भगवान महाविष्णु को भी मंदिर में विशेष स्थान प्राप्त है क्योंकि वह उनकी पत्नी हैं। हालांकि, महालक्ष्मी के आठ रूप तीन अन्य मंजिलों में फैले हुए हैं, फिर भी पूजा की शुरुआत मुख्य तीर्थस्थल से होती है और तत्पश्चात ही दर्शनार्थी महालक्ष्मी के आठ अलग-अलग रूपों की आराधना कर सकते हैं।

लक्ष्मी के आठ रूप हैं : आदिलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धैर्यलक्ष्मी, गजलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, विजयलक्ष्मी, संतानलक्ष्मी और धान्यलक्ष्मी। धन के आठ प्रकार जो इन रूपों यानि साहस, धन, अन्न, समृद्धि, सफलता, ज्ञान, संतान और वीरता से संबंधित हैं। लोग महालक्ष्मी और महाविष्णु से प्रार्थना करते हैं ताकि वे सभी आठ धन प्राप्त करने की क्षमता के साथ धन्य हो जाएं।

श्री महालक्ष्मी तथा श्री नारायण को समर्पित, अष्टलक्ष्मी मंदिर एकमात्र मंदिर है जो तमिलनाडु के पूर्वी तट पर बंगाल की खाडी में चेन्नई, में बसंत नगर क्षेत्र के तट के पास स्थित है। चेन्नई सेंट्रल से अष्टलक्ष्मी मंदिर की दूरी लगभग 16 कि.मी. है।

शांत समुद्र तट

परिसर में अन्य मंदिर

मुख्य मंदिर के अलावा, मंदिर परिसर में अन्य मंदिर भी हैं। दशावतार सन्निधि या भगवान विष्णु के दस रूपों को समर्पित मंदिर परिसर के अंदर स्थित है। मुख्य तीर्थ से बाहर, गुरुवायुरप्पन और गणेश को समर्पित मंदिर परिसर के दक्षिण-पूर्व की ओर है, जबकि दक्षिण-पश्चिम की ओर कमला विनयनगर सन्निधि को समर्पित मंदिर है। चक्रतालवर और योग नरसिम्हर सन्निधि को समर्पित मंदिर परिसर के पश्चिम में है

और अंजनेय (हनुमान) को समर्पित मंदिर उत्तर-पश्चिम की ओर है। मंदिर के उत्तर-पश्चिम कोने में धन्वंतरी को समर्पित मंदिर स्थित है। मंदिर के अंदर मुख्य देवता गरुड़वर सन्निधि (गरूड़) को समर्पित मंदिर है।

मूल : मंदिर को समुद्र के किनारे बनाने का कारण है कि पुराणों के अनुसार, जब देवताओं ने अनंत जीवन के लिए अमृत की खोज में समुद्र -मंथन किया, तब समुद्र से अनेक वस्तुएं प्राप्त हुईं। सर्वप्रथम देवी महालक्ष्मी समुद्र से अमृत कलश लेकर प्रकट हुई थीं। श्रीविष्णु जी ने तुरंत उनसे विवाह कर लिया। यह देवी महालक्ष्मी ही हैं जो अष्टार्यम अर्थात अष्टम सिद्धियां और अष्ट ऐश्वर्यम्) आठ गुना धन (का आशीर्वाद प्रदान करती हैं। अष्टार्यम को मंदिर में चित्रित किया गया है। समुद्र से देवी के प्रकट होने के कारण ही, देवी के लिए समुद्र के सामने तट पर एक मंदिर का निर्माण और संरक्षण किया गया और उन्हें आठ रूपों में स्थापित किया गया है।

अष्टांग विमानम्

इस मंदिर का निर्माण अष्टांग विमानम् (आठ खंड) शैली के मॉडल पर किया गया है। यह मंदिर निर्माण की प्राचीन शैलियों में से एक है। यह अष्टांग विमानम् शैली तिरुकोष्टियुर में पाई जाती है जहां श्री रामानुज ने तिरुक्कोटियुर नांबी, मदुरई (कुडलझारगर), तिरुत्तंगल, कांची (वैकुंठनाथर मंदिर) और उत्तरामुरुर के चरणों में अष्टाक्षर मंत्र का अर्थ सीखा।

विमानम् शैली में विशेष लक्षण हैं, त्रिस्तभरीय (मंजिलें या तल) घुमावदार सीढ़ियां जो दाहिने से ऊपर की ओर जाती हैं और उनमें कोई रोक नहीं होती। यह तीन स्तरीय प्रणाली अष्टांग विमान शैली की विशेषता है। उसी के अनुसार, भगवान विष्णु के तीन रूप - खड़े, बैठे हुए और झुकते हुए- प्रत्येक तल में दर्शाए गए हैं। भूतल में श्री विष्णु और महालक्ष्मी खड़ी मुद्रा में हैं।

आम तौर पर, मंदिरों को मूल छह सिद्धांतों अर्थात आदिशांतिम (स्थिर स्थान-निवास), पदम् (चरण), प्रस्तारम (दीवारें), खांडम (ग्रीवा), श्रीकारम (सिर) और स्तूप (कोपुला- अभ्युदय) पर बनाया जाता है। इसे षड़गम (छह विभाजनों) के रूप में जाना जाता है। उसी के अनुसार, अष्टांग विमानम में, खांडम, प्रस्तारम्, खांडम, श्रीकाराम और स्तूप के साथ एक और तल का निर्माण किया जाता है।

मुख्य गर्भगृह में, मंदिर की अधिष्ठात्री देवी के रूप में महालक्ष्मी के साथ श्री विष्णु जी का अभिषेक किया जाता है।

आराधना - पूजा की प्रकृति

महालक्ष्मी और महाविष्णु, जो दूसरी मंजिल पर स्थित हैं, यहीं से पूजा-अर्चना शुरू होती है। यहां दंडवत अर्चना करने के बाद, सीढ़ियों से क्रमश: पहले, दूसरे और तीसरे स्तर पर जाना होता है, जहां संतानलक्ष्मी (संतानदात्री देवी) का स्थान अर्थात मंदिर है। विद्यालक्ष्मी (ज्ञान और ज्ञान की देवी), विजयलक्ष्मी (सफलता की देवी) और गजलक्ष्मी (समृद्धि की देवी) के स्थान भी हैं। यहां पूजा-अर्चना करने के बाद, सीढ़ियों से चौथे स्तर पर जाते हैं जहां धनलक्ष्मी (धन की देवी) का स्थान है। सीढ़ियों से ही नीचे उतरते हुए/ मंदिर से बाहर निकलते समय, भक्तजन आदिलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी (भोजन की देवी) और धैर्यलक्ष्मी (साहस और शक्ति की देवी) के सामने प्रार्थना करते हैं।

विशेष कार्यक्रम : उत्सव और त्यौहार

इस मंदिर में होने वाले मुख्य **उत्स**वों में नवरात्रि, पवित्र **उत्स**वम्, धनुर्मासपूजा, गोकुलाष्टमी, दीपावली, कार्तिगई और पोंगल प्रमुख हैं। नवरात्रि का उत्सव दस दिनों तक चलता है। पवित्र **उत्स**वम् प्रति वर्ष पूरे

पांच दिन आयोजित किया जाता है, जिसे आत्मा की स्वच्छता का द्योतक माना जाता है। इस दौरान, सबसे पहले कलशों और बर्तनों से देवताओं की पूजा की जाती है। देवताओं को मालाएं पहनाए जाने के पश्चात, यात्रा निकाली जाती है और वापसी पर देवताओं की आरती करने परम्परा है।

धनुर्मास महीने में पूजा के लिए मंदिर को प्रात: 4.00 बजे से ही खोल दिया जाता है। श्रीकृष्ण जयंती को यहां गोकुलाष्टमी कहा जाता है और इसे बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

दीपावली के त्यौहार पर पूरे परिसर को तीन दिन पहले से ही बिजली की रंग बिरंगी रोशनी से सजाया जाता है। साथ ही बड़ी संख्या में घी के दीपक मंदिर में तथा बाहर जलाए जाते हैं। मजेदार बात है कि दीपावली की रात में दीपावली पूजन के समय और उसके बाद रात्रि दो बजे तक बत्तियां बुझा दी जाती है और मंदिर के भीतर – बाहर चारों ओर केवल दीए ही जलाए जाते हैं। भक्तगण यहां 21 से 51 दीप जलाते है। जब मंदिर के बाहर भी जगह नहीं मिलती तो बाहर समुद्र के किनारे का मैदान भी दीपों से जगमगाने लगता है।

दीपावली के अवसर पर लेखक द्वारा लिया गया मंदिर के कलश का एक चित्र

इन दिनों स्थानीय टूर ऑपरेटर्स पर्यटकों को विशेष पैकेज देते हैं। यह दीप दीवाली देखने पर्यटकों को देर रात तक लाया जाता है। एक ओर दीयों की रोशनी, दूसरी ओर गहन अंधेरे में लहलहाते समुद्र की लहरों की गर्जना का दृश्य देखने हेतु श्रृद्धालु तीर्थयात्री/ पर्यटक रात भर बैठे रहते हैं। कार्तिगाई उत्सव के दौरान भी दीप जलाने की परम्परा है। मंदिर में पोंगल **उत्स**व का भी आयोजन किया जाता है, इस दिन लोग महालक्ष्मी और महाविष्णु का आशीर्वाद लेने आते हैं।

समय: सुबह 6:30 बजे से दोपहर 12:00 बजे, शाम 6:00 बजे तक।
शुक्रवार, शनिवार और रविवार- सुबह का समय: सुबह 6:30 बजे - दोपहर 1:00 बजे तक

वैसे तो आप मंदिर के आसपास समुद्र तट पर कितना ही समय बिताएं लेकिन मंदिर में विधिपूर्वक दर्शन पूजा आराधना में एक से दो घंटे लग जाते हैं ।

---

*__सम्प्रति : केरल विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त। अतुल्य भारत में यदा-कदा योगदान।__

कृष्णागिरी विविध पर्यटन स्थलों का संगम...

-एन.रमेश कुमार

कृष्णागिरी दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य एक ऐसा नगर जो अपनी एक खास ग्रामीण जीवनशैली, हरे-भरे खेतों और एक खूबसूरत पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। इस नगर का इतिहास बताता है कि

यह नगर कभी महाराजा कृष्णदेव राय के शासन में शामिल था और उन्हीं के नाम पर इस नगर का नाम कृष्णागिरी पड़ा। शांत पहाड़ियों और हरे-भरे नजारों से परिपूर्ण यह नगर पर्यटकों को बहुत प्रभावित करता है। छुट्टियां बिताने के लिए यह एक सबसे अच्छा स्थान है। यहां आकर आपको लगेगा कि पहले इस ओर क्यों नहीं आए ?

कृष्णागिरी का शाब्दिक अर्थ काली पहाड़ी है। यह दो शब्दों कृष्ण और गिरी से मिलकर बना है। 'कृष्ण' का अर्थ 'काला' और 'गिरि' का अर्थ पर्वत है। वैसे भी यह क्षेत्र काले ग्रेनाइट से समृद्ध है। इसके नाम के पीछे एक कहानी भी प्रचलित है। चूंकि यह क्षेत्र विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय के साम्राज्य का हिस्सा था, इसीलिए इस स्थान का नाम उनके नाम पर कृष्णागिरी पड़ा।

कृष्णगिरि का यह क्षेत्र तमिलनाडु का दक्षिणी प्रवेश द्वार कहा जाता है । इस क्षेत्र के बारह किले लोकप्रिय रूप से बारह महल के रूप में जाने जाते थे। विजयनगर सम्राट द्वारा कृष्णगिरि पहाड़ी पर बनाया गया कृष्णगिरी किला सबसे आगे और सबसे अधिक रक्षात्मक स्थान के साक्षी के रूप में आज भी खड़ा है।

कृष्णागिरि घूमने लायक कई पर्यटन स्थलों से घिरा हुआ है। यह शहर किलों, प्राचीन मंदिरों और संग्रहालयों के साथ ही आश्चर्यजनक प्राकृतिक नजारों और ऐतिहासिक अजूबों का एक आदर्श मिश्रण है । शहर के आसपास कई बांध और झीलें तथा कई दिलचस्प ऐतिहासिक स्थल हैं। उनमें से कृष्णागिरि बांध, रायकोट्टई किला, चंद्र चूड़ेश्वर मंदिर, माँ प्रत्यांगिरा कालिका मंदिर, तैली और सरकारी संग्रहालय आदि प्रमुख हैं ।

कृष्णागिरी किला

यह किला देश के सबसे मजबूत किलों में से एक माना जाता है। इसकी खास भौगोलिक संरचना और मजबूती ने देश विदेश के बहुत से वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित किया है। दक्षिण भारत के इतिहास को बेहतर रूप से समझने के लिए आप यहां आ सकते हैं। यह किला अतीत की ऐतिहासिक घटनाओं का एकमात्र साक्षी है।

किले के बारे में.....

इतिहासकारों के अनुसार 16 वीं शताब्दी में भारत के महान शासक और दक्षिण के सबसे शक्तिशाली राजा कृष्णदेव राय ने इस किले का निर्माण करवाया था । इसलिए इस किले को उन्हीं के नाम पर कृष्णागिरी कहा गया। बाद में यहां एक शहर बसाया गया उसका नाम भी कृष्णागिरी रखा गया। इतिहास के प्रेमियों के लिए यह किला एक अच्छा गंतव्य है। साधारणतया, एक ही स्थान पर कई राजवंशों के इतिहास का पता लगाना कठिन होता है। लेकिन यहां विभिन्न राजवंशों के बारे में विस्तार से जानने का अवसर मिलता है। किले और आसपास के क्षेत्रों को, जिन्हें "बारह महल" कहा जाता था, विजयनगर द्वारा जगदेवराय लाल को युद्ध में उनकी वीरता के लिए दिया गया था। कृष्णगिरि के एक प्रमुख पर्यटन केंद्र के रूप में आजकल, इस किले की देखरेख भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन है ।

किले का एक हवाई दृश्य

किले के बारे में कुछ और ....

17 वीं शताब्दी में बीजापुर सल्तनत ने किले को अपने अधीन कर, इसे जागीर के रूप में शाहजी को दे दिया था। शाहजी की मृत्यु के बाद, उनका छोटा बेटा व्यंकोजी शासक बना। बाद में, 1670 के दशक में छत्रपति शिवाजी ने अपने दक्षिण के अभियान के दौरान अपने छोटे भाई व्यंकोजी से यह किला ले लिया था। 18वीं शताब्दी में हैदर अली ने मैसूर के राजा देवराज वडियार के निर्देश पर इस किले और बारह महल पर कब्जा कर, इस क्षेत्र को बरकरार रखा। नवंबर 1790 में ब्रिटिश सैनिकों ने लेफ्टिनेंट कर्नल मैक्सवेल के नेतृत्व में किले पर हमला किया लेकिन उन्हें पीछे हटने पर विवश होना पड़ा। (इसे तीसरा एंग्लो-मैसूर युद्ध कहा जाता है।) 1792 में श्रीरंगपट्टनम की संधि के बाद टीपू सुल्तान ने यह किला, बारह महल और सेलम का पूरा क्षेत्र अंग्रेजों को समर्पित कर दिया गया था। तभी कैप्टन अलेक्जेंडर रीड को इस क्षेत्र का पहला जिला कलेक्टर बनाया गया जिसने कृष्णगिरी को बारह महल का मुख्यालय बनाया और 1794 ई. में कृष्णगिरि में एक टकसाल की स्थापना की गई थी जिसमें सोने, चांदी और तांबे के सिक्के ढाले जाते थे।

किले में प्रवेश शुल्क :

15 साल तक के बच्चों सहित भारतीयों के लिए प्रति व्यक्ति 5/- रुपए
सार्क और बिम्सटेक देशों के आगंतुकों के लिए प्रति व्यक्ति 100/- रुपए
समय : सप्ताह के सभी दिन सुबह 9:00 बजे - शाम 5:30 बजे
यात्रा की अवधि : लगभग एक घंटा

कृष्णगिरि, होस्सुर और उथंगराई के मध्य बसे क्षेत्र को समय समय पर आईलीनाडु, मुरासुनाडु और कोवेरनाडु के नाम से भी जाना जाता था। चोल शासनकाल के दौरान, कृष्णगिरि क्षेत्र को 'निगारिली', 'चोला मंडलम' और 'विदुगाधझगी नल्लूर' भी कहा जाता था। 'कुंडनी" कृष्णगिरि जिले का एक स्थान था, जो 13 वीं शताब्दी में 'होयसाल राजा' वीरा रामनाथन का मुख्यालय था। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार 'नुलम्बा' वंश के तहत, यह नुलम्बदी के रूप में लोकप्रिय था। इस क्षेत्र पर पल्लव, गंगा, नुलंबा, चोल, होयसाल, विजयनगर सम्राट, बीजापुर सुल्तान, मैसूर के वडियार और मदुरै के नायकों का शासन था। इस क्षेत्र में उन लोगों के शिलालेख लगाने की परम्परा थी, जिन्होंने संगम काल के बाद से युद्धों में, राजाओं के लिए

अपना जीवन निछावर किया था। इन स्मारक पत्थरों को 'नवगंधम' कहा जाता था। आज भी इस जिले में बहुत सारे स्मारक पत्थर देखे जा सकते हैं जो लोगों की वीरता और गुणों के बारे में बताते हैं।

सैयद बाशा दरगाह और पहाड़ी से नगर का दृश्य

कृष्णागिरी किले के निकट लगभग दो कि.मी. दूर सैयद बाशा पर्वत दो सूफी शहीद संतों के लिए प्रसिद्ध है। उनकी याद में प्रति वर्ष एक भव्य उर्स आयोजित होता है। इस दौरान लगभग हजारों लोग भक्ति और आदर से उपस्थित होते हैं। (चित्र ऊपर दिए गए हैं)

कृष्णागिरी बांध

कृष्णागिरी बांध शहर के मुख्य प्रसिद्ध पयर्टन स्थलों में से एक है और यहां से कृष्णगिरी भ्रमण की शुरुआत कर सकते हैं। तमिलनाडु राज्य पर्यटन विभाग द्वारा बांध के सामने खूबसूरत फूलों का बगीचा, एक सुंदर मंदिर के अलावा तारामंडल और चिल्ड्रन पार्क स्थापित किए गए हैं। अपनी एक अलग और विशेष भौगोलिक संरचना के कारण यह बांध कृष्णगिरी का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल बन चुका है। जहां लोग अक्सर सपरिवार, संप्ताह के अंत में आते हैं। बांध कृष्णगिरि नगर से सात कि.मी. दूर है । कृष्णागिरी और धर्मपुरी के बीच में, इस बांध का निर्माण वर्ष 1955-57 में एक हजार एकड़ भूमि पर किया गया था। धुदुगनहल्ली गांव में तेन्नैपेन्ने नदी पर बने इस बांध का उपयोग मुख्यत: कृष्णगिरि के आसपास की हजारों एकड़ भूमि की सिंचाई के लिए किया जाता है।

कृष्णगिरि भारत के सबसे महंगे आम अल्फांसो के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां की मुख्य फसल अल्फांसो आम ही है, जिसे मिठास, सुगंध और स्वाद के मामले में आमों की सबसे अच्छी किस्मों में से एक माना जाता है। कहते हैं कि आम की सर्वप्रथम पैदावार यहीं हुई थी। पर्यटक यह आम जरूर खरीदते हैं।

वैसे तो वर्ष के दौरान यहां कभी भी आया जा सकता है। लेकिन अगर आप गर्मी से बचने और सुखद वातावरण का अनुभव करना चाहते हैं तब तो कृष्णगिरी किले की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च के अंत तक है। उष्णकटिबंधीय जलवायु होने के कारण, कृष्णगिरि और उसके आसपास का क्षेत्र हल्की हल्की ठंडक का अनोखा अनुभव कराता है।

कैसे पहुंचे ?

वायु मार्ग : कृष्णगिरि के लिए निकटतम हवाई अड्डा बैंगलूरू है। यहां से कृष्णगिरि की दूरी 90 कि.मी. है और यहां से कैब या बसों की सेवाएं उपलब्ध है।

रेल मार्ग : कृष्णगिरि तक रेल से पहुंचने का निकटतम रेलवे स्टेशन होस्सुर या बैंगलोर हैं।

कहां ठहरें :

यहां ठहरने की कोई समस्या नहीं है। पहाड़ियों के साथ-साथ बाहरी इलाके में फार्म हाउस और रिसार्ट्स बन गए हैं। इनमें से कई तो दो से चार स्टार प्राप्त हैं। इनके अलावा बजट होटल और स्टार होटल भी उपलब्ध हैं।

कृष्णगिरि के आसपास के क्षेत्रों में कई प्राचीन मंदिर हैं। निकटवर्ती रामपुरम 500 साल पुराना राम मंदिर है। इस स्थान पर कई स्मारक और प्राचीन मंदिर हैं। यहां प्रति वर्ष हजारों देशी और विदेशी पर्यटकों का आगमन होता है ।

हनुमंत तीर्थम

कृष्णागिरी के नजदीक होंगेंककल में आध्यात्मिक स्थल है। पेन्नियार नदी के किनारे स्थित है और इसे स्थान को पारंपरिक रूप से तीर्थमलै माना जाता है। यहां के लोग इसे दक्षिण गंगा मानते हैं।

एक कथा के अनुसार, एक बार भगवान श्री राम ने शिवजी की आराधना हेतु हनुमान को गंगा से जल लाने को कहा था। किन्तु संयोगवश हनुमान समय पर नहीं पहुंच सके। तब श्रीराम ने पहाड़ी की चट्टानी ढलान में बाण मार कर एक जलस्रोत बनाया और वहां से जल ले कर शिवजी का अनुष्ठान पूरा किया किया। इससे हनुमान जी उत्तेजित हो गए और उन्होंने पवित्र गंगाजल से भरे पात्र को नीचे फेंक दिया और यहां मान्यता है कि उसी गंगाजल से 'हनुमन्तीर्थम' बना था है। इस स्थान पर जुलाई - अगस्त के दौरान बड़े उत्सव का आयोजन किया जाता है। इन दो महीनों में प्रति दिन हजारों की संख्या में श्रृद्धालु भक्त और पर्यटक पहुंचते है। लोगों का विश्वास है कि इस स्थल का जल आध्यात्मिक शांति प्रदान करता है।

हनुमंत तीर्थम में तालाब

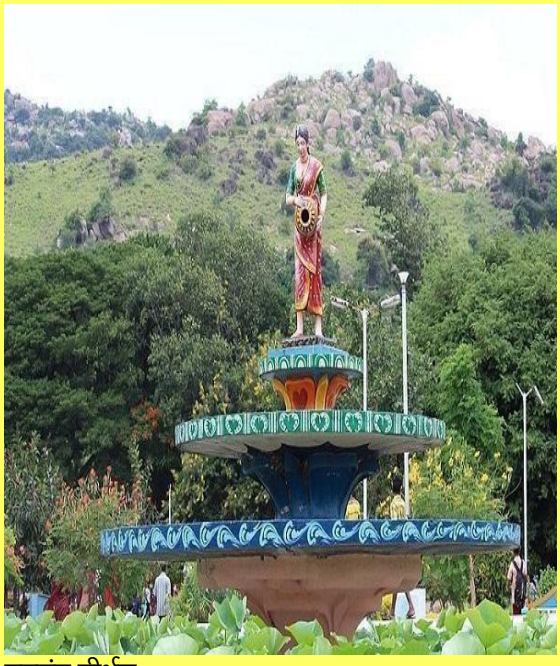
हनुमंत तीर्थम

हनुमंत तीर्थम गांव कृष्णगिरि जिले की उथंगराई तहसील मुख्यालय से 10 कि.मी. और कृष्णगिरि जिला मुख्यालय से 56 कि.मी. दूर है। हनुमंत तीर्थम की ग्राम पंचायत 'कतरी' है। जनगणना 2011 की जानकारी के अनुसार हनुमंत तीर्थम गांव में लगभग 444 घर थे और यहां की कुल आबादी 1,766 थी। गांव का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 166.21 हेक्टेयर है।

तैली यानि छोटा इंग्लैड :

तैली एक खास पर्यटन स्थल है, जिसे 'लिटिल इंग्लैड' कहा जाता है। यह स्थान तैली घाटी और पहाड़ियां इंग्लैंड के समान ताजा और सुखद मौसम के लिए प्रसिद्ध है। सरकारी कागजों में उल्लेख मिलता है कि ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेज दक्षिण की उमस भरी गर्मी से बचने के लि□ए किसी ठंडे स्थान की तलाश में थे तभी उन्होंने देखा कि यहां का तापमान और जलवायु इंग्लैंड से मिलती-जुलती थी। उन्होंने इसे बसाया और 'लिटिल इंग्लैंड' का नाम दिया था।

इंग्लैड के गांव की तरह बसाया गया - तैली का एक गांव ।

डेनक्निकोट्टई ताल्लुक में कई पहाड़ी स्थानों से घिरी और समुद्र तल से 1000 फीट ऊपर स्थित तैली घाटी, एक लोकप्रिय पर्यटक गंतव्य है। हरी-भरी घाटी से कृष्णगिरि की सुंदरता को निहारें । इन पहाड़ों की सुन्दरता को देखकर लोग अभिभूत हो जाते हैं।

यहां की सुखद जलवायु में सब्जियों, फलों, फूलों की खेती की जाती है। यद्यपि अभी तक तैली की पहचान एक पहाड़ी प्रकृति, खराब अवसंरचना और इसकी आबादी की कमजोर सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण जिले में पिछड़े ब्लॉक के रूप में ही है, फिर भी यहां अधिकांशत: होसुर, कृष्णगिरि, धर्मपुरी, बंगलूरू, अंबुर और चेन्नई से पर्यटक इंग्लैड जैसे जलवायु और शांत वातावरण का आनंद लेने यहां आते हैं।

तैली घाटी और झील होस्सुर से 25 कि.मी. और कृष्णगिरि से 77 कि.मी. दूर है।

श्री पाशर्व पद्मावती शक्तिपीठ तीर्थ (जैन मंदिर)

कृष्णगिरि के सबसे लोकप्रिय पर्यटक आकर्षणों में से एक श्रीपार्श्व पद्मावती शक्तिपीठ तीर्थ है। पद्मावती देवी को समर्पित यह मंदिर इस क्षेत्र में सबसे प्रतिष्ठित धार्मिक मंदिरों में से एक है। कृष्णगिरि से छ:

कि.मी. पाशर्व पद्मावती नगर में है। यहां शंखेश्वर पार्श्वनाथ की दादावाड़ी का विकास किया गया है। इसके अलावा तीर्थ में फ्रंट लाइन के साथ धर्मशाला, रेस्तरां, बच्चों के मनोरंजन के लिए खेल का मैदान है। यहां दुनिया भर में हर जगह से पर्यटकों का आगमन होता हैं।

अन्य प्रमुख आकर्षण

गवर्नमेंट म्यूजियम

तमिलनाडु और कृष्णगिरि जिले की ऐतिहासिक विरासत, संस्कृति, कला और पारंपरिक मूल्यों का प्रचार प्रसार करने के उद्देश्य से 1993 में यह सरकारी संग्रहालय स्थापित किया गया था। यह अप्सरा थिएटर के पास, गांधी सलई पर स्थित है। इसमें ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों का एक विस्तृत संग्रह है, जिसमें तलवारें, खंजर, चाकू, पत्थर से बने तोप के गोले, गन पाउडर वाली बंदूकें आदि हथियार प्रदर्शित हैं। बुज्जगौंदनपुदुर और होस्सुर की 18वीं शताब्दी की दो तोपें भी रखी गई हैं। कृष्णागिरी, थट्टक्कल, जगदेवी और महाराजकादई किलों की तस्वीरें 16वीं से 19वीं शताब्दी के दौरान इस क्षेत्र की कहानी कहती हैं। यहां प्रदर्शित सदियों पुरानी टेराकोटा की मूर्तियां, छतों की टाइलें और ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियां भी देखी जा सकती हैं। लंबाडी पोशाकें और आभूषण, संगीत वाद्ययंत्र, इरुला और कुरुंब की वस्तुएं कृष्णागिरी जिले में रहने वाले विभिन्न प्रकार के लोगों की जीवन शैली को दर्शाती हैं।

यहां स्मारकों के ऐतिहासिक महत्व से संबंधित कुछ शोध भी किए गए हैं।

यह संग्रहालय पयर्टन स्थल होने के साथ-साथ शिक्षा के केन्द्र के रूप में भी जाना जाता है। इस संग्रहालय में जिले की परम्परा, संस्कृति, कला और कृषि विरासत को दर्शाया गया है ।

कार्य दिवस : सुबह 9.30 बजे से शाम 5.00 बजे
अवकाश : हर शुक्रवार और दूसरा शनिवार
प्रवेश शुल्क
वयस्क: 5/-रुपए बच्चे: 3/-रुपए
विदेशी: 100/-रुपए
कैमरा: 20/-रुपए और वीडियो: 100/-रुपए
स्कूल के छात्रों के लिए नि:शुल्क।

कृष्णगिरि जिले की एक और विशेषता है कि इस क्षेत्र से बड़ी संख्या में युवा हमारी मातृभूमि की सेवा के लिए सेना में भर्ती होते हैं । अधिकतर अधिकारियों के पदों पर कार्यरत हैं। इस क्षेत्र के कई बेटों ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया। उनमें से एक थे डॉ. चक्रवर्ती राजा गोपालचारी, जो इस जिले के एक छोटे से गांव के रहने वाले थे। स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर जनरल और मुख्यमंत्री के रूप में राष्ट्र में सर्वोच्च स्थान पर पहुंचे हैं।

राजाजी स्मारक

देश के तपस्वी नेता और स्वतंत्रता सेनानी चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के सम्मान में तमिलनाडु सरकार ने होस्सुर के पास गांव तोरापल्ली में उनके घर को 'राजाजी स्मारक' में बदल दिया है। राजगोपालाचारी भारत के पहले और आखिरी भारतीय गवर्नर जनरल थे।

स्मारक में एक सुसज्जित पुस्तकालय है। राजगोपालाचारी के काम करने और उनके समय की तस्वीरों से युक्त फोटो गैलरी में उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं के चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। प्रवेश द्वार के निकट चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की आवक्षमूर्ति स्थापित है, जो उनकी देश सेवा की याद दिलाती है।

रायकोट्टई किला

रायकोट्टई यानि राजा का किला एक लोकप्रिय पर्यटन गंतव्य है। होसुर से 30 कि.मी. दूर, सोलहवीं शताब्दी में बना यह किला यहां का प्रमुख आकर्षण है। इस जगह की यात्रा थोड़ी कठिन थी। पर्यटकों की सुविधा हेतु काफी सुधार किए गए हैं । पहाड़ी किले के आधार पर प्रवेश करने के बाद, आगे की ओर सीधी चढ़ाई है। चोटी पर प्रवेश द्वार धनुषाकार बनाया गया है। इस धनुषाकार प्रवेश द्वार को टीपू सुल्तान के शासनकाल के दौरान बनाया गया था। इस किले का निर्माण जगदेव राय द्वारा कराया गया था, इसीलिए इसका नाम रायकोट्टई पड़ा। जल की व्यवस्था करने के लिए तालाब बनाए गए थे। ऐसे ही एक बड़े तालाब में, नंदी और गणेश के साथ शिवलिंग आदि की नक्काशी देखने को मिलती है।

वर्ष 1791-92 में, लॉर्ड कॉर्नवॉलिस के अधीन मेजर गौडी ने टीपू सुल्तान से यह किला छीन लिया। ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिकों के लिए सुविधा होने से यह ब्रिटिश सैनिकों और अंग्रेज सैन्य पेंशनरों के बीच लोकप्रिय हुआ था। उन्होंने अपनी सुविधा के अनुसार, आसपास के क्षेत्र में कुछ अतिरिक्त निमार्ण कराए थे। जिससे यहां अभी भी अंग्रेजों द्वारा बनाए गए भवनों के अवशेष देखे जा सकते हैं। किले के प्राचीर और गढ़ अभी भी अविभाजित हैं। यह एक संरक्षित स्मारक है।

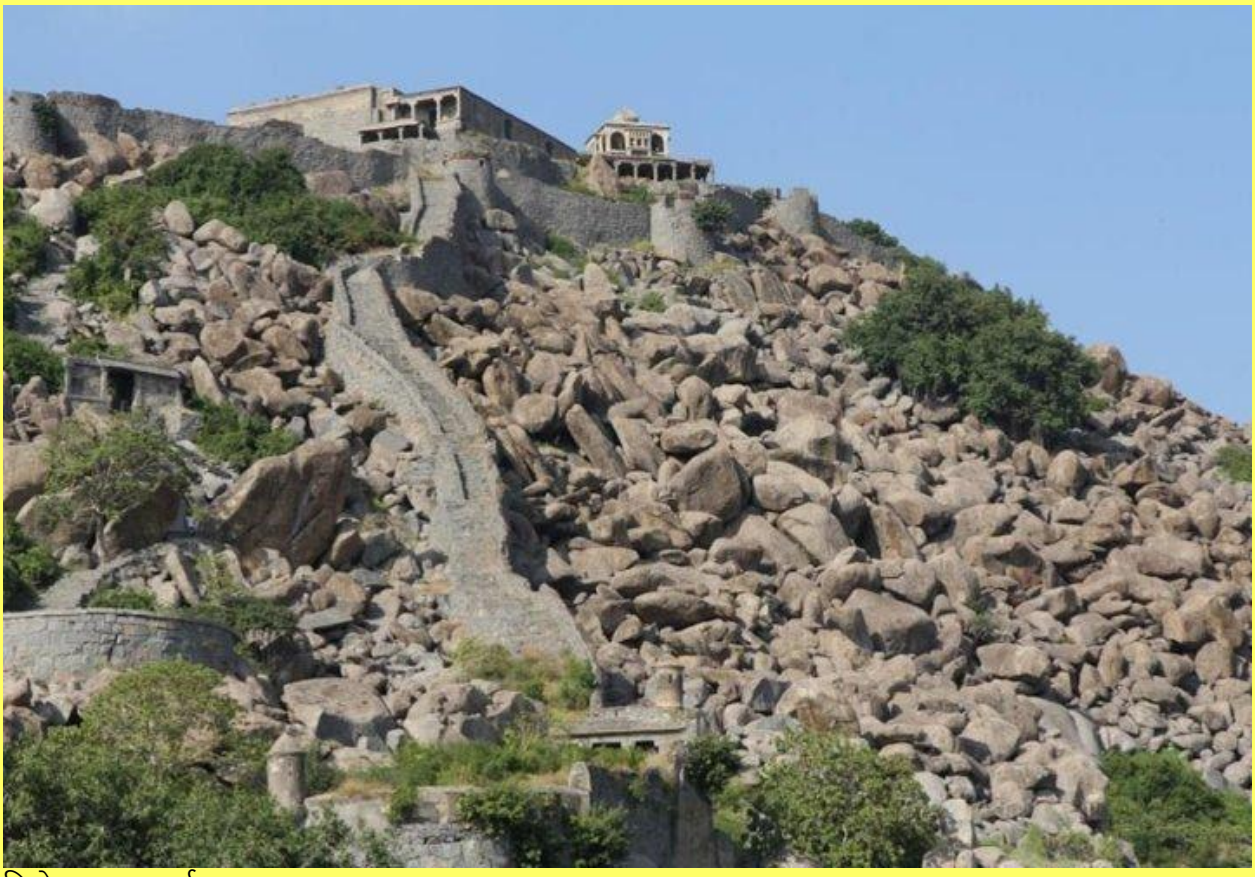

किले का एक हवाई दृश्य

चूंकि चढ़ाई असमान है, इसलिए ज्यादातर ट्रैकर्स ही यहां जाते हैं। आस पास कई **Adventure Tourist operators** भी सक्रिय हैं जो पूरी व्यवस्था करते हैं। लेकिन साधारण पर्यटकों के लिए विशेष कैब की व्यवस्था की गई है। (जिसका कुछ समय पहले तक दोनों ओर का किराया 200/- प्रति व्यक्ति था।)

वेणुगोपाल स्वामी मंदिर

यह मंदिर किले की तलहटी में निकट ही स्थित है। यहां हर साल मई के दौरान कार उत्सव आयोजित किया जाता है जिसमें लाखों की संख्या में भक्तजन एकत्रित होते हैं।

वेणुगोपाल स्वामी को भगवान कृष्ण का अवतार माना जाता है, इस मंदिर में उन्ही की प्रतिमा स्थापित की गई है। वेणु का अर्थ तमिल में भी बासुंरी होता है और इस मंदिर में भगवान कृष्ण की बांसुरी की मधुर धुन सदैव सुनाई देती रहती है। इस मंदिर का काफी बड़ा हिस्सा क्षतिग्रस्त हो चुका है। भारत के गौरवमयी अतीत को आज भी यहां स्थित खंभों में देखा जा सकता है। दक्षिण भारत के प्रमुख मंदिरों में से एक, यह मंदिर पूरे दक्षिण भारत के भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहां भारी संख्या में भक्त हर साल दर्शन करने आते है। इस मंदिर की यात्रा में मौसम बिलकुल भी बाधा नहीं है। मई के महीने में यहां रथयात्रा का आयोजन किया जाता है। अगर शांत और समृद्ध संस्कृति को देखना चाहते है तो वेणुगोपाल स्वामी मंदिर में दर्शन करने अवश्य आएं।

वेणुगोपाल स्वामी मंदिर

मल्लचंद्रम गांव

कृष्णगिरि में मेगालिथक संरचनाओं के लिए प्रसिद्ध मल्लचंद्रम गांव शहर से लगभग 20 कि.मी. और सामलपल्लम से चार कि.मी. दूर सामलपल्लम राष्ट्रीय राजमार्ग-7 पर स्थित है। मोरना परई में मल्लचंद्रम में 100 से अधिक डोलमेंस की पहचान की गई है।

दिलचस्प बात यह है कि लगभग चार प्रकार के डोलमेन्स एक ही स्थान पर पाए जाते हैं। डोलमेन एक प्रकार का मेगालिथिक एकल-कक्ष है, जिसमें आमतौर पर दो या अधिक ऊर्ध्वाधर मेगालिथ होते हैं जो एक बड़े सपाट क्षैतिज कैपस्टोन बनाते हैं। प्रारंभिक नवपाषाण काल की यह अधिकांश संरचनाएं छोटे पत्थरों से ढंकी हुई हैं। यहां तीन प्रकार के स्मारक हैं, जैसे कि केयर्न सर्किल, डोलमेन और उर्न ब्यूरो।

डोलमेन एक विशाल गोल टोपीनुमा पत्थर ऊपर से कवर होता है, चार ऊर्ध्वाधर ऑर्थो-आकृति संरचना है। दूसरे प्रकार में ऊर्ध्वाधर स्लैब से बने डबल सर्कल होते हैं और किले का छेद डोलमेन के पूर्वी हिस्से में पाया जाता है। लंबा वर्टिकल स्लैब सेमी-सर्कुलर टॉप में है। यह तमिलनाडु में पाए जाने वाले महत्वपूर्ण डोलमेन में से एक है।

तीसरा एक दूसरे प्रकार के डोलमेन के समान वास्तुशिल्प के रूप है। लेकिन पोर्ट होल और पैसेज को पोर्ट होल लेवल तक उठाया गया है। बड़े डोलमेन के चारों ओर छोटे डोलमेन लगाए गए हैं। दूसरे शब्दों में, एक बड़ा डोलमेन छोटे डोलमेंस से घिरा हुआ था। कुछ डोलमेन्स पश्चिमी ऑर्थो-आकृति में सफेद रंग की पेंटिंग हैं और यह पूर्वी ओर है। पेंटिंग महापाषाण काल में चित्रित की गई हैं।

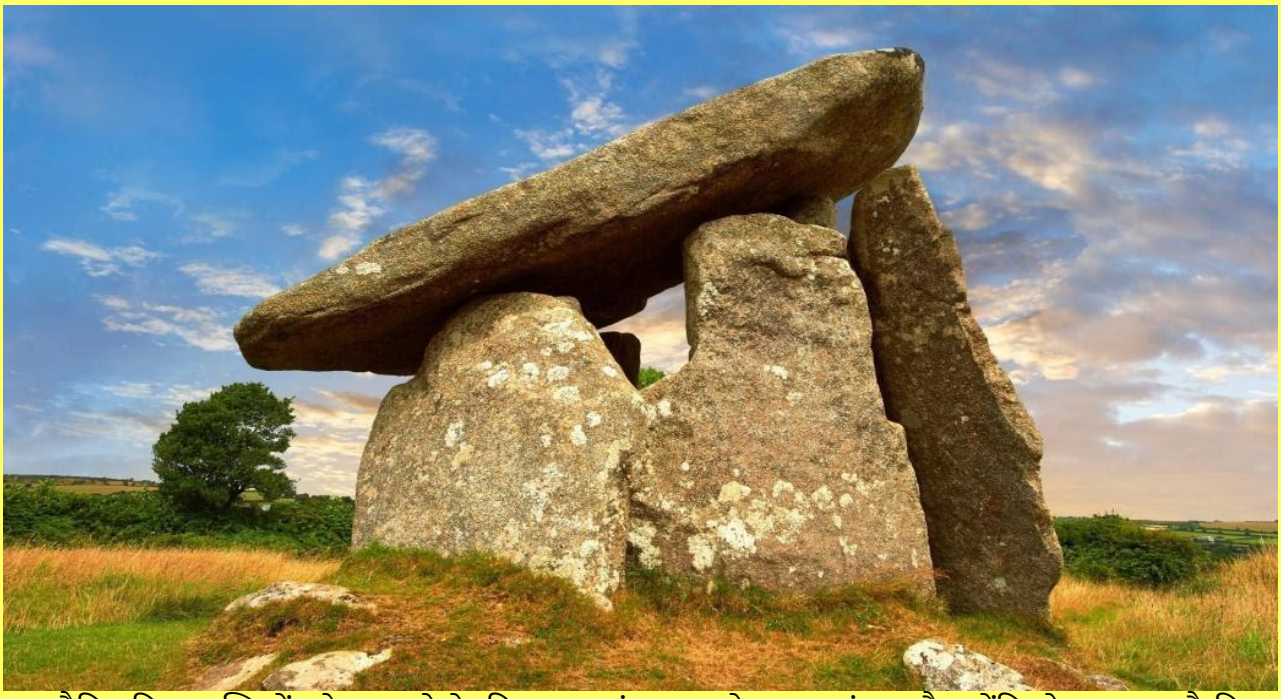

प्रागैतिहासिक बस्तियों को समझने के लिए मल्लचंद्रम सबसे अच्छा गंतव्य है क्योंकि ऐसा लगता है कि इस स्थान पर विभिन्न प्राचीन बस्तियों की लंबे समय तक बसावट थी। अलग-अलग डिज़ाइन के डोलमेन्स से भी यही स्पष्ट होता है। हालांकि यहां प्रागैतिहासिक काल की सही अवधि का पता नहीं लगाया जा सका है, एक मोटा अनुमान लगाया गया है कि यह लगभग 3500 साल पहले का होगा। कूर्ग / कोडागु के महापाषाण प्रस्तरों पर गहन अध्ययन करने वाले पुरातत्वविद आर.ए. कोल के अनुसार, इन संरचनाओं का वेदियों या मंदिरों के रूप में उपयोग किया होगा। जबकि, डॉल्मेन और अन्य मेगालिथिक संरचनाओं के निर्माण के बारे में एक स्वीकृत सिद्धांत यह है कि वे मृतकों को दफनाने से जुड़े हैं और यह सिद्धांत समय और फिर से यहां संरचनाओं की खुदाई में निकले कंकालों से पुष्टी होती है।

चंद्र चुड़ेश्वर मंदिर

प्राकृतिक स्थलों के अलावा यहां के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों के दर्शन भी कर सकते हैं। होस्सुर में राष्ट्रीय राजमार्ग-7 के पास एक चट्टानी-पहाड़ी की चोटी पर स्थित अरुलमिगु मारगथाम्बिगई चंद्रचूड़ेश्वर मंदिर का एक अलग ही महत्व है । दक्षिण भारतीय इसे एक पवित्र धाम मानते हैं। इस मंदिर में प्रतिदिन 900 से 1000 तक की संख्या में भक्तगणों का आवागमन होता है। इनमें अधिकतर बैंगलोर, होस्सुर, कृष्णागिरी और आसपास के क्षेत्रों के होते हैं। यहां पाए गए एक शिलालेख में 11 वीं शताब्दी ई. का उल्लेख है। इस शिलालेख पर चोल काल के राजा कुलौथंगा चोलन का नाम भी मिलता है।

चंद्र चूडेश्वर मंदिर के उत्सव शहर में प्रसिद्ध हैं, कर्नाटक के मंगलौर के कुछ हिस्सों में ज्यादातर लोग हर साल मार्च-अप्रैल के महीने में इन उत्सवों में भाग लेते हैं। ऊपर से रात में आकाश का नजारा देख सकते हैं। यह इस पर्वत-शीर्ष के बारे में एक आश्चर्यजनक बात यह है कि यहां से दो अलग पहाड़ियों पर बने दो मंदिरों - एक पहाड़ी पर विष्णु और दूसरी पर ब्रह्मा जी के मंदिर - को एक साथ देख सकते हैं।

पर्यटन विभाग द्वारा बच्चों का पार्क और एक टीले पर बनाई गई वेधशाला (तारामंडल) उल्लेखनीय है। इसके निकट ही एक गेस्ट हाउस भी बनाया गया है।

माँ प्रत्यांगिरा कालिका धाम

माँ प्रत्यांगिरा कालिका का एक अनोखा रूप है। देवी का सिर सिंह का और शेष शरीर नारी का है। शक्ति स्वरूपा प्रत्यांगिरा विष्णु, रुद्र तथा दुर्गा देवी का एकीकृत रूप हैं। आदि पराशक्ति महादेवी को महादेव के रूप में शरभ अवतार की शक्ति माना जाता है। शास्त्रों में उल्लेख मिलता है कि जब श्री विष्णु जी ने नरसिंह का अवतार लिया तब वे अपने हाथों से हिरणकश्यप का वध करने के बाद भी शांत नहीं हुए। देवताओं ने नरसिंह को शांत करने के लिए भगवान शिव से प्रार्थना की। महादेव ने, नरसिंह को शान्त करने हेतु शरभ (आधा सिंह तथा आधा पक्षी का) रूप धारण किया किन्तु नरसिंह के शान्त नहीं होने पर दोनों में युद्ध होने लगा था।

हरि और हर के बीच के युद्ध को रोकना असंभव प्रतीत हो रहा था। अत: देवताओं ने महामाया दुर्गा का आह्वान किया और देवी मां ने आधे सिंह और आधे मानव की देह धारण कर
उनके सामने इस तीव्र स्वरूप में प्रकट हुई कि उसकी प्रचण्ड हुंकार से उन दोनों स्तब्ध रह गए, जिससे उन दोनों के बीच का भीषण युद्ध समाप्त हो गया।

हरि और हर अर्थात विष्णु और शिव, दोनों की शक्ति की निष्पादक होने के लिए शास्त्रों ने उन्हें देवी की उत्पत्ति का श्रेय दिया है।
देवी प्रत्यंगिरा का यह संयोजन अच्छाई और बुराई के संतुलन का प्रतिनिधित्व करता है। आसपास के क्षेत्रों के लोग देवी प्रत्यांगिरा को अघोरलक्ष्मी, सिद्धलक्ष्मी, पूर्णचन्डी, अ थर्वन भद्रकाली, आदि नामों से भी संबोधित करते हैं।

माँ प्रत्यांगिरा कालिका धाम

उन्हें अपराजिता तथा निकुम्भला के नाम से भी जाना जाता हैं। लोगों का विश्वास है कि माँ प्रत्यांगिरा रावण के कुल की आराध्या देवी थी।

कृष्णागिरी के निकट होसुर शहर भी शानदार सप्ताहांत के पर्यटकों का एक प्राकृतिक स्वर्ग है। यह क्षेत्र को एक ऐसी जलवायु का वरदान प्राप्ता है जहां शतावरी, ब्रोकोली, फूलगोभी, गाजर, सेम जैसी सब्जियों के साथ-साथ ताजे गुलाबों की खेती होती है।

गुलाबों का आधुनिक शहर

होस्सुर खूबसूरत गुलाब के बगीचों के बीच मनोरंजन का वह शहर है जहां गुलाब के कई बगीचे देख सकते हैं। यह क्षेत्र अच्छी गुणवत्ता वाले फूलों के निर्यात के लिए जाना जाता है। भारत में वेलेंटाइन डे के लिए अधिकतर गुलाब यहीं से भेजे जाते हैं। माधागोंडापल्ली में स्थित टैनफलोरा इन्फ्रास्ट्रक्चर पार्क उच्च गुणवत्ता वाले कट गुलाब का स्थान है। यह यूरोप में गुलाब का प्रमुख निर्यातक है। यहां के 'ताजमहल' नामक गुलाब की एक पेटेंट किस्म की विश्व के बाजारों में सबसे अधिक मांग है।

केनिलवर्थ किला

इंग्लैंड की वास्तुकला पर आधारित प्रसिद्ध केनिलवर्थ किला शहर की धरोहर है। केनिलवर्थ किला या केनिलवर्थ महल की वास्तुकला इंग्लैंड के केनिलवर्थ महल पर आधारित है, जिससे यह संभवत: भारत का एकमात्र किला है, जो एक अंग्रेजी महल की शैली में बनाया गया है। कलेक्टर ब्रेट ने अपनी पत्नी के लिए बनाया था। कहते हैं कि वार्विकशायर के रहने वाले ब्रेट की, नौकरी से पहले, एक स्कॉटिश लड़की से सगाई हो चुकी थी। सरकारी सेवा में चयन होते ही उसकी तैनाती भारत में कर दी गई थी । यहां आने के कुछ समय बाद, उसे सेलम क्षेत्र का कलेक्टर बना दिया । लेकिन उसकी मंगेतर ने भारत नहीं आने के कारण उससे विवाह करने से मना कर दिया। अंतत: उसने मांग रखी कि जब तक उसे भारत में वार्विकशायर के केनिलवर्थ कैसल जैसा ही विशाल और सुंदर निवास नहीं मिलेगा, वह भारत नहीं आएगी। इसलिए वर्ष 1859 और 1862 के बीच कलेक्टर ब्रेट ने होसुर में केनिलवर्थ के कैसल के मॉडल पर घर बनाया और यहीं उनका विवाह हुआ था । विवाह के बाद उसकी पत्नी ने इसका नाम केनिलवर्थ फोर्ट रखा। अंग्रेजों के बीच यह महलनुमा घर इसी नाम से प्रसिद्ध हो गया। आज भी अधिकतर अंग्रेज पर्यटक इसे ''फोर्ट ब्रेट'' ही कहते हैं। आजकल भारतीय पुराततव सर्वेक्षण इसकी देखभाल करता है।

केनिलवर्थ किले के अवशेष

केलावरपल्ली

होस्सुर से लगभग 10 कि.मी. दूर यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। केलावरपल्ली जल परियोजना का कार्य वर्ष 1995 में पूर्ण हुआ था और बांध के पास हर किसी के लिए कुछ न कुछ है। प्रकृति प्रेमियों के लिए यहां प्रदूषण से मुक्त एवं ताजगी भरी जलवायु है तो पक्षियों को देखने का शौक रखने वालों के लिये पेलिकन और स्पूनबिल जैसे विभिन्न प्रवासी पक्षियों का जमावड़ा है। ऐसे लोग जो स्थानीय संस्कृति देखने की जिज्ञासा रखते हैं, जलाशय के पास चेन्नातुर गांव जा सकते हैं। होस्सुर के लोग आराम से अपना समय बिताने के लिए यहां आते हैं। आस-पास के राज्यों में लोग भी छुट्टियों के दौरान इस जगह पर आते हैं। यह सप्ताहांत के लिए होसुर आने वाले पर्यटकों तथा शहर के निवासियों का एक पसंदीदा पिकनिक स्पॉट है।

पर्यटकों को आकर्षित करने के निमित्त तमिलनाडु लोक निर्माण विभाग ने बांध के पास एक पार्क भी विकसित किया है और वही इसका रखरखाव करता है। पार्क में बच्चों के खेलने का क्षेत्र, फव्वारे, लॉन और जॉगर्स फुटपाथ हैं। सप्ताहांत के दौरान यह बांध पर्यटकों से भर जाता है। पार्क के बाहर पार्किंग की सुविधा है। केआरपी डैम और पार्क पूरे साल घूमने के लिए उपयुक्त है। पार्क सप्ताह के सभी दिनों में खुला रहता है। प्रवेश टिकट केवल दस रूपए प्रति व्यक्ति है।

कैसे पहुंचें :
रेल मार्ग : होसुर का अपना रेलवे स्टेशन है। यहां से देश के अन्य प्रमुख शहरों के लिए नियमित रेल

गाडियां उपलब्ध हैं।
सड़क मार्ग : बैंगलोर से होसुर के लिए टैक्सी उपलब्ध हैं। तमिलनाडु, केरल और आंध्र प्रदेश के विभिन्न शहरों से निजी टूरिस्ट आपरेटर्स भी होसुर के लिए बसें चलाते हैं।

रामानायक्कन झील - होसुर की सबसे बड़ी झील और इसका एकमात्र जलग्रहण क्षेत्र है। झील के बीच में एक 16 वीं शताब्दी का पत्थर मंडपम हैं। कलेक्टर कार्यालय रोड के ठीक बाहर झील के बीच में सदियों पुराने पत्थरों से चिह्नित किया गया है। जिससे संबंधित नागरिकों में होसुर के इतिहास के बारे में पता लगता है। इस क्षेत्र में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए इकोलॉजिकल पार्क और वॉकर्स लेन बनाए गए हैं

एक बार आप भी जरूर यहां आएं और कृष्णगिरि की इन जगहों का नजारा लें।.....

***सम्प्रति: भारत हैवी इलैक्ट्रीकल्स लि., थिरुमैयम में प्रबंधक थे। अतुल्य भारत में प्रथम योगदान।**

तू इधर उधर की बात न कर, ये बता कि काफिला क्यों लुटा,
मुझे रहजनों से गिला नहीं, तेरी रहबरी का सवाल है ?
-शहाब जाफरी

बदलाव की बयार दुनिया में कश्मीरी केसर की महक

- डा. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

अशांति का प्रतीक बनी कश्मीर की वादियों की केसर की महक अब देश-दुनिया के देशों में महकेगी। पिछले दिनों संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में हुए भारत खाद्य सुरक्षा शिखर सम्मेलन में कश्मीरी केसर को प्रस्तुत किया गया था और यूएई के इस सम्मेलन में जिस तरह से कश्मीरी केसर को 'रेस्पांस' मिला है उससे आने वाले दिनों में पश्चिमी एशिया सहित दुनिया के देशों में कश्मीरी केसर की अच्छी मांग देखने को मिलेगी।

GI-Tag

पिछली जुलाई में ही कश्मीर की केसर को GI-Tag यानी की भौगोलिक पहचान की मान्यता मिली है। इससे कश्मीरी केसर को विश्व में एक विशिष्ट पहचान मिल गई है। आतंक का पर्याय बनते जा रहे कश्मीर के लिए इसे शुभ संकेत माना जा रहा है । कश्मीर में केसर की खेती के पुनरोद्धार के प्रयासों में तेजी लाई गई है। यह उम्मीद है कि कश्मीरी केसर के इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत होगी।

कश्मीर क्षेत्र में यह पौधे के होने का उल्लेख 5 वीं शताब्दी ई.पू. में भी पाया गया है। अभिलेखों में उल्लेख मिलता है और यह उस काल में भी कृषि अर्थव्यवस्था का हिस्सा था । कश्मीरी किंवदंतियों के अनुसार, केसर को दो सूफी संत ख्वाजा मसूद और वली इस क्षेत्र में लाए थे।

नाम...

केसर एक सुगंध देनेवाला पौधा है। इसके पुष्प की वर्तिकाग्र (stigma) को केसर, कुंकुम, जाफरान या सैफ्रन कहते हैं। कश्मीर के लोग केसर को 'कश्मीरी मोगरा' भी कहते हैं। इसके लाल-नारंगी रंग के आग की तरह दमकते हुए केसर को संस्कृत में 'अग्निशाखा' नाम से भी जाना जाता है।

केसर' पारंपरिक रूप से कश्मीरी व्यंजनों, औषधीय मूल्यों और कश्मीर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से जुड़ा हुआ है। 'केसर' स्वाद में कड़वा होते हुए भी खुशबू के कारण विभिन्न व्यंजनों/ पकवानों में डाला जाता है। यह घुलनशील होता है और गर्म पानी में डालने पर गहरा पीला रंग देता है। प्राय: इसका उपयोग मक्खन आदि खाद्य द्रव्यों में रंग और स्वाद लाने के लिये किया जाता हैं।

खासबात यह है कि दूध में मिलाकर पीने के अलावा भी दूध से बनी मिठाइयों और मक्खन आदि खाद्य पदार्थो में रंग एवं स्वाद लाने के लिये भी केसर का उपयोग किया जाता है। औषधीय गुण होने के कारण

इसकी बहुत अधिक मांग हैं। आयुर्वेदाचार्यों के अनुसार, केसर में 150 से भी अधिक औषधीय तत्व पाए जाते हैं। उत्तेजक, आर्तवजनक, पाचक, वात-कफ-नाशक और वेदनाहरक होने के कारण यह कैंसर, आर्थराइट्स, अनिद्रा, सिरदर्द, उदररोग, सर्दी जुकाम तथा सिरदर्द जैसे अनेक रोगों में लाभकारी सिद्ध हुआ है। हमारे देश में गर्भवती महिलाओं को परंपरागत रुप से केसर का दूध पीने की सलाह भी दी जाती रही है। ऐसा माना जाता है कि इससे बच्चे का रंग गोरा (सुन्दर) हो जाता है। वैसे भी कहा जा सकता है कि मसालों की दुनिया में केसर को सबसे महंगे मसाले के रुप में भी उपयोग होता है।

वैश्विक महत्व

केसर का वानस्पतिक नाम क्रोकस सैटाइवस (Crocus sativus) है। यह इरिडेसी (Iridaceae) कुल की वनस्पति है जिसका मूल स्थान दक्षिण यूरोप है। विश्व के विभिन्न भू-भागों में इसकी लगभग 80 प्रजातियां पाई जाती हैं। फ्रांस, स्पेन, भारत, ईरान, इटली, ग्रीस, जर्मनी, जापान, रूस, आस्ट्रिया, स्विटज़रलैंड, तुर्किस्तान, चीन, पाकिस्तान (क्वेटा) प्रमुख केसर उत्पादक देश हैं । आज सबसे अधिक केसर उगाने का श्रेय स्पेन और ईरान को जाता है ।

पर कश्मीर के केसर की बात जो है वह अन्य देशों की केसर में नहीं है। कश्मीर की केसर को सबसे अच्छी और गुणवत्ता वाली केसर माना जाता है। शायद इसीलिए कश्मीर की केसर की
दुनिया में एक अलग ही पहचान रही है। एक समय था जब कश्मीर का केसर विश्व बाज़ार में श्रेष्ठतम माना जाता था। केसर बहुत महंगी होती है। कश्मीरी मोंगरा सर्वोतम मानी गई है।

भारत में केसर....

केसर यहां के लोगों के लिए वरदान है। क्योंकि केसर के फूलों से निकाला जाता सोने जैसा कीमती केसर जिसकी कीमत बाज़ार में तीन से साढ़े तीन लाख रुपये किलो है। परंतु कुछ राजनीतिक कारणों से उसकी खेती बुरी तरह प्रभावित रही है। यहां की केसर हल्की, पतली, लाल रंग वाली, कमल की तरह सुन्दर और गंधयुक्त होती है।

दुनिया भर में जाना जाता है कि पारंपरिक विरासत के कारण केसर किसानों के लिए एक नकदी फसल है। भारत में फिलहाल, कश्मीर के विशिष्ट क्षेत्र में ही केसर की खेती की जाती है। कृषि की बात करें तो कश्मीरी किसानों का कुल एक प्रतिशत ही केसर की कृषि पर निर्भर है। जबकि बाकी किसानों के पास अन्य फसलों की खेती ही आय का स्रोत है।

खास बात यह है कि केसर का पौधा अत्यधिक सर्दी और यहां तक की बर्फवारी को भी सहन कर लेता है। यही कारण है कि कश्मीर में परंपरागत रुप से केसर की खेती होती है। दरअसल आतंकवादी गतिविधियों के चलते कश्मीर के केसर उत्पादक किसानों को भी काफी नुकसान उठाना पड़ा है। इस कारण केसर की खेती भी बुरी तरह से प्रभावित हुई और केसर के खेत बर्बाद होने लगे थे ।

भारत सरकार ने जहां एक ओर कश्मीर में शांति बहाली के प्रयास तेज किए उसके साथ ही कश्मीर की केसर की खेती सहित परंपरागत खेती और उद्योगों को बढ़ावा देने के समग्र प्रयास शुरु किए हैं। सरकार ने केसर के खेती को प्रोत्साहित करने और कश्मीर में 3715 हैक्टेयर क्षेत्र को पुनः खेती योग्य बनाने के लिए 411 करोड़ रु. की परियोजना स्वीकृत की जिसमें से अब तक 2500 हैक्टेयर क्षेत्र का कायाकल्प किया जा चुका है।

माना जा रहा है कि इस साल कश्मीर में केसर की बम्पर पैदावार हुई है। एक मोटे अनुमान के अनुसार 300 टन पैदावार की संभावना है। कश्मीर की केसर बाजार में एक लाख साठ हजार से लेकर तीन लाख रुपए प्रतिकिलो तक के भाव मिलने से किसानों को इसकी खेती में बड़ा लाभ मिला है।

केसर की खेती अन्य फसलों की तुलना में कहीं अधिक कड़ी मेहनत वाला काम है। सामान्यतः 80 फीसदी फसल अक्टूबर-नवंबर में तैयार हो जाती है। केसर के नीले-बैंगनी रंग के कीपनुमा फूल आते हैं और इनमें दो से तीन नारंगी रंग के तंतु होते हैं। उनकी मेहनत को इसी से समझा
जा सकता है कि (एक मोटे अनुमान के अनुसार) करीब 75 हजार फूलों से 400 ग्राम केसर निकलती है।

राष्ट्रीय केसर मिशन : 2010 में, केंद्र सरकार ने उत्पादन को पुनर्जीवित करने और नई खेती के तरीकों का अध्ययन करने के लिए यह मिशन शुरू किया था। जिसके लिए 37 करोड़ रुपए का बजट आवंटित किया था। सरकार ने उच्च तकनीक वाली कटाई उपरांत सुविधाओं के साथ पंपोर में एक केसर व्यापार केंद्र भी खोला है। राष्ट्रीय केसर मिशन के तहत उत्तराखंड के अलमोड़ा में ताड़ीखेत के निकट चौबटिया में भी केसर उगाने के प्रयास चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त पूर्वोत्तर के नागालैंड में केसर की खेती किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं ।

'केसर' को उगाने के लिए समुद्रतल से लगभग 2000 मीटर ऊंचे पहाड़ी क्षेत्र में शीतोष्ण एवं सूखी जलवायु की आवश्यकता होती है। पौधे के लिए दोमट मिट्टी उपयुक्त है। प्याज की तरह के केसर के कंद/ गुटिकाएं (bulb) प्रति वर्ष अगस्त-सितंबर माह में बोए जाते हैं, जो दो-तीन महीने बाद अर्थात नवंबर-दिसंबर तक पत्ते और फूलों के साथ फूटते हैं। इन फूलों की पंखुड़ियां तीन-तीन के दो चक्रों में और तीन पीले रंग की होती हैं।

वानस्पतिक चरण (नवंबर से मई) के दौरान कृन्तकों के नियंत्रण के लिए केसर के खेतों में काम शुरू हो जाता है और मई में पशुओं के लिए चारे के रूप में सूखे पत्ते की कटाई की जाती है। आमतौर पर किसान, केसर के फसल चक्रण के बीच में अलसी, जई, गेहूं की खेती भी करते हैं। लेकिन आजकल कुछ गांवों में राजमा और मसूर की खेती भी की जा रही है । यहां के किसान केसर की खेती में रासायनिक उर्वरकों या कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जंगली वनस्पतियों, जीवों और मिट्टी आदि से बनी जैविक खाद का ही इस्तेमाल करते हैं जो एक उत्साहजनक बिंदु है।

केसर का पौधा सुगंधित और लगभग आधा पौना गज ऊंचा, परंतु कंदहीन होता है। इसमें घास की तरह लंबे, पतले व नोकदार पत्ते मूलोभ्दव (radical), पतले, लंबी और नालीदार होते हैं। इनके बीच से पुष्पदंड (scapre) निकलता है, जिस पर नीललोहित वर्ण के एकाकी अथवा एकाधिक पुष्प होते हैं। अप्रजायी होने की वजह से इसमें बीज नहीं पाए जाते हैं। इसमें, बैंगनी, नीले एवं सफेद कीपनुमा, एक से तीन ही फूल (तन्तु) पाए जाते हैं, जो लगभग एक इंच लंबे, गहरे, लाल अथवा लालिमायुक्त हल्के भूरे रंग में होते हैं और उनके किनारे दंतुर या लोमश होते हैं। इसे छाया में सुखाया जाता है।

किसानों की सहायता के लिए राष्ट्रीय केसर मिशन के तहत सरकार ने हालिया दिनों में केसर की ग्रेडिंग, पैकेजिंग आदि की सुविधाओं के लिए पंपोर में अंतरराष्ट्रीय स्तर का एक केसर पार्क स्थापित किया है। इस पार्क में केसर को सुखाने और पैकिंग के साथ ही विपणन की सुविधा भी है, जिससे केसर उत्पादक किसानों को सीधा सीधा लाभ मिलने लगा है। केसर के खेतों के कायाकल्प करने के कार्यक्रम को तेजी से लाने के उद्देश्य से पांपोर में एक केसर पार्क संचालित किया जा रहा है ।
केसर विकास पार्क के द्वारा केसर की खेती में पानी की कमी, उत्पादकता में कमी और बाजार की अस्थिरता को दूर करने के लिए उपयुक्त तकनीकों को अपनाने हेतु किसानों को सहायता प्रदान की जाती है ।
इससे कश्मीर की केसर का ना केवल उत्पादन बढ़ेगा बल्कि केसर उत्पादक किसानों को नई राह मिलेगी,

उनकी आय बढ़ेगी और इस क्षेत्र के युवा भी प्रोत्साहित होंगे और एक नई सोच के साथ विकास की धारा से जुड़ेंगे।

केसर के खेत में...

कलियां निकलने से पहले यह पौधा वर्षा एवं हिमपात दोनों बर्दाश्त कर लेता है, लेकिन कलियां निकलने के बाद यदि तेज बरसात या बर्फ पड़ जाए तो पूरी फसल चौपट हो जाती है।
रंग एवं आकार के अनुसार इन्हें – मोगरा, लच्छी, गुच्छी आदि श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं। 150000 फूलों से लगभग एक किलो सूखा केसर प्राप्त होता है।

सामाजिक रूप से देखें तो केसर उत्पादन की कहानी के पीछे कश्मीरी महिलाओं का कहीं अधिक योगदान दिखाई देता है। फसल उठ जाने के कुछ दिन बाद, किसान अपनी केसर की फसल को फिर से जीवंत करने के लिए खुदाई और सफाई के बाद खुदाई करके ताजे पौधारोपण की तैयारी पुरूष करते हैं। लेकिन गुटिकाएं दबाने, खेत में पानी देने, दिन में रखवाली करने और फूल आने पर उन्हें धीरे धीरे से तोड़ कर इकट्ठा करने, सुखाने और छांटने आदि के काम में मुख्य रूप से महिलाएं ही देखी जाती हैं। इसके बाद, फूलों को पुरुषों को सौंप दिया जाता है। पुरुष इनको अलग करते हुए, केसर को ग्रेड देते हैं और आजकल नमी प्रूफ कंटेनरों में पैकिंग के लिए तैयार करते हैं।

केसर और पर्यटक :

जम्मू-कश्मीर की राजधानी श्रीनगर से सिर्फ 20 किलोमीटर की दूर एक छोटे से शहर पंपोर के खेतों में शरद ऋतु के आते ही खुशबूदार और कीमती 'केसर' की बहार आ जाती है। बर्फ़ से ढकी चोटियों से घिरे भूरी मिट्टी के मैदानों में शरद ऋतु के अलसाये सूर्य की रोशनी में शरद ऋतु के अंत तक ये खेत बैंगनी रंग

के फूलों से सज जाते हैं। इस लाल पीले रंग की खुशबू सारे वातावरण में बसी रहती है। इन केसर के बैंगनी रंग के फूलों को हौले-हौले चुनते हुए कश्मीरी महिलाएं इन्हें सावधानी से तोड़ कर अपने थैलों में इक्ट्ठा करते हुए, कई बार अपने लोक गीत भी गाती हैं।

इन फूलों की खुशबू इतनी तेज़ होती है कि आसपास का क्षेत्र महक उठता है। श्रीनगर के टूर ऑपरेटर्स ने भी इस महक का पूरा पूरा लाभ उठाया था। इसी दौरान क्षेत्र में पर्यटकों का बड़ी संख्या में आगमन होता रहा है। लगभग दो दशक पूर्व तक श्रीनगर के टूर ऑपरेटर्स (खास तौर से विदेशी) पर्यटकों को यहां केसर के मौसम के दौरान खेत दिखाने लाते थे। अब पिछले साल से फिर से पर्यटकों का आगमन शुरू हुआ है। यही टूर ऑपरेटरों ने मिलकर यहां कभी-कभी शाम के समय पर्यटकों के स्वागत के रूप में ग्रामीणों से छोटे-छोटे सांस्कृतिक कार्यक्रम - जैसे कि महिलाओं द्वारा लोकगीत, कभी उनके लोक-नृत्य और पुरूषों द्वारा स्थानीय वाद्यों पर संगीत आदि – कराने लगे हैं। इसके अलावा कश्मीरी चाय-रोटी के नाश्ते का प्रबंध भी किया जाने लगा है, इससे ग्रामीणों को कुछ आय भी हो जाती है और पर्यटक प्रसन्न होते हैं।

अब साफ होने लगा है कि इसी तरह से समग्र प्रयास जारी रहे तो आने वाले दिनों में कश्मीर की वादियों की केसर की महक दुनिया के देशों में बिखरेगी और कश्मीर की केसर की मांग बढ़ेगी जिसका सीधा लाभ केसर उत्पादक किसानों को होगा तो कश्मीर की पहचान केसर के नाम पर होगी।

*** संप्रति : राजस्थान सरकार में जनसंपर्क अधिकारी। दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के कार्यक्रमों प्रतिभागिता, प्रमुख समाचार पत्रों में निरंतर लेखन। अतुल्य भारत में प्रथम योगदान।**

योग सीखना : सन्यासी बनना नहीं !

-क्षेत्रपाल शर्मा

'योग: चित्तवृत्ति निरोधाय' अर्थात योग, आत्मा का परमात्मा से मिलन है जैसा सभी जानते हैं इसकी परिभाषा में ही स्पष्ट कर दिया गया है कि चित्त की वृत्ति पर विचार करें तो इसे वश मे करना आसान नहीं है। इसका शमन या दमन नहीं किया जा सकता है क्योंकि दमन बलपूर्वक होता है और मन बहुत चंचल होता है। जितनी भी ललित कलाएं है, वह मन की सर्वोत्तम गतिविधियों का ही सृजन है। इसके शमन के लिए यम, नियम, ध्यान योग प्राणायाम व समाधि है ।

जिससे भी पूछिए, तो वो कोई न कोई परेशानी गिना ही देता है। कोई शारीरिक रूप से बीमार है तो कोई तनाव भरी जिंदगी जी रहा है। इस स्थिति से बचने का एकमात्र उपाय योग है। अब कई वैज्ञानिक शोधों से पुष्टि हो चुकी है कि बेहतर स्वास्थ्य के लिए योग एक अच्छा विकल्प है। आप शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ हैं तो आप बेहतरीन जीवन जी रहे हैं।

यदि आपको लगता है कि योग का मतलब अपने शरीर को अतरंग तरीके के मोड़ना है, तो फिर समय आ गया है कि आप अपनी सोच पर एक बार गहनता से पुनर्विचार करें | योग सिर्फ़ आसनों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इससे कहीं अधिक है | सीधे-सादे शब्दों में कहा जाए तो योग अपने मन, शरीर और श्वसन तंत्र की देखभाल करना है |

योग शब्द "युज" से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ होता है - एकजुट करना या एकीकृत करना| योग 5000 वर्ष से भारतीय ज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग है | योग में आसन, प्राणायाम और ध्यान के माध्यम से हम मन, श्वांस और शरीर के विभिन्न अंगो में सामंजस्य बनाना सीखते हैं |

सामान्य भाव में योग का अर्थ है जुड़ना, यानी दो तत्वों का मिलन योग कहलाता है। आत्मा का परमात्मा से जुड़ना यहां अभीष्ट है।

शरीर में पांच अग्नि तत्व हैं तो पांच ही चक्र हैं, अर्थात मन एक शरीर में ही निवास करता है । योग तभी आ सकता है कि जब आप मन की गति को नियंत्रित कर लें, जिनके जरिए विचारों का प्रवाह निरंतर चलता है।

मन: एव मनुष्याणाम कारणो बन्ध मोक्षयो : ।।

मन ही मन को जानता , मन की मन से प्रीत। मन ही मनमानी करे , मन ही मन का मीत।।
मन झूमे मन बावरा , मन की अद्भुत रीत, मन के हारे हार है मन के जीते जीत ।।

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द 'युज' से हुई है, जिसका अर्थ जुड़ना है। योग के मूल रूप से दो अर्थ माने गए हैं, पहला- जुड़ना और दूसरा-समाधि। जब तक हम स्वयं से नहीं जुड़ पाते, तब तक समाधि के स्तर को प्राप्त करना मुश्किल होता है। इसलिए माना जाता है कि योग मात्र एक व्यायाम नहीं है, बल्कि विज्ञान पर आधारित शारीरिक संक्रिया है।

गीता में भी श्रीकृष्ण ने कहा है, ''योग: कर्मसु कौशलम'' यानी योग से कर्मों में कुशलता आती है। इसे समझने के लिए हमें विख्यात दार्शनिकों, ज्ञानियों और योगियों के वक्तव्यों को जानना चाहिए ।

जब आप पूरे शरीर को ठीक से थामना सीख जाते हैं, तो आप पूरे ब्रह्मांड की ऊर्जा को अपने अंदर महसूस कर सकते हैं। यही योग है। – **सद्गुरु जग्गी वासुदेव**

चित्तवृत्तिनिरोध: यानी चित्त की वृत्तियों को चंचल होने से रोकना ही योग है। आसान भाषा में कहें तो मन को भटकने न देना और एक जगह स्थिर रखना ही योग है। – **पतंजलि**

योग को धर्म, आस्था और अंधविश्वास के दायरे में बांधना गलत है। योग विज्ञान है, जो जीवन जीने की कला है। साथ ही यह पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। जहां धर्म हमें खूंटे से बांधता है, वहीं योग सभी तरह के बंधनों से मुक्ति देता है। – **ओशो**

योग तीन स्तरों पर काम करते हुए आपको फायदा पहुंचाता है। इस लिहाज से योग करना सभी के लिए सही है।

पहले चरण में यह मनुष्य को स्वास्थ्यवर्धक बनाते हुए उसमें ऊर्जा भरने का काम करता है। दूसरे चरण में यह मस्तिष्क व विचारों पर असर डालता है। हमारे नकारात्मक विचार ही होते हैं, जो हमें तनाव, चिंता या फिर मानसिक विकार में डाल देते हैं। योग इस चक्र से बाहर निकालने में हमारी मदद करता है। योग का तीसरा और महत्वपूर्ण चरण मनुष्य को चिंताओं से मुक्त करता है। योग के इस अंतिम चरण तक पहुंचने के लिए कठिन परिश्रम की जरूरत होती है। योग के लाभ विभिन्न स्तर पर मिलते हैं।

जब शरीर में रक्त का संचार बेहतर होता है, तो सभी अंग बेहतर तरीके से काम करते हैं। साथ ही शरीर का तापमान भी नियंत्रित रहता है। शरीर को पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा मिलती है और तंत्रिकाओं की कार्यप्रणाली बेहतर होती है। साथ ही हृदय गति सामान्य होती है। आप चाहे स्वस्थ हैं या नहीं हैं, दोनों ही स्थिति में योग करना लाभदायी है।

योग से शरीर में जमा विषैले पदार्थ व जीवाणु साफ हो जाते हैं जिससे शरीर संतुलित होता है। इससे धीरे-धीरे वजन कम होने लगता है। योग सिर्फ शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक रूप से भी मजबूत बनाता है। इसकी जरूरत रोजमर्रा के काम में पड़ती है। अधिक श्रम करने वालों के लिए मानसिक तौर पर मजबूत होना जरूरी है।

योग विज्ञान में दिन को चार हिस्सों में बांटा गया है, ब्रह्म मुहूर्त, सूर्योदय, दोपहर व सूर्यास्त। इनमें से ब्रह्म मुहूर्त और सूर्योदय को योग के लिए श्रेष्ठ माना गया है। ऐसा माना जाता है कि अगर आप ब्रह्म मुहूर्त में उठकर योग करते हैं, तो सबसे ज्यादा फायदा होता है। उस समय वातावरण शुद्ध होता है और ताजी हवा चल रही होती है। अमूमन आध्यात्म ज्ञान प्राप्त करने वाले ही इस समय में ही योगाभ्यास करते हैं। सुबह चार बजे का समय ब्रह्म मुहूर्त माना गया है। यदि सूर्योदय के समय भी योग करना बेहतर है। इससे शरीर दिनभर ऊर्जावान रहता है। मगर ध्यान रहे कि योगासन हमेशा खाली पेट ही करें। योग करते समय अपने मन को पूरी तरह से स्थिर और शांत करने का प्रयास करें।

"बेस्ट ब्रीदिग इज़ नो ब्रीदिग"। नो ब्रीदिग का अर्थ श्वास न लेने से नहीं है बल्कि सांस का नियमित व धीमा हो जाना है, यह ही योग की पहचान का सबसे सरल एवं सर्वोत्तम उपाय है

शरीर मे श्वसन दो तरह से होता है प्रकृतिक तथा स्वैच्छिक । योग का संबंध स्वैच्छिक से है अर्थात अपनी इच्छानुसार । शरीर मे सांस की गति एक मिनट में औसत 18 बार होती है, जब कि नाडी का धडकना यानि पल्स रेट 60 से 100 के बीच होता है। जब एक मिनट मे एक बार ही सांस लें तब को समझना चाहिए कि योग जान गये ।

शरीर में श्वसन का होना एक ढोकनी के समान है जिसको यदि ढंग से नियंत्रित किया गया तो मेटाबोलिज्म बनता है। इसी ऑक्सीजन से ऑक्सीजन -फ्री - रेडिकल्स से असाध्य रोग भी ठीक हो सकते हैं।

गीता में उल्लेख किया गया है :
"युक्ताहार विहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मणा, युक्त स्वपना व बोधस्य..."

जैसा अन्न वैसा मन इसलिए भोजन उस अन्न से ही हो जो उचित तरीके से कमाया गया हो, जो हर तरह की हिंसा से मुक्त हो और इसमें किसी के हक को छीना नहीं गया हो।

राम नरेश त्रिपाठी रचित योग पुस्तक में ज्ञान-योग (संत ज्ञानेश्वर, अष्टावक्र), भक्ति योग (भक्त प्रह्लाद, मीरा) और कर्म योग (महर्षि अरविन्द ,स्वामी विवेकानंद) की चर्चा की गई है । आप पूरे दिन काम करें और दिन के अंत में उन सभी कामों को ईश्वर को समर्पित कर दें कि आज हमने यह किया है, अब आगे तुम्ही संभालों।

अगर आप पहली बार योग कर रहे हैं, तो प्रशिक्षक की निगरानी में ही करें। वह आपकी आयु, क्षमता और यदि कोई बीमारी हो तो उसके अनुसार उपयुक्त योगासन बताएगा। कई ऐसी बीमारियां हैं, जिनमें कुछ योग आसन वर्जित है, तो बेहतर यही होगा कि आप योग ट्रेनर की देखरेख में ही करें। इसमें कोई शक नहीं कि योग से सब संभव है, बस जरूरत है इसे करने के लिए संकल्प लेने की। जब भी आप योग करने का विचार बनाएं सबसे पहले किसी योग्य योग प्रशिक्षक का चुनाव करें । योग शिक्षक सभी को सर्वप्रथम यही बताते हैं कि योग क्या है, योग की सही मुद्रा क्या है? श्वसन की सही प्रक्रिया क्या है ?

योग की भाषा में इन्द्रियों को नियंत्रित करना ही योग-साधना है। लेकिन इन्हें सीधे-सीधे नियंत्रित नहीं किया जा सकता और आप धीरे-धीरे अभ्यास, ध्यान द्वारा ही सांसो पर नियंत्रण कर पाएंगे। हमें यह सब जानना भी जरूरी है । जैसे कि सिंह आसन किन को करना चाहिए, शवासन किन को करना चाहिए और प्राणायाम की सही विधि क्या है? इस प्रक्रिया में कब श्वास खींची जानी चाहिए और कब श्वास को छोड़ा जाना चाहिए और मेरुदंड सीधा होना चाहिए। यद्यपि योग लेट कर (एक मुद्रा) भी हो सकता है परंतु लेट कर करने में कई बार नींद आ जाने का अंदेशा बना रहता है। **योग के कुछ सरल आसन**

जिस तरह आप खेत में सीधे ही चावल नही बो सकते उसके लिए धान बोना ही जरूरी है उसी तरह योग करने के लिए आवश्यक क्रियाएं करने से पहले शरीर को स्वच्छ किया जाना नितांत जरूरी है। जैसे आप को शरीर की स्वच्छता और मजबूती के लिए ब्रह्म मुहूर्त चार से पांच बजे प्रातः जाग जाना चाहिए। सही आसन और प्राणायाम चुनना चाहिए । योग के लिए सही मुद्रा (पोस्चर) का होना भी एक पूर्व वांछनीय है। साधारण व्यायाम (ताली बजाना, हाथ व पैरो की कसरत, गरदन घुमाना, बैठक, दंड बैठक आदि) स्वास्थ्य के सच्चे मित्र है। कुशलता पूर्वक किया गया कर्म ही योग है।

श्री कृष्ण और संत ज्ञानेश्वर को योगीराज कहा जाता है क्योंकि वह योग में निष्णात थे। उनका कहना था कि संसार में रहना है, लेकिन इसमे लिप्त नही होना है। इसलिए ईश्वर के लिए संसार को मत भूलिए पर, संसार के लिए ईश्वर को भी मत भूलिए। सुर एवं असुर दोनों में ही योगी हुए है। महऋषि वशिष्ठ, दुर्वासा, अनुसूया व शुक्राचार्य जैसे योगियों की एक लंबी श्रृंखला है। हम भी यथा शक्ति इस ओर प्रवृत्त हो। साध्य को पाने के लिए कभी भी गलत साधन न चुने अर्थात योग करते समय नियमों का ध्यान रखना जरूरी है और नाममात्र के लिए किया गया योग अथवा व्यायाम हानिकर भी हो सकता है।

धान में छिलके का कोई विशेष मूल्य नहीं होता है। लेकिन अगली फसल होने तक, उस छिलके की जरूरत हो सकती, ठीक उसी प्रकार जिस तरह हम जीवन में पूजा- ध्यान आदि करते हैं। इसलिए गलत व हानिकर विचारों का शमन करके ही, जिसकी सरल विधि अभ्यास, पूजा, ध्यान, के द्वारा हम योग सीख सकते हैं। जो व्यक्ति यह जान लेगा वह कभी दूसरे किसी का भी अहित सोच ही नही सकेगा।

गीता में ही यह उद्घोष है, "योग: कर्मसु कौशलम" अर्थात कुशलतापूर्वक किया गया कर्म ही योग है। इसका मतलब सन्यास बिल्कुल नही। गृहस्थ जीवन में रहकर योग कीजिए और तेजस्वी बनिए। वैसे भी सभी युग एक जैसे रहे हैं। सिर्फ आपको इस **कल(ह)** युग मे कलह से जरूर बचना चाहिए ।

विद्वानों की इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि बहुत पहले से ही , शैतान भी ज्ञान की बातें गीता, कुरान और बाइबिल के हवाले से करता आया है, उससे (लोभ, मोह, मद आदि) से सतर्क रहना चाहिए। ईश्वर आपसे दूर नही है बस एक परदे के पीछे है, आप उस परदे को हटाना सीख जाइए।

साहसिक पर्यटन करने वाले यात्रियों को नियमित रूप से योग करना चाहिए क्योंकि उन्हें उर्जा की अधिक आवश्यकता होती है और योग उन्हें उर्जा प्रदान करता है।

संदर्भ : 1 गीता, 2 पतंजलि : योग दर्शन, 3 माइन्ड : इट्स मिस्टरीज, डिवाइन लाइफ सोसाइटी, हरिद्वार 4 योग : राम नरेश त्रिपाठी : हिन्दी मंदिर प्रेस, इलाहाबाद।

*** संप्रति : कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली से सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक। अतुल्य भारत में निरंतर योगदान।**

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह

एमराल्ड और ब्ल्यु

-सुश्री सौम्या मुखर्जी

"एमराल्ड और ब्ल्यु" टैग लाइन पूरी तरह से खुद को सही ठहराती है, आप यहां आकर जंगल की हरियाली, नीला साफ आकाश और समुद्र के बीच स्वयं खो जाएंगे। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित है, यह 537 द्वीपों का एक समूह है, जिसमें से केवल 37 द्वीपों में जनजातियों का निवास है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का निर्माण भारतीय टेक्टोनिक प्लेट के टकराने के कारण हुआ है।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह को स्नेह से "एमराल्ड आइलैंड्स" यानि पन्ने जैसा द्वीप कहा जाता है। इसकी खासियत है इसकी अनुपम सुंदरता, चकित कर देने वाली वनस्पति और जीव-जंतु। हकीकत तो यह है कि यहां कई आकर्षक स्थान, सूरज को चूमते समुद्री तट, मोहक पिकनिक स्पॉट्स और कई अन्य आश्चर्य हैं, जो राज्य के पर्यटन को एक नए ही मुकाम पर लेकर जा रहे हैं।

अंडमान शब्द मलय भाषा के शब्द हांदुमन से आया है जो हिन्दू देवता हनुमान के नाम का परिवर्तित रूप है। निकोबार शब्द भी इसी भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ होता है नग्न लोगों की भूमि। हिन्द महासागर में बसा निर्मल और शांत अंडमान पर्यटकों के मन को असीम आनंद की अनुभूति कराता भारत का एक लोकप्रिय द्वीप समूह है।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर है। इस शहर में कई लोकप्रिय स्थल है, जैसे सेल्यूलर जेल, फ्लैग प्वाइंट, कार्बिन-कोव्स समुद्रतट, मरीना बीच, गांधी पार्क, रॉस आई लैंड, नील

आईलैंड, हैवलॉक आईलैंड, चिड़िया टापू बीच, रेडस्किन आईलैंड, माउंट हैरियट नेशनल पार्क आदि के साथ ही लाइटहाउसों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है।
पोर्ट ब्लेयर से कुछ दूरी पर हरियाली एवं सुंदरता में खो जाने के कई और स्थान मौजूद है। प्राकृतिक सुंदरता के बीच समय बिताने के लिए अंडमान और निकोबार एक अच्छी जगह है।

वर्षों से इन द्वीपों ने दक्षिण भारतीय चोलराजाओं से लेकर कई विदेशी बस्तियों को देखा है जो इनका नौसैनिक आधार के रूपमें उपयोग कर रहे थे। डेनमार्क, ऑस्ट्रिया द्वारा उपनिवेशीकरण और फिर ब्रिटेन ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान दोषियों को दंडित करने और जापानी कब्ज़े के लिए एक दंड कॉलोनी के रूप में इस का उपयोग किया। इसके बाद भारत भी इन द्वीपों को रणनीतिक रक्षा सुविधाओं के रूपमें विकसित कर रहा है।
अंडमान में विश्व का दूसरी सबसे बड़ी प्रवाल भित्तियां है। 2004 के सुनामी ने इन द्वीपों में कई तटीय क्षेत्रों और प्रवाल भित्तियों (कोरलरीफ) को नष्ट कर दिया और तब से इनकी बहाली का काम चल रहा है। देर से ही सही यह धीरे-धीरे एक पर्यटन स्थल के रूपमें विकसित हो रहा है।

अंडमान में मूल छ: आदिवासी जनजातियां ही हुआ करती थी, जिनका नाम ग्रेट अंडमानी, ओंगे, जरावा, सेंटिनेल्स, शोम्पेन और निकोबारी है, जिनमें से कुछ विलुप्त हो गई अधिकतर ने आधुनिक जीवन को अपना लिया है। अभी केवल दो जनजातियां जरवा और सेंटिनेलिस ही जंगली जीवन व्यतीत कर रहे है।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के पर्यटन में संग्रहालयों और स्मारकों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। नामी संग्रहालयों में वन संग्रहालय, नौसेना का समुद्रीय संग्रहालय समुद्रिका, राष्ट्रीय संग्रहालय और एंथ्रपोलॉजिकल म्यूजियम शामिल है। दूसरी ओर, सेलुलर जेल और वाइपर आइलैंड के फांसी के तख्ते को देखने भी सैकड़ों पर्यटक वहां पहुंचते हैं। ..

एतिहासिक सेलुलर जेल, पोर्ट ब्लेयर :

अंडमान निकोबार की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में बनी हुई सेलुलर जेल का निर्माण 1896 में शुरू होकर 1906 में पूर्ण हुआ था। ब्रिटिश काल के दौरान शुरू में नृशंस अपराधियों को सलाखों के पीछे रखा जाता था। कुछ समय बाद देश के स्वशतंत्रता सेनानियों को भी 'काला पानी' की सजा दे कर यहां भेजा जाने लगा, जहां उन्हेंल कठोरतम सजा दी जाती थी।

यहां दिखाया गया है कि कैदियों को कैसे यातनाएं दी जाती थी।

इस सेलुलर जेल में देश का महत्वपूर्ण इतिहास सिमटा हुआ है। इस कारण से पर्यटकों के साथ ही, उत्साही लोग भी सेलुलर जेल देखने आते हैं ताकि हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को दी गई प्रताड़नाओं की जानकारी प्राप्त कर सके।

यह जेल सात शाखाओं में फैली हुई है, जिनमें कुल 694 कमरे हैं। इस जेल के अंदर एक संग्रहालय भी बनाया गया है, जहां पर पुराने अस्त्र-शस्त्र देखे जा सकते हैं। पर्यटन की दृष्टि से इसे इतिहास और संस्कृति की श्रेणी में रखा गया है।

राजीव गांधी वाटर स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स :

यह काम्प्लेक्स सेलुलर जेल के निकट ही है । राजीव गांधी वाटर स्पोर्ट्स कंपलेक्स पहुंचने के लिए यातायात की सुविधा उपलब्ध है। इस स्थान पर प्रात: 08:00 बजे से शाम 7:00 तक विचरण कर सकते हैं। वाटर स्पोर्ट्स का समय 10:00 बजे से शाम 6:30 तक है और राइडिंग के अनुसार अलग-अलग शुल्क लिए जाता है।

आप स्वयं भी खुले समुद्र में एयर-बोट पर नौकायन का आनंद ले सकते हें। हां, ध्यान रखिए कि यदि तेज वाटर-स्कूटर या डीजल बोट पर सवारी करें तो लाईफ गार्ड आपके साथ जाएगा।

नेता जी सुभाष द्वीप यानि रॉस आईलैंड (अंडमान) :

यह द्वीप अंडमान निकोबार की राजधानी पोर्ट ब्लेयर से मात्र दो कि.मी. दूर पूर्व दिशा में है। इस द्वीप का ऐतिहासिक महत्व यह है कि यहां पर ब्रिटिश शासन से लेकर भारत के स्वतंत्र होने तक की कई ऐतिहासिक इमारतें मौजूद है, जो अब खंडहर में तब्दील हो गई है फिर भी पर्यटकों के बीच यह द्वीप काफी लोकप्रिय है। इसे देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं।

राजधानी के निकट होने की वजह से यहां पहुंचने के लिए फेयरी यातायात की अच्छी सुविधा है। यहां की एक खास बात यह है कि यदि पर्यटक नारियल पानी पीना चाहे तो, पेड़ से तोड़ कर दिया जाता है ।

द्वीप पर प्रवेश का समय सुबह 8:30 बजे से शाम 4:30 बजे तक है। (बुधवार बन्द) प्रवेश शुल्क – 20 रुपए/ प्रति व्यक्ति (वयस्क) और बच्चों के लिए 10 रुपए/प्रति है। कैमरे और मोबाइल फोन के लिए 50 रुपए अतिरिक्त लिए जाते हैं।

द्वीप पर एक खंडहर के अवशेष

हिरण को नारियल खिलाता एक पर्यटक।

पर्यटन विभाग की ओर से इस स्थान पर लगभग 20 हिरण भी छोड़े गए है, जिससे क्षेत्र की सुंदरता बढ़ी है।

डिगलीपुर :

डिगलीपुर उत्तरी अंडमान द्वीप में, समुद्र तल से 43 मीटर ऊपर, एरियल बे के दक्षिणी किनारे पर बसा सबसे बड़ा शहर है। यह हरियाली और समुद्री जीवन के साथ, एक इको-पर्यटन स्थल है। यह अंडमान द्वीप की एकमात्र नदी कलपोंग नदी यहीं है। द्वीप का सबसे ऊंचा स्थान, सैडल पीक,10 कि.मी. दूर दक्षिण में है। यहां संतरे की अच्छी फसल होती है। पोर्ट ब्लेयर से यहां आने पहुंचने का एक आसान विकल्प है कार, जो लगभग 12 घंटे की यात्रा है। दूसरा रोमांचक विकल्प जलमार्ग है। यहां के लिए सप्ताह के दो दिन नाव सेवाएं उपलब्ध हैं जो रात भर की एक अभूतपूर्व यात्रा है। यह एक आधुनिक शहर ही है,जो दुनिया भर से पर्यटकों को बांधे रखता है।

माउंट हैरियट : माउंट हैरियट पोर्ट ब्लेयर से सड़क मार्ग द्वारा 55 कि.मी. और 'फेरी' नाव से मात्र 15 कि.मी. दूर है। ब्रिटिश राज में यह मुख्य आयुक्त का ग्रीष्मकालीन मुख्यालय हुआ करता था। दक्षिण अंडमान में सबसे ऊंची (365 मीटर) चोटी से यहां से पास के द्वीपों और समुद्र का
बेहतरीन नज़ारा दिखता है। 42.62 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैले इस पार्क में नाना प्रकार की वनस्पति, जीवजंतुओं और पक्षियों के अलावा किंग कोबरा, ग्रीन सी और ओलिव रिडले कछुए, अंडमानी कोबरा रॉबर केकड़े, खारे पानी में रहने वाले मगरमच्छ और कछुए तथा जंगली सुअर देखे जा सकते हैं।
यहां के जंगलों में घूमना अपने आप में ही एक रोमांच है। इसके लिए किराए पर एक सफारी गाड़ी लेना जरूरी है।

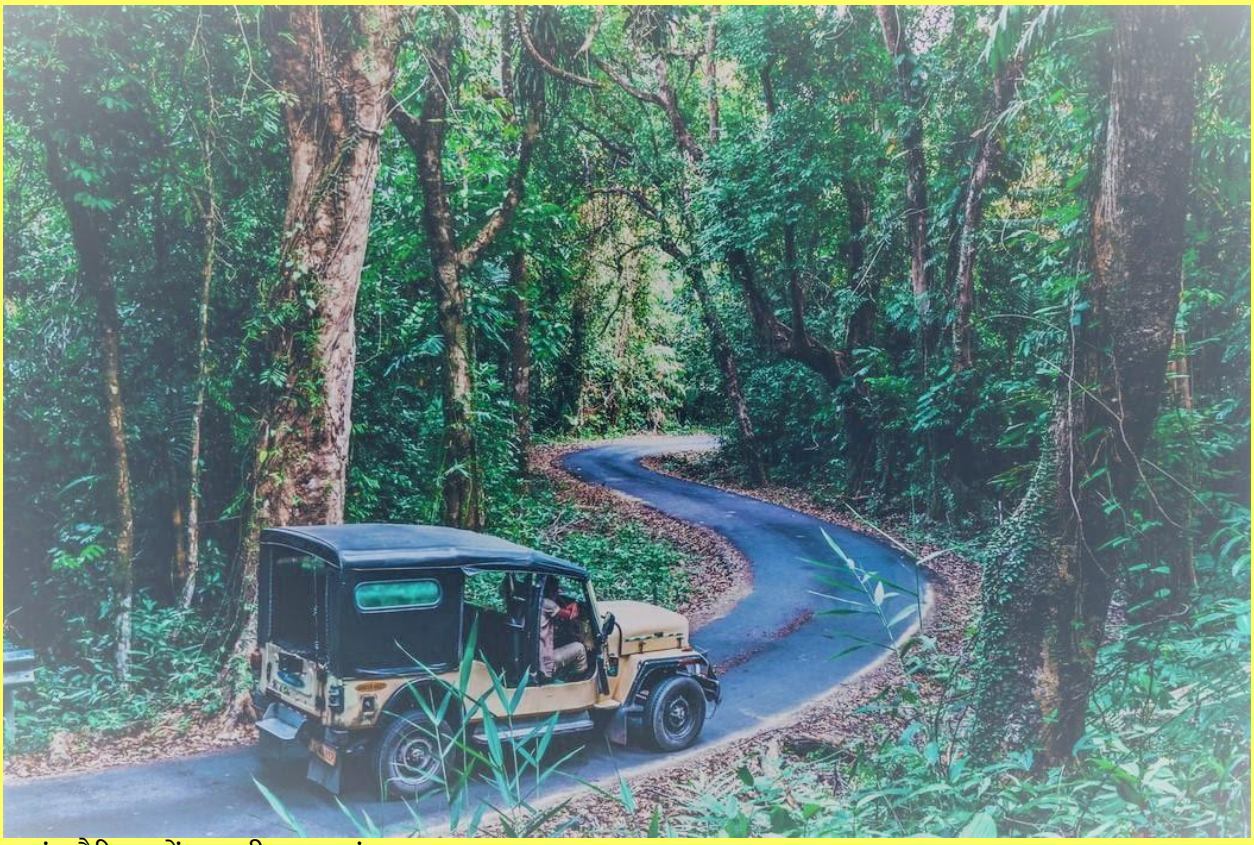

माउंट हैरियट में सफारी का आनंद

अंडमान निकोबार द्वीप समूह में अन्यं रोचक गंतव्य

लॉन्ग आइलैंड :

अंडमान में प्रकृति मनोरम दृश्य देखने वालों के लिए पोर्ट ब्लेयर से 80 कि.मी. उत्तर में द्वीप स्थित लॉन्ग आइलैंड सबसे पसंदीदा जगहों में से एक है। पर्यटक इस जगह पर इस इलाके में पाई जाने वाली डॉल्फिन देखने आते हैं। लालाजी बे पर रेतीला समुद्री तट भी लॉन्ग आइलैंड पर एक महत्वपूर्ण जगह है।

महात्मा गांधी मरीन नेशनल पार्क :

राजधानी पोर्ट ब्लेयर से 29 कि.मी. दूर, यह प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता पर्यटकों को आकर्षित करती है। यह पार्क समुद्री जीवों विशेषकर समुद्री कछुए और कोरल के संरक्षण के लिए बनाया था। लगभग 281 वर्ग कि.मी. के क्षेत्रफल में फैले इस मरीन पार्क में खुले समुद्री तट, खाड़ियां और 15 छोटे-बड़े द्वीप हैं। पर्यटक कांच के तलों वाली नावों से पानी के नीचे दुर्लभ कोरल और समुद्री जीवन देख सकते हैं, स्कूबा डाइविंग और स्नॉर्कलिंग भी कर सकते हैं। इस यात्रा में ढाई घंटे से तीन घंटे बिता सकते हैं। प्रवेश शुल्क- 25 रुपए /प्रति व्यक्ति है। नौका विहार या स्कूबा डायविंग अथवा अन्य द्वीपों हेतु 300 रुपए से एक हजार रुपए तक लिए जाते हैं। यहां आने के लिए पोर्ट ब्लेयर से बस लेकर वांडूर आएं और वहां से मरीन नेशनल पार्क के लिए एक नियमित अंतराल पर नाव/बोट उपलब्ध रहती हैं। यह समुद्री पार्क पिकनिक की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है, इस में जाने से पहले अपने साथ लंच और पेयजल अवश्य ले जाएं।

महात्मा गांधी मरीन नेशनल पार्क में धूप का मजा लेते मगरमच्छ

चिड़िया टापू :

अंडमान का चिड़िया टापू या बर्ड आइलैंड जंगलों में बिछे हरेभरे कालीन की तरह है। दक्षिण अंडमान द्वीप के सबसे दक्षिणी सिरे पर मौजूद यह इको पार्क,पोर्ट ब्लेयर से 28 कि.मी. दूर है। यहां पक्षियों की अनेक प्रजातियों के साथ इसकी प्राकृतिक सुंदरता देखने योग्य है। बर्डवॉचिंग के अलावा, यह अपने पिकनिक स्पॉट, ट्रेकिंग ट्रेल्स और शानदार सूर्यास्त के लिए भी प्रसिद्ध है। विविध वनस्पतियों और जीवों के कारण यह टापू एक जैविक उद्यान के रूप में जाना जाता है। बंगाल की खाड़ी में दूर तक फैले तट पर, चिड़िया टापू का एक अन्य मुख्य आकर्षण यहां का सनसेट प्वाईंट है। डूबता सूरज समुद्र को कई रंगों में रंग देता है, जिनमें लाल और स्वर्ण रंगों की विविध प्रतिछाया के दृश्य समुद्र काफी समय तक याद रहता है। चिड़िया टापू में एक छोटा चिड़ियाघर भी है। जब कभी पोर्ट ब्लेयर जाएं तो इस स्थल का आनंद अवश्य लेना चाहिए। **चिड़िया टापू के लिए नियमित बस सेवाएं उपलब्ध हैं।**

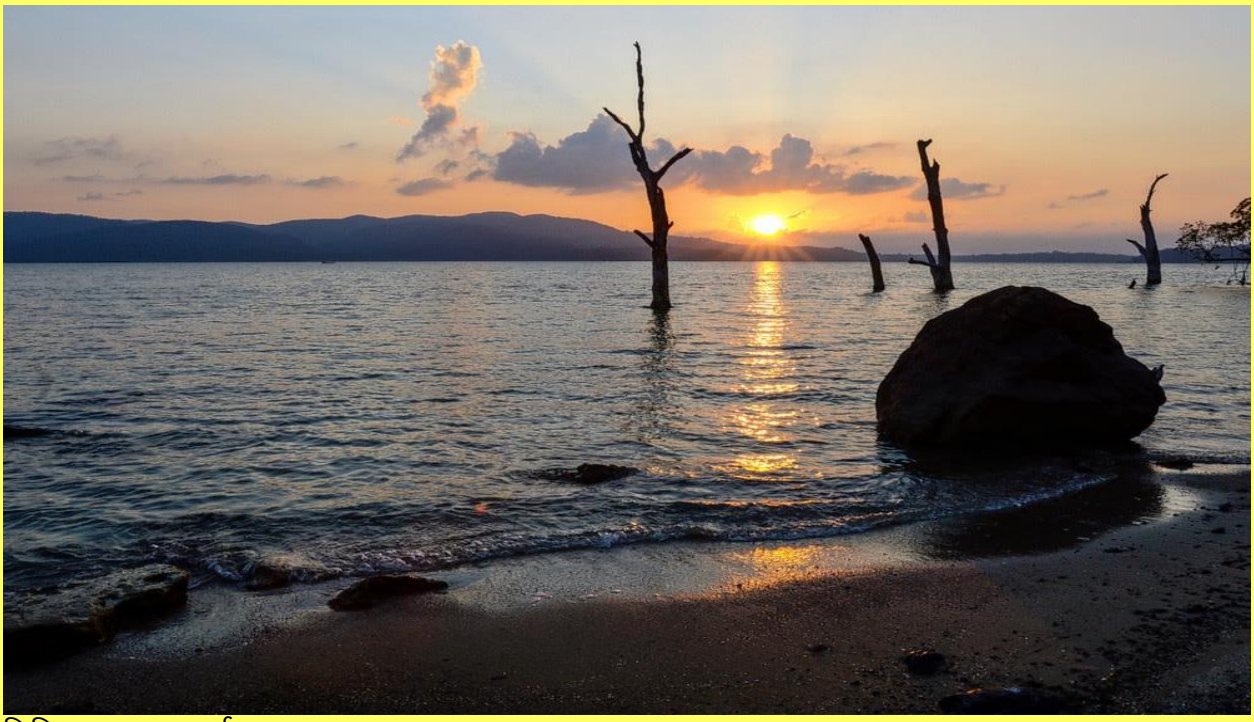

चिड़िया टापू पर सूर्यास्त का एक दृश्य

चैथम आरा मिल :

यह एशिया की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी आरा मिलों में से एक है। स्थानीय निर्माण कार्यों के लिए लकड़ी की चिराई हेतु वर्ष 1883 में स्थापित, यह मिल बहुत सारे ऐतिहासिक घटनाओं की गवाह रही है। विश्वयुद्ध में, जापानियों ने इस क्षेत्र पर आधिपत्य जमाने के लिए इसे बम से क्षतिग्रस्त कर दिया था। राज्य सरकार द्वारा इस मिल का प्रबंधन किया जाता है। इस क्षेत्र में ढेर सारे लकड़ी के लठ्ठों को देख सकते है। इस मिल के संग्रहालय में कुशल कारीगरों की काष्ठंकला को प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय के अंदर कुछ वनस्पतियों और जीवों की प्रदर्शनी भी है। यहां पर्यटक लकड़ी के भारी लठ्ठों को छोटे और बारीक टुकड़ों में बदलने की विभिन्न निर्माण प्रक्रियाओं को देख सकते हैं।

चैथम सॉ मिल एक बहुत अच्छे क्षेत्र में स्थित है और पोर्ट ब्लेयर से ग्रेट अंडमान ट्रंक रोड के केंद्र से लगभग दस कि.मी. दूर है। स्थानीय परिवहन से इस अद्भुत गंतव्य की यात्रा कर सकते हैं।

चैथम काष्ठ कला संग्रहालय

कार्बिन-कोव्स समुद्रतट :

प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर यह समुद्री तट पोर्ट ब्लेयर आने वाले पर्यटकों के लिए एक अच्छा गंतव्य है। पोर्ट ब्लेयर से मात्र आठ कि.मी. दूर होने के करण इस समुद्री तट पर पहुंचना काफी सुविधाजनक है। नारियल के वृक्षों से घिरा हुआ यह समुद्री तट सूर्य स्नान के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर स्कूबा डाइविंग के साथ-साथ कई अन्य वाटर एडवेंचर का आनंद लिया जा सकता है।

सिंक व रेडस्किन द्वीप :

यह दोनों द्वीप पोर्ट ब्लेयर के निकट में स्थित है। इस द्वीपों का पानी इतना निर्मल है कि उससे साफ तौर पर पानी के अंदर के जीव तथा पौधों को आसानी से देख सकते हैं। शीशे की तरह साफ पानी के नीचे रंगीन मछलियों को तैरते देखकर पर्यटक अपनी बाहरी दुनिया को अक्सर भूल जाते हैं। स्वच्छ निर्मल पानी का सौंदर्य ही सैलानियों का मुख्य आकर्षण है। इन द्वीपों में तैरती हुई डाल्फिन मछलियों के झुंड देखे जा सकते हैं। स्कूबा डाइविंग के साथ ही कई और वाटर एडवेंचर का आनंद लिया जा सकता है।
हरे-भरे जंगलों से गुजरते हुए वांडूर जेट्टी तक जाएं और उसके बाद ही रेड स्किन आईलैंड पर जाने का मौका मिलता है।

यह प्लास्टिक-मुक्त द्वीप है इसलिए पानी की बोतल या पोलिथिन ले जाने की अनुमति नहीं है। इसकी शानदार सुंदरता को देखें और तट पर समुद्र की आवाज़ के साथ आरामदायक समय बिताएं। अपना दिन समुद्र में तैरने और 3-4 मीटर की गहराई में शुरू होने वाले कोरल को देखने में बिताएं।

जीवित कोरल का संरक्षित क्षेत्र होने के कारण, रेड स्किन आइलैंड को पूरे साल में केवल पांच-छ: महीने ही खोला जाता है जब रेड स्किन द्वीप पर्यटकों के लिए बंद हो जाता है तब आमतौर पर जॉली ब्वॉय द्वीप पर्यटकों के लिए खोला जाता है। इसलिए वर्ष के किसी भी समय, दोनों में से किसी एक ही द्वीप की सैर कर पाते हैं। जॉली ब्वॉय द्वीप पर भी कोई दुकान नहीं हैं।

रुटलैंड द्वीप:

यह द्वीप अंडमान द्वीप समूह का सबसे दक्षिणी द्वीप है। रुटलैण्ड के बारे में बताया जाता है कि यह द्वीप कभी जंगिल समुदाय की गृहभूमि होती थी जो 1907 में ही विलुप्त हो गए, जिसका कारण अण्डमान के बाहर से आए रोग माने जाते हैं। रुटलैण्ड द्वीप पोर्ट ब्लेयर से 20 कि.मी दक्षिण में स्थित है। यदि आप पोर्ट ब्लेयर में हैं, तो सड़क मार्ग को जेट्टी पॉइंट पर ले जाएं और वहां से फिर द्वीप तक पहुंचने के लिए नाव ले सकते हैं। यहां रात भर ठहरने के लिए दो रिसार्ट भी है। इस स्था न पर अधिकतर लोग कम से कम एक रात दो दिन या अधिक हुआ तो तीन दिन चार रात के पैकेज टूर पर आते हैं। फिर भी दो-तीन घंटे के पर्यटक भी दिख जाते हैं।

शहर की भीड़ भरी जिंदगी से दूर इस जंगल रिसार्ट में ठहरने का भी एक अलग ही आनंद है।

हैवलॉक द्वीप स्वराज द्वीप :

पोर्ट ब्लेयर से 55 कि.मी. दूर स्थित इस द्वीप का नाम ब्रिटिश जनरल सर हेनरी हैवलॉक के नाम पर रखा गया है। यह अंडमान निकोबार के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है और यहां पर हर वर्ष लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं। यहां पहुंचने के लिए यातायात की अच्छी सुविधा उपलब्ध है।

हैवलॉक द्वीप पर स्कूबा डाइविंग के साथ-साथ तरह-तरह के समुद्री जीवो को देखने का आनंद लिया जा सकता है। यहां पर हाथ से बनी स्थानीय चीजें खरीद सकते है। यहां भी 'सी-फ़ूड' काफी प्रसिद्ध है।

इस द्वीप पर स्थित राधानगर समुद्र तट सन 2004 में टाइम पत्रिका द्वारा एशिया का सबसे खूबसूरत समुद्री तट घोषित किया गया है।

राधानगर समुद्र तट

कैसे पहुंचें:

वायु मार्ग: पोर्ट ब्लेयर के वीर सावरकर एयरपोर्ट से मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, बंगलूरू, भुवनेश्वर और चेन्नई के लिए देश की सभी प्रमुख एयरलाइन्स की नियमित उड़ानें हैं।

जल मार्ग: कोलकाता, चेन्नई और विशाखापट्टनम समुद्री रास्ते से पोर्ट ब्लेयर को जोड़ते हैं। इन बंदरगाहों से एक नियमित अंतराल पर जहाज उपलब्ध हैं।
चेन्नई और कोलकाता से पोर्ट ब्लेयर के लिए हर महीने औसतन तीन-चार जहाज उपलब्ध रहते हैं। जबकि विशाखापट्टनम से हर महीने कम से कम एक जहाज पोर्ट ब्लेयर रवाना होता है। जहाज से पोर्ट ब्लेयर पहुंचने में करीब तीन दिन लगते हैं। वापसी यात्रा शुरू करने से पहले जहाज बंदरगाह पर दो दिन रुकता है।

यादगार के लिये

पोर्ट ब्लेयर का मुख्य व्यवसायिक केंद्र है आबेरदीन बाजार। यहां छोटी बड़ी निजी दुकानों के अलावा, कॉटेज इंडस्ट्रिज एम्पोरियम और ग्राम खादी आयोग के शो रूम भी हैं। इन दुकानों में कई आकार के मूंगों

और शंखों से बने स्मृति चिह्न, शैल से बने ईयरिंग्स, ब्रेसलेट्स और कलाकृतियां, मोतियों से बने हार, जेवर और कलाकृतियां, ताड़ से बनी चटाइयां, नारियल के छिलके से बने लैम्प-शेड, लाठी, कटोरियां, ट्रे, एश-ट्रे और फर्नीचर, खास तौर पर स्थानीय पादौक लकड़ी से बने बांस बेंत के शिल्प, निकोबारी चटाइयां मिलती हैं।

कहां ठहरें

प्रमुख पर्यटन स्थल होने के नाते यहां स्टार और लग्जरी से लेकर बजट तक सभी तरह के होटल हैं, जो यहां से अन्य द्वीपों पर जाने वाले पर्यटकों को सभी जरूरी सुविधाएं उपलब्ध भी कराते हैं। यात्रियों की जरूरतों के अनुसार रिजॉर्ट्स, रेस्त्रां और कैफे भी हैं।

खानपान

यहां का खानपान भारत के अन्य राज्यों की तुलना में बिल्कुल अलग है। एक मुख्य् द्वीपीय पर्यटन स्थल होने के नाते, यहां पर खाने-पीने की लगभग हर चीजें उपलब्ध होती है, परंतु अगर बात करें यहां के विशेष भोजन की तो उसमें मुख्यतः 'सी-फूड' जैसे कि मछली, केकड़ा, झींगा, लोबस्टर (और ऑक्टोपस) जैसे समुद्री जीव शामिल हैं। यहां के होटलों में मुख्य रूप से दक्षिण भारतीय भोजन मिलता है। इसके अलावा पर्यटकों को ध्यान में रखकर इंटर-कॉन्टीनेंटल तथा देश के अन्य प्रांतों के मुख्य भोजन भी उपलब्ध कराए जाते हैं।

यदि किसी पूरी तरह से शांत जगह पर छुट्टियां बिताना चाहते हैं तो खूबसूरत समुद्री तटों और जंगलों को समेटे अंडमान -निकोबार से बढ़कर अन्य कोई आदर्श स्थान नहीं है।

***सम्प्रति : द्वितीय वर्ष की छात्रा, होटल प्रबंध संस्थान, हैदराबाद, तेलंगाना**

आध्यात्मिक पर्यटन

हरिद्वार कुम्भ -2021

-डॉ. विदुषी शर्मा

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ कलश होता है। कुम्भ का पर्याय पवित्र कलश से होता है। इस कलश का हिन्दू सभ्यता में विशेष महत्व है। कलश के मुख को भगवान विष्णु, गर्दन को रुद्र, आधार को ब्रह्मा, बीच के भाग को समस्त देवियों और अंदर के जल को संपूर्ण सागर का प्रतीक माना जाता है। यह चारों वेदों का संगम है। इस तरह कुम्भ का अर्थ पूर्ण औचित्य है।

चुरादि-गणीय कुमुदः कुंदरः कुंदः पर्जन्यः पावनो-अनिलः ।

वास्तव में कुम्भ हमारी सभ्यता का संगम है। यह आत्म जागृति का प्रतीक है। यह मानवता का अनंत

प्रवाह है। यह प्रकृति और मानवता का संगम है। कुम्भ ऊर्जा का स्त्रोत है। कुम्भ मानव-जाति को पाप, पुण्य और प्रकाश, अंधकार का एहसास कराता है। नदी जीवन रूपी जल के अनंत प्रवाह को दर्शाती है। मानव शरीर पंचतत्वों से निर्मित है यह तत्व हैं-अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और आकाश। इसलिए कुम्भ अपने आप में एक पूर्ण सार्थकता लिए हुए है। कुम्भ भगवान विष्णु का ही नाम है। (विष्णु सहस्त्रनाम-श्लोक 87)

कुंभि (कुम्भ) आच्छादन धातु से उत्पन्न है। जो आच्छादन करता है, ढकता है। इसलिए ही वह कुम्भ है। इसे कमु कान्तै धातु से जोड़ने पर अमृत प्राप्ति की कामना का बोध होता है। इसलिए कुम्भ को पेट, गर्भाशय, ब्रह्मा, विष्णु की संज्ञा दी गई है। पृथ्वी लोक में कुम्भ, अर्धकुम्भ पर्व के सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति तीन ग्रह कारक हैं। सूर्य आत्मा है, चन्द्रमा मन है, बृहस्पति ज्ञान है। आत्मा अजर, अमर, नित्य तथा शान्त है, मन चंचल, ज्ञान मुक्ति कारक है। आत्मा में मन का लय होना, बुद्धि का स्थिर होना नित्य मुक्ति का हेतु है। ज्ञान की स्थिरता तभी संभव है जब बुद्धि स्थिर हो। देवी बुद्धि का कारक गुरु है। बृहस्पति का स्थिर राशियों वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ में होना ही बुद्धि का स्थैर्य है। चन्द्रमा का सूर्य से युक्त होना अथवा अस्त होना ही मन पर आत्मा का वर्चस्व है। आत्मा एवं मन का संयुक्त होना स्वकल्याण के पथ पर अग्रसर होना है। कुम्भ , अर्ध कुम्भ को हम शरीर, पेट, समुद्र, पृथ्वी, सूर्य, विष्णु के पर्यायों से सम्बद्ध करते हैं पर समुद्र, नदी, कूप आदि सभी कुम्भ के प्रतीक है। वायु के आवरण से आकाश, प्रकाश से समस्त
लोकों को आवृत्त करने के कारण सूर्य नाना प्रकार की कोशिकाओं, स्नायु तंत्रों से आवृत्त रहता है, इसलिए कुम्भ है। कुम्भ इच्छा है, कामवासना रुप को आतृप्त करने के कारण काम ब्रह्मा है। चराचर को धारण करने, उसमें प्रवृष्ट होने के कारण विष्णु स्वयं पूर्ण कुम्भ है।

कुम्भ पर्व हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुम्भ स्थल हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में स्नान करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष और प्रयाग तथा हरिद्वार में दो कुम्भ पर्वों के बीच छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुम्भ भी होते हैं। खगोल गणनाओं के अनुसार यह मेला मकर संक्रांति के दिन प्रारम्भ होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशि में और बृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रांति के होने वाले इस योग को "कुम्भम स्नान-योग" कहते हैं। विशेषकर उत्तराखंड की तीर्थ नगरी हरिद्वार का कुम्भ तो महाकुम्भ कहा जाता है।

हरिद्वार में कुम्भ काल :

नक्षत्रों के इस विशेष संयोग के दौरान कल-कल बहती मोक्षदायिनी पतित पावनी श्री मां गंगा का पावन जल अमृतमयी हो जाता है। इसी समय गंगा की पावन धारा में अमृत का सतत प्रवाह होता है। इसी समय कुम्भ स्नान का संयोग बनता है। विशेष नक्षत्र, विशेष परिस्थितियों में पावन गंगा के पवित्र जल के पूजन और स्नान मात्र से ही व्यक्ति बैकुंठ की प्राप्ति का हकदार बन जाता है। समस्त पापों और कष्टों का निवारण हो जाता है और आत्मा शुद्ध हो जाती है। साथ ही परमात्मा का अंतः करण में वास हो जाता है। इसलिए कुम्भ पर्व एक अमृत स्नान एवं अमृतपान की बेला है।

पद्मिनीनायके मेषे कुम्भ राशि गते गुरौ।
गंगाद्वारे भवेत् योग: कुम्भ नामा तदोत्तम:।।
(जब बृहस्पति कुम्भ राशि एवं सूर्य मेष राशि होते हैं, तब हरिद्वार में अमृत-कुम्भ योग होता है।)

वसंते विषुवे चैव घटे देवपुरोहिते।
गंगाद्वारे च कुन्ताख्य: सुधामिति नरो यत:।।

(बसंत ऋतु में सूर्य जब मेष राशि में संक्रमण करता है एवं देव पुरोहित बृहस्पति कुम्भ राशि में आते हैं, तब हरिद्वार में कुम्भ मेला होता है। इस योग से मानव सुधा यानी अमृत प्राप्त करता है।)

कुम्भ राशिगते जीवे यद्दिने मेषगेरवो।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति वर्ज्जनम्।।
(जिन दिनों में बृहस्पति कुम्भ राशि में एवं सूर्य मकर राशि में रहेंगे, उन्हीं दिनों हरिद्वार में कुम्भ स्नान करने पर पुनर्जन्म नहीं होता।)

कुम्भ महापर्वों का संबंध देवगुरु बृहस्पति और जगत आत्मा सूर्य के राशि परिवर्तन से जुड़ा है। लेकिन जिस कुम्भ राशि से कुम्भ पर्व मुख्य रूप से जुड़ा है उस राशि में बृहस्पति केवल हरिद्वार कुम्भ में ही प्रवेश करते हैं। प्रयागराज, उज्जैन और नासिक में बृहस्पति कुम्भस्थ नहीं होते।

हरिद्वार में गुरु के कुम्भस्थ होने के कारण माना जाता है कि चारों कुम्भ नगरों में कुम्भ का पहला महापर्व हरिद्वार में पड़ा था। उसी के बाद अन्य नगरों में कुम्भ शुरू हुए। शास्त्रों के अनुसार जिस समय चार नगरों में कुम्भ कलश छलके, उस समय कलश की सुरक्षा बृहस्पति और सूर्य के जिम्मे थी। यह दोनों ग्रह राशियों के हिसाब से चारों कुम्भ नगरों में कुम्भ का कारण बने।

हरिद्वार कुम्भ का वैशिष्ट्य

बृहस्पति के कुम्भ राशि में आने का परम सौभाग्य केवल हरिद्वार में प्राप्त हुआ। हरिद्वार ही एकमात्र ऐसा कुम्भ नगर है जहां बृहस्पति के कुम्भ और सूर्य के मेष राशि में आने पर कुम्भ महापर्व और मेला लगता है। शाही स्नान होते हैं। जबकि प्रयागराज में बृहस्पति के वृष और सूर्य के मकर राशि में आ जाने पर कुम्भ पर्व का महायोग आता है।

इसी प्रकार जब बृहस्पति का आगमन सिंह और सूर्य का प्रवेश मेष राशि में हो जाए तब उज्जैन कुम्भ होता है। नासिक में भी बृहस्पति और सूर्य के भी सिंह राशि में आने पर कुम्भ होता है। सूर्य जहां बारह महीनों में सभी बारह राशियों की यात्रा पूरी कर लेते हैं, वहीं बृहस्पति को एक राशि से दूसरी में जाने में बारह वर्ष लगते हैं।

यही कारण है कि कुम्भ मेला एक स्थान पर बारह वर्ष बाद आता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि उज्जैन और नासिक के कुम्भ मेले करीब एक वर्ष में ही होते हैं। खगोलीय गणित और राशि प्रवेश पर निर्भर कुम्भ मेला केवल हरिद्वार में ही कुम्भस्थ होता है। प्रयाग कुम्भ को वृषस्थ, उज्जैन और नासिक कुम्भ मेलों को सिंहस्थ कहते हैं। कुम्भस्थ होने के कारण हरिद्वार कुम्भ को ही पहला कुम्भ माना जाता है।

पौराणिक मान्यताएं: पुराणों के अनुसार हिमालय के उत्तर में क्षीरसागर है, जहां देवासुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था। मंथन दंड था- मंदर पर्वत, रज्जु था- वासुकि तथा स्वयं विष्णु ने कूर्म रूप में मंदर को पीठ पर धारण किया था। समुद्र मंथन के समय क्रमश: पुष्पक रथ, ऐरावत हाथ, परिजात पुष्प, कौस्तुभ, सुरभि, अंत में अमृत कुम्भ को लेकर स्वयं धन्वंतरि प्रकट हुए थे। उक्त कुम्भ को उन्होंने इंद्र को दिया था।

इंद्र ने उसे अपने पुत्र जयंत को सौंपा दिया। देवताओं की सलाह पर जयंत उस कुम्भ को लेकर स्वर्ग की ओर दौड़ा। यह देखकर शुक्राचार्य ने क्रोधित होकर दैत्यों को आदेश दिया कि उससे कुम्भ को बलपूर्वक छीन लें। देवासुर संग्राम होने लगा। 12 दिन तक युद्ध करने के बाद देवताओं का दल हार गया। इसी बीच पृथ्वी के कई स्थानों पर कुम्भ को छिपाया गया था। जिन चार स्थानों पर कुम्भ रखा गया था,

उन्हीं स्थानों पर तब से 'कुम्भ योग पर्व' मनाया जा रहा है। देवताओं के 12 दिवस नरलोक (पृथ्वीलोक) में 12 वर्ष होते हैं। यही वजह है कि प्रति 12 वर्ष के पश्चात कुम्भ में स्नान करने के लिए यह महोत्सव होता है।

देवानां द्वादशाहोभिर्मर्त्यै द्वार्दशवत्सरै:।
जायन्ते कुम्भ पर्वाणि तथा द्वादश संख्यया:।।

कुम्भ **पर्व** अपनी ऐतिहासिकता के साथ ही अपने वैभव के लिए दुनियाभर में विख्यात है और कुम्भ मेले के बारे में ऐतिहासिक दस्तावेज सिर्फ भारत में ही नहीं मिलते हैं, बल्कि कई विदेशी यात्री भी कुम्भ मेले के बारे में सदियों से लिखते रहे हैं। इन ऐतिहासिक किताबों को यदि खंगाला जाए तो कुम्भ मेले से संबंधित कई रोचक कहानियां मिलती है। ऐसा ही एक वर्णन चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी किया है। चीनी यात्री ह्वेनसांग जब भारत भ्रमण के लिए आया था, उसी दौरान भारत में कुम्भ मेले का भी आयोजन हुआ था। पहली बार इतनी बड़े विशाल मेले का आयोजन देखकर ह्वेनसांग चकित रह गया था और उसे अपनी आंखों पर यकीन नहीं हो रहा था कि साधु संतों का इतना विशाल धार्मिक मेला भी धरती पर आयोजित होता है।

ह्वेनसांग ने 644 ईस्वी में प्रयाग में आयोजित कुम्भ मेले की यात्रा की थी। उसने जब इस मेले में जानकारी हासिल की थी तो उसे बताया गया था कि कुम्भ मेले के आयोजन का उल्लेख महाभारत में भी मिलता है। ह्वेनसांग ने लिखा कि भारत में हर तीन साल के क्रम पर हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन में विशाल कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है और 12 वर्ष के अंतराल पर इन चार नगरों में कुम्भ मेला लगता है।

644 ईस्वी सन में प्रयाग में आयोजित कुम्भ मेले को लेकर ह्वेनसांग ने लिखा कि तत्कालीन सम्राट हर्षवर्धन कुम्भ मेले को लेकर काफी उत्साहित थे और उन्होंने इसके आयोजन हेतु अपना राजकोष खोल दिया था। ह्वेनसांग लिखते हैं कि बीते पांच वर्षो में जितना भी कर संग्रहण किया जाता था, सम्राट साधु संन्यासियों और तीर्थयात्रियों को दान में दे देते थे। साथ ही ह्वेनसांग यह भी बताते है कि जब कुम्भ मेले का भ्रमण करके वह अपने देश चीन लौट रहे थे तब सम्राट हर्षवर्धन उन्हें कई रत्न और स्वर्ण आभूषण देना चाहते थे, लेकिन ह्वेनसांग ने इसे लेने से मना कर दिया था।

कुम्भ की वैदिक प्रामाणिकता

पौराणिक विश्लेषण से यह साफ़ है कि कुम्भपर्व एवं गंगा नदी आपस में सम्बंधित हैं। गंगा प्रयाग में बहती हैं परन्तु नासिक में बहने वाली गोदावरी को भी गंगा कहा जाता है, इसे हम गोमती गंगा के नाम से भी पुकारते हैं। क्षिप्रा नदी को काशी की उत्तरी गंगा से पहचाना जाता है। यहां पर गंगा गंगेश्वर की आराधना की जाती है। इस तथ्य को ब्रह्म पुराण एवं **स्कंद पुराण** के दो श्लोकों के माध्यम से समझाया गया है-

"विन्ध्यस्य दक्षिणे गंगा गौतमी सा निगद्यते उत्तरे सापि विन्ध्यस्य भगीरत्यभिधीयते ।"
"एव मुक्त्वा गता गंगा कलया वन संस्थिता गंगेश्वरं तु यः पश्येत स्नात्वा शिप्राम्भासि प्रिये।"

ज्योतिषीय गणना के अनुसार कुम्भ पर्व चार प्रकार से आयोजित किया जाता है :

1. कुम्भ राशि में बृहस्पति का प्रवेश होने पर एवं मेष राशि में सूर्य का प्रवेश होने पर कुम्भ का पर्व हरिद्वार में आयोजित किया जाता है।

"पद्मिनी नायके मेषे कुम्भ राशि गते गुरोः । गंगा द्वारे भवेद योगः कुम्भ नामा तथोत्तमाः।।"

2. मेष राशि के चक्र में बृहस्पति एवं सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में प्रवेश करने पर अमावस्या के दिन कुम्भ का पर्व प्रयाग में आयोजित किया जाता है।

''मेष राशि गते जीवे मकरे चन्द्र भास्करौ । अमावस्या तदा योगः कुम्भ ख्यस्तीर्थ नायके ।।"

एक अन्य गणना के अनुसार मकर राशि में सूर्य का एवं वृष राशि में बृहस्पति का प्रवेश होनें पर कुम्भ पर्व प्रयाग में आयोजित होता है।

3. सिंह राशि में बृहस्पति के प्रवेश होने पर कुम्भ पर्व गोदावरी के तट पर नासिक में होता है।

"सिंह राशि गते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ । गोदावर्या भवेत कुंभों जायते खलु मुक्तिदः ।।"

4 सिंह राशि में बृहस्पति एवं मेष राशि में सूर्य का प्रवेश होने पर यह पर्व उज्जैन में होता है।

"मेष राशि गते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ । उज्जियन्यां भवेत कुंभः सदामुक्ति प्रदायकः ।।"

पौराणिक ग्रंथों जैसे नारद पुराण (2/66/44), शिव पुराण (1/12/22/-23) एवं वाराह पुराण (1/71/47/48) और ब्रह्मा पुराण आदि में भी कुम्भ एवं अर्द्ध कुम्भ के आयोजन को लेकर ज्योतिषीय विश्लेषण उपलब्ध है। कुम्भ पर्व हर तीन वर्ष के अंतराल पर हरिद्वार से शुरू होता है। कहा जाता है कि हरिद्वार के बाद कुम्भपर्व प्रयाग, नासिक और उज्जैन में मनाया जाता है। प्रयाग और हरिद्वार में मनाए जाने वाले कुम्भ पर्व में एवं प्रयाग और नासिक में मनाए जाने वाले कुम्भपर्व के बीच में तीन सालों का अंतर होता है।

कुम्भ तीर्थ का महत्व

कुम्भ मेला हिंदू तीर्थ यात्रियों का एक बड़ा तीर्थ स्थान है। कुम्भ को विश्व के सबसे बड़े तीर्थ आयोजन के रूप में उल्लेखित किया जाता है।

'तरति पापादिकं यस्मात्'॥'
(अर्थात जिसके द्वारा मनुष्य पापादि से तर (मुक्त) जाए, उसे 'तीर्थ' कहते हैं।)
अथर्ववेद में तीर्थों का महात्म्य बताते हुए कहा गया है-

'तीर्थैस्तरन्ति प्रवति महीरिति यज्ञकृतः सुकृतो येन यन्ति॥'

(बड़े- बड़े यज्ञों का अनुष्ठान करनेवाले पुण्यात्माओं को जो स्थान प्राप्त होता है, शुद्ध मन से तीर्थयात्रा करनेवाले को भी वही स्थान प्राप्त होता है)

महाभारत के वनपर्व में वेद व्यासजी ने तीर्थयात्रा का महत्त्व बताते हुए कहा है

'तीर्थाभिगमनं पुण्यं यज्ञैरपि विशिष्यते॥'
(अर्थात तीर्थयात्रा पुण्यकार्य है, यह सब यज्ञों से बढ़कर है)
वामन पुराण में वर्णन आया है-

'तीर्थानां स्मरणं पुण्यं दर्शनं पापनाशनम्॥'
(अर्थात तीर्थों का स्मरण पुण्यदायी, तीर्थदर्शन पापों का नाश करनेवाला और तीर्थस्नान मुक्तिकारक है।)

स्कंद पुराण के काशीखंड में उल्लेख है-

'स्नानं मुक्तिकरं प्रोक्तमपि दुष्कृतकर्मण॥'
(यदि मन में ही दोष भरा है तो वह तीर्थस्नान से शुद्ध नहीं होता।)
कुम्भ के साथ ही अर्धकुम्भ का सम्बन्ध जुड़ा हुआ है।

चतुरा: कुंभा चतुर्धा ददामि (अथर्ववेद- 4/34/7)

इस प्रकार हम देखते हैं की कुम्भ पर्व का महत्व सार्वकालिक है,सार्वभौमिक है ।

कोरोना महामारी और हरिद्वार कुम्भ :

इतिहास साक्षी है की वैदिक काल से हमारे यहां कुम्भपर्व का आयोजन होता चला आ रहा है। परंतु किसी भी प्रकार की महामारी भारत में कभी भी दिखाई नहीं पड़ी है । यह सब पश्चिमी सभ्यताओं और पश्चिमी देशों से ही उत्पन्न होती है जो यहां तक फैलती है । वर्तमान में भी कोरोना महामारी इसका एक जीवंत उदाहरण है। इसी महामारी के दौरान ही हरिद्वार में कुम्भ पर्व का आयोजन किया जाएगा, जिसके चलते केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा बहुत से विशेष प्रबंध किए गए हैं।

राज्य सरकार ने कुम्भपर्व के लिए अब एक अप्रैल से 30 अप्रैल तक की अवधि निर्धारित की है। मुख्य सचिव की अध्यक्षता में हुई उच्च स्तरीय बैठक में यह निर्णय लिया गया। जल्द ही कुम्भपर्व के संबंध में राज्य सरकार द्वारा आधिकारिक अधिसूचना जारी कर दी जाएगी। कोरोना संक्रमण को देखते हुए पहले कुम्भपर्व की अवधि 27 फरवरी से 27 अप्रैल, 2021 तक प्रस्तावित की गई थी। हालांकि इससे पहले कुम्भपर्व जनवरी से शुरू होकर अप्रैल तक, चार महीने के लिए आयोजित होता था।

हरिद्वार महाकुम्भ के लिए राज्य सरकार व केंद्र सरकार की ओर से दिशा-निर्देश भी जारी कर दिए हैं। दिशा'-निर्देशों के अनुसार, गंगा स्नान के लिए आने वाले लोगों को 72 घंटें पहले तक आरटीपीसीआर प्रणाली से की गई कोरोना वायरस जांच की निगेटिव रिपोर्ट दिखाना अनिवार्य है।

रजिस्ट्रेशन कराना होगा अनिवार्य :

हरिद्वार महाकुम्भ जाने वाले श्रद्धालुओं को राज्य सरकार के कुम्भ मेला से संबंधित वेब पोर्टल पर भी पंजीकरण करना अनिवार्य होगा और पंजीकरण संबंधी ई-पास भी अपने पास रखना होगा। साथ ही आरोग्य सेतु एप को भी अपने मोबाइल में चालू रखना होगा।

महाकुम्भ के समय गंगा स्नान और पूजन का महत्त्व :

गंगा नदी हिंदुओं के लिए देवी और माता समान है। इसीलिए हिंदुओं के लिए गंगा स्नान का बहुत महत्व है। गंगा जीवन और मृत्यु दोनों से जुडी हुई है इसके बिना हिंदू संस्कार अधूरे हैं। गंगाजल अमृत समान है। अनेक पर्वों और उत्सवों का गंगा से सीधा संबंध है मकर संक्राति, कुम्भ और गंगा दशहरा के समय गंगा में स्नान, पूजन, दान एवं दर्शन करना महत्त्वपूर्ण माना गया है। गंगा पूजन एवं स्नान से ऋद्धि-सिद्धि, यश-सम्मान की प्राप्ति होती है तथा अशुभ ग्रहों का प्रभाव समाप्त होता है। गंगाजी में स्नान करने से सात्विकता और पुण्यलाभ प्राप्त होता है।

गंगाजल का महत्व : अर्धकुम्भ प्रयाग तथा हरिद्वार में ही क्यों होता है? इस प्रश्न का उत्तर है कि गंगा के पवित्र जल में पर्यावरण की प्रधानता है। गंगा जल को वर्षों तक रखने के बाद भी इसमें कीड़े नहीं पड़ते है और न ही दूषित होता है। हड्डियों को गला देने वाली क्षमता केवल इसी जल में है। महाभारत में गंगा जल को चन्द्रायण व्रत से हजार गुना अधिक गुणकारी बताया गया है।

चन्द्रायण सहस्त्रेण यश्चरेत काय शोधनम्
यः पिबेद वै यथेष्टन्तु गंगाम्भः स विशिष्यते।।

महर्षि चरक ने विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ 'चरक संहिता' में लिखा है-

हिमवत्प्रभवाः पथ्यः पुण्या देवर्षि सेविताः।
पवित्र एवं देवताओं तथा ऋषियों द्वारा सेवित हिमालय से निकलने वाला गंगा जल पथ्य है। (चरक-सूत्रास्था 27/210)

बाणभट्ट ने अपने अष्टांग हृदयम में लिखा है :

हिमवन्मलयोदभूताः पथ्यस्ता एवं च स्थिराः।
हिमालय से निकलने वाला गंगा जल पथ्य है और वह कभी दूषित होने वाला नहीं है।

आयुर्वेद के प्रसिद्ध वैज्ञानिक चक्रपाणिदत्त ने लिखा है-

यथोक्त लक्षण हिमालय- भवत्या देव गंगा पथ्यं।।
हिमालय से निकलने और स्वास्थ्य वृद्धि के लिए यथोक्त लक्षण- युक्त होने के कारण गंगा जल पथ्य है।
भण्डारकर ओरियन्टल इंस्टीट्यूट , पूणे में सुरक्षित भोजन कुतुल नामक हस्तलिखित ग्रन्थ में लिखा है-
शीतं स्वादु स्वच्छमत्यतं रूच्य, पथ्य पाचनं पाप हारि।
तृष्णा मोह ध्वसनं दीपनं च प्रसादते वारि भागीरथीयम्।।
गंगा जल शीतल, स्वादिष्ट, स्वच्छ, अत्यंत रुचिकर पथ्य रोगी को देने योग्य, पाचन शक्ति बढ़ाने वाला, जठराग्नि को उद्दीप्त करने वाला, क्षुधा और बुद्धि को बढ़ाने वाला है।

फ्रान्सीसी डाक्टर डी.हेरेल, प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक ट्वेन, वर्लिन जर्मनी के डा.जे.ओलिवर(1924में) डॉ.ईएफके हिमान ने (1931 में) वर्षों तक गंगा जल का परीक्षण और उपयोग करने के बाद लिखा है कि गंगाजल में औषधि के सम्पूर्ण गुण विद्यमान यथावत मिले। इसमें हर प्रकार के किटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता है। 1894 में हुई **इण्डियन मेडिकल कांग्रेस** में भारतीय नदियों के कीटाणु नामक शोध पत्र में स्पष्ट किया गया कूप जल में कीटाणु बढ़ते है, जबकि दोनों नदियों के जल में कीटाणु नष्ट हो जाते है।

अब्दुल फजल अपनी **आइने अकबरी** पुस्तक में लिखते है: बादशाह अकबर गंगा जल को अमृत समझते थे। वे पीने तथा भोजन में गंगा जल का उपयोग करते थे।

हरिद्वार कुंभ यात्रा 2021:एक स्वार्गिक अनुभूति

हम अक्सर सोचते रहते हैं कि दैनिक कार्यों से कभी थोड़ा सा अवकाश मिलेगा तो हम तीर्थ यात्रा को जाएंगे। अमूमन हम तीर्थ यात्राओं को वृद्धावस्था के लिए ही छोड़ देते हैं। परंतु मेरा ऐसा मानना है कि जब भी इस प्रकार के अवसर प्राप्त हों तो उन्हें सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए। वैसे तो सब कुछ ईश्वरेच्छा से संपन्न होता है। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानती हूं कि मुझे जीवन में पहली बार कुंभ पर्व देखने का एक अविस्मरणीय अवसर प्राप्त हुआ।

हम 10 मार्च को ही हरिद्वार के लिए निकल गए। गंगा किनारे पर भजन कीर्तन का जो स्वार्गिक आनंद प्राप्त हुआ उसे शब्दों में व्यक्त कर पाना संभव नहीं है। मां गंगा का कल- कल स्वर, अथाह जल राशि, निरंतर गतिशीलता, अद्भुत सौंदर्य हमें बहुत कुछ सिखाता है। वास्तव में ही गंगा हमारी माँ है क्योंकि वह

हम सभी के अवगुणों को अपने में समेट लेती है। शिवरात्रि के दिन गंगा तट पर ही गंगाजल से रुद्राभिषेक होना बहुत बड़ा सौभाग्य प्रदान करने वाला है। शिवरात्रि का दिन हो, गंगा का किनारा हो और कुंभ पर्व हो ऐसा दुर्लभ संयोग बहुत कम मिलता है। इसी के साथ विद्वान पंडितों के द्वारा सस्वर रुद्राष्टकम, शिव तांडव स्त्रोत्रम का पाठ हो तो इस आनंदानुभूति के बारे में क्या कहा जा सकता है। तत्पश्चात गंगा तट पर ही हवन आदि धार्मिक अनुष्ठानों के द्वारा जितनी आत्मिक शांति और संतुष्टि प्राप्त हुई वह किसी स्वार्गिक आनंद से कम नहीं है । अपने अनुभव से मैं यह कहना चाहती हूं कि हम सभी को जीवन में एक बार कुंभ पर्व का भ्रमण अवश्य करना चाहिए। धन्य है हमारी सत्य सनातन धर्म संस्कृति, हमारी परंपराएं, हमारे मूल्य, हमारे पर्व आदि जो समय- समय पर आकर हम सभी को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य करते हैं। यही तो मानवीयता है, मानव धर्म है।

इसी को कहते हैं - मेरा भारत महान। धन्य है भारत भूमि।

***सम्प्रति : अकादमिक काउंसलर, IGNOU, Officer on Special Duty (OSD)**
National Institute of Open Schooling विशेषज्ञ, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
(सम्पर्क Email -drvidushisharma9300@gmail.com)

एक ग़ज़ल

वादा-ओ-जाम

– घनश्याम दास बैरवा

ला,पेश कर वो वादा-ओ- जाम(1),ऐ सादिक़ ओ शरीक ए गम(2), साक़ी
ना रहे आज की शब, कोई नशातआराई(3), शिक़वा ओ गम(4), बाकी ।
कैसे बताऊँ, हिसाब ए ज़ालिम-जमाना, किस पे हँसना,किस को रोना है बाकी
नहीं छोड़ी है, मेरे जाम ओ मीना ए हयात(5) में, बेमुरव्वत(6) ने, अब इतनी भी बाकी
दो पैसे की तेरी ये दुनियाँदारी, खुदगर्ज(7), फ़रेबी(8), बदगुमां(9) है ये सारी
क्यों चाहतों में दिल की इतनी मजबूरी,क्या बची है कोई नेकी बाकी ।
ये सिपर ए रंज ओ ग़म(10),ये परस्तिश ए रस्म ए जमाना(11),ये महाल ए कशिश(12)
ये शुआएं ए कहकशां,सम्त ए मयख़ाना(13), कैसे रहे,मेरा नातवां(14) इमां बाकी
मायूशओ बिस्मिल(15) को, बे-तअस्सुब(16) है, तेरी ये मसावी(17) तक्शीम ए ख़ुश-नसीबी(18)
आये जो तेरे दर, देखते है, अब ये नज़ारा ए सरशारी ए रिंदाना(19), साकी ।
छलकते है, यहाँ टूटे पैमाने हर शब, लानत ए ज़माना(20) है, कौन खुश है यहाँ
सब जी का बहलाना है, तू ही कर अता कुछ,जिन्दा नफ़्स ए तवानाई(21), साकी ।
मजरूह(22) हूँ, नहीं दरकार(23), मुझे इन्तेहाई(24) दर्द, हैफ़,(25) बेजा है तेरी ग़फ़लतें(26)
दरकते खंडहर की, आखिरी मायूश ख़्वाहिश हूँ, क्या है तेरी रज़ा(27) बाक़ी ।
ला,पेश कर वो बादा-ओ- जाम(1),ऐ सादिक़ ओ शरीक ए गम(2), साक़ी...

उर्दू तथा फारसी शब्दों के हिन्दी में अर्थ (1)शराब और प्याला, (2) वफादार और तकलीफ में शामिल, (3)आनंद की सजावट,(4)तकलीफ की शिकायत, (5)जीवन रूपी शराब का प्याला और सुराही, (6) लापरवाह/अमानवीय, (7)स्वार्थी, (8)धोखेबाज,(9) बुरी धारणा वाली, (10)दुख और तकलीफ की ढ़ाल, (11)ज़माने के रिवाजों की पूजा,(12)खौफनाक आकर्षण, (13)शराबखाने की दिशा में आकाशगंगा की किरणें,(14)कमजोर, (15)हताश और घायल,(16)पक्षपात से दूर,(17)समान, (18)अच्छे भाग्य का बँटवारा, (19) मतवालों का आनंद जैसा का दृश्य,(20) ज़माने को धिक्कार, (21)आत्मा की ताक़त, (22)आहत/ घायल,(23)जरुरत/परवाह,
(24)अत्यधिक/पराकाष्ठा, (25) गलत, (26)बेख़बरी, (27) इच्छा

*** संप्रति : सहायक निदेशक, भारतपर्यटन, सिंगापुर कार्यालय, पर्यटन मंत्रालय। अतुल्य भारत में निरंतर योगदान।**

कविताएं

बुढ़ापा एक कड़वा सच

- सुश्री **कंचन बडोला**

कहते हैं कि मां बाप भगवान है
तो बुढ़ापे में अकेले रहना क्यों बहुत आम है ?
गुस्सा आता है ना उन पर जब बड़े हो जाते है
और हर बात में मां-बाप टोके जाते है ।
और वह यही सोचते हो कि ?
अब तो बड़े हो गए हैं, क्यों हम इनकी सुने।
अगर कहीं ना कहीं ये सोचते हो कि
हम इनकी सुन लेते हैं, तो वह क्यों
सिर्फ इसलिए न जो तुम्हारा नाम है
वो बस इनकी दी हुई पहचान है।
बड़े होकर औलाद कहती है अपनी आदतें बदलों
पर असल बात तो यह है बच्चों की
बदलते वो नहीं बदलना तो हमारा काम है। तो क्या तू छोड़ देगा उन्हें ?
वह हमेशा तुझे दुआ ही देंगे तुझे।
फिक्र ना कर दुआ लग भी जाएगी
पर उनके आंसू तो तेरे वजह से बहे हैं,
वो तुझे कैसे छोड़ेंगे
तेरे कर्म तो बुरे हैं खुशियां कैसे आएगी ?
वह कहते हैं बेटा सुन....
और तू है कि बोलता नहीं है,
तेरे भी बच्चे होंगे एक दिन क्या
तू यह भी सोचता नहीं ।
देख वह भी छोड़ रहे तुझे, तेरे गले में अटकी जिनकी जान हैं।
अब तू भी यही कहेगा।।
अगर मां बाप का प्यार भगवान है
तो बुढ़ापे में अकेले रहना क्यों बहुत आम?

* संप्रति : पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली । अतुल्य भारत में निरंतर योगदान।

रफ्तार कुछ जिंदगी की यूं बनाए रख गालिब,
दुश्मन भले आगे निकल जाए, पर दोस्त पीछे न छूटें!
-मिर्जा गालिब

कविताएं - **डॉ. विश्वरंजन**

चांदनी रात

जो बोल न सकूं
उसे एहसास से समझा जाए ।
बदलते हालात को,
रिश्ते के धागों मे पिरोया जाए ।
कब तक यूँ हीं,
मिलन का खवाब देखें।।
इस चाँदनी रात में,
धीमी धीमी बरसात में,
बुलबुल की मीठे बोल में,
नदियों मे बहती धारा के शोर मे,
फना होने का ऐतबार हो जाए ।।
हर अदा
अगर इस तस्वीर मे तुम हो,
तो तुम्हारी हर अदा पर लाखों कुरबान।।
ये मुस्कुराहट,
मासूम निगाहें,
कुमलाई चेहरा,
ये तो! अमृत की वरदान हैं।।
रूह से कहु,
झुक कर सजदा करू,
इस आबरु को,
धरती पर लाने वाले को सलाम।।
अगर तुम, इस तसवीर मे हो,
तो तुम्हारी हर अदा पर,
सरगम की गूँजती है, हर तान ।

क्या बात होगी !

कुछ तो बात होगी
चाहे वो कही हो,
मेरी! कुछ तो बात होगी ।
ख़्वाब हो या हकीकत,
दूर हो या पास,
एहसासों की, कुछ तो बात होगी ।
एक पल के लिये ही सही,
नजरों की नजरों से कुछ तो बात होगी ।
खबर हो या बेखबर,
जब भी मिले खबर,
तो संग बीते कल की,
कुछ तो बात होगी ।
जब बातो ही बातों में,
जज्बातों की माला गुथी जाए।
देख अटल इरादे मेरे,
अमृत की धार
शिखर से, धरा पर फैल जाए।।
चांदनी रात हो
तेरा जब साथ हो
तो फिर! वही बात होगी।।

सम्प्रति : परामर्शदाता, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग
जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
ईमेल- vishwranjan@yahoo.com
मो. 9852583535

याद इन्हें भी कर लें। **संगीत मार्तंड पंडित जसराज**

हमारे देश में शास्त्रीय संगीत गायन कला सदियों से चली आ रही है। इस कला को मनोरंजन ही नहीं बल्कि ईश्वर से जुड़ने का एक स्रोत माना गया है। ऐसे में एक आवाज़ थी संगीत के मेवाती घराने के पंडित जसराज की । जिन्होंने छोटी उम्र में ही जिंदगी की कठोर हकीकतों की दुनिया में अपने दिवंगत पिता से विरासत के रूप में मिले सात स्वरों के साथ क़दम रखा था।

पंडित जी का जन्म 28 जनवरी,1930 को हिसार के एक ऐसे परिवार में हुआ जिसने चार पीढ़ियों से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को एक से बढ़कर एक संगीत शिल्पी दिए हैं। उनके पिता पंडित मोतीराम जी स्वयं मेवाती घराने के गायक थे। जसराज जब मात्र तीन वर्ष के थे, प्रकृति ने उनके सर से पिता का साया छीन लिया। संयोग से पंडित मोतीराम जी का देहांत उसी दिन हुआ जिस दिन उन्हें हैदराबाद और बिरार के निज़ाम उस्मान अली खां के दरबार में राज संगीतज्ञ घोषित किया जाना था। उनके बाद परिवार के लालन-पालन का भार जसराज के बड़े भाई पं. मणिराम के कंधों पर आ पड़ा। इन्हीं की छत्रछाया में जसराज ने संगीत शिक्षा को आगे बढ़ाते हुए तबला वादन सीखा।

मणिराम जी अक्सर अपने साथ बालक जसराज को तबला वादक के रूप में ले जाया करते थे। इस आलेख के प्रस्तुतकर्ता से बहुत पहले, बात करते हुए, पंडित जसराज जी ने बताया था, *'उस समय सारंगी वादकों और तबला वादकों को दोयम दर्जे का माना जाता था और श्रोता भी उनसे दूरी ही रखते थे। मेरी उम्र 14 वर्ष की रही होगी कि लाहौर में एक कार्यक्रम की समाप्ति पर जब कुछ श्रोता और पत्रकार मणिराम जी की ओर बढ रहे थे। मैने आगे आकर अभिवादन में हाथ जोड़े तो एक आदमी ने धक्का सा देकर कहा चलो हटो, जाकर* ***मरी खाल पीटो****। इस प्रकार के निम्न बर्ताव से दिल को ठेस लगी और उसी दिन से मैंने तबला फैंक दिया और प्रण लिया कि जब तक शास्त्रीय गायन में विशारद प्राप्त नहीं कर लूंगा, अपने बाल नहीं कटवाऊंगा।'*

इसके पश्चात् उन्होंने मेवाती घराने के दिग्गज महाराणा जयवंत सिंह वाघेला से तथा आगरा के स्वामी वल्लभदास जी से संगीत विशारद प्राप्त किया।

पं.जसराज की आवाज़ का फैलाव साढ़े तीन सप्तकों तक था। उनके गायन में शुद्ध उच्चारण और स्पष्टता मेवाती घराने की 'ख़याल' शैली की विशिष्टता को दर्शाता है। उनका 'हवेली संगीत' गायन सुन कर थोड़ा अचरज हुआ था क्योंकि बहुत ही कम गायक 'हवेली संगीत' का गायन करते हैं। पता चला कि उन्होंने बाबा श्याम मनोहर गोस्वामी महाराज के सान्निध्य में हवेली संगीत पर व्यापक अनुसंधान कर कई बंदिशों की रचना की थी। "रानी तेरो चिर जियो गोपाल...." उनमें से एक थी।

पंडित जी बेटी दुर्गा जसराज के साथ

भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनका एक और महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके द्वारा परिकल्पित एक अद्वितीय जुगलबन्दी, जो 'मूर्छना' की प्राचीन शैली पर आधारित है। इसमें एक महिला और एक पुरुष गायक अपने-अपने सुर में दो भिन्न रागों को एक साथ गाते हैं। पंडित जसराज के सम्मान में इस जुगलबन्दी का नाम 'जसरंगी' रखा गया।

पंडित जसराज ने एक अनूठी उपलब्धि भी हासिल की थी। वह सातों महाद्वीपों में कार्यक्रम पेश करने वाले पहले भारतीय थे। पंडित जी को वर्ष 2010 में पत्नी मधुरा के साथ उत्तरी ध्रुव के शहर 'लाँग ईयरबायेन' जाने का अवसर मिला तो उन्होंने वहां भी भारतीय संगीत की एक बैठक कर ली। उन्होंने 8

जनवरी, 2012 को दक्षिणी ध्रुव पर अंटार्कटिका तट पर 'सी स्प्रिट' नामक क्रूज पर गायन कार्यक्रम पेश किया था।

फ़िल्मों में गायन

शास्त्रीय गायन के इतर पंडित जसराज ने हिंदी फिल्मों में भी गाने गाए थे। उन्होंने पहली बार साल 1966 में फिल्म 'लड़की सह्याद्रि की' में अपनी आवाज दी थी। वी. शांताराम की इस फिल्म में उन्होंने 'वंदना करो मातृभमति की...', भजन को राग अहीर भैरव में गाया था। उन्होंने दूसरा गाना साल 1975 में आई फिल्म 'बीरबल माय ब्रदर' में गाया था। इसमें उन्होंने और भीमसेन जोशी ने राग मालकोंस में जुगलबंदी की थी। धीरज कुमार के सीरियल ''ओम नमो शिवाय'' के लिए शीर्षक गीत प्रस्तुत किया था ।

शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें पद्म विभूषण (2000), पद्म भूषण (1990) और पद्मश्री (1975) से सम्मानित किया था। दिल्ली घराना की 'सुर सागर सोसाइटी' ने संगीत मार्तंड, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, मास्टर दीनानाथ मंगेशकर अवार्ड, लता मंगेशकर पुरस्कार, महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार से भी सम्मानित किए गए थे।

कोरोना वायरस महामारी के कारण लॉकडाउन के बाद से वह न्यूजर्सी में ही थे। वहीं 17 अगस्त, 2020 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया।

पंडित जसराज जी की न केवल प्रस्तुतियां उत्कृष्ट थीं, बल्कि वह कई अन्य गायकों के लिए भी एक असाधारण गुरु साबित हुए। उनके निधन से भारतीय सांस्कृतिक क्षेत्र में एक गहरी रिक्तता आ गई है।
संगीत मार्तंड पंडित जसराज एक ऐसे कलाकार थे, जिन्होंने अपनी जादुई आवाज से भारतीय शास्त्रीय संगीत को समृद्ध किया।
अतुल्य भारत की ओर से श्रृधांजलि अर्पित ।

प्रस्तुति : मोहन सिंह (कंसल्टेंट, अतुल्य भारत, पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली)

पर्यटन मंत्रालय से इस तिमाही में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी

श्री आर के सुनानी	सहायक निदेशक	दिसम्बर, 2020

अतुल्य भारत की ओर से उन्हें शुभकामनाएं देते हुए हम उनके अच्छे स्वास्थ्य और सुखद जीवन की कामना करते हैं।

पर्यटन मंत्रालय के सचित्र समाचार और गतिविधियां

'देखो अपना देश'

महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर "चरखे पे चर्चा" वेबिनार

02 अक्टूबर**, 2020** : पर्यटन मंत्रालय ने 'देखो अपना देश' वेबिनार श्रृंखला के तहत महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर, 2020 को एक वेबिनार "चरखे पे चर्चा" का आयोजन किया। जिसमें चरखा और खादी पर ध्यान केंद्रित किया गया है। खादी, राष्ट्र का नैतिक परिधान है जो स्वराज्य और स्वावलंबन का एक रूपक है। विश्व इतिहास में कहीं भी आपको भारत की तरह एक कपड़े के आसपास उपनिवेशवाद विरोधी कहानी नहीं मिलेगी। विदेशी कपड़े के बहिष्कार से लेकर हाथ से कताई और बुनाई किया गया खद्दर और चरखा भारत के लिए एक राजनीतिक और भावनात्मक प्रतीक है और यह कहानी एक व्यक्ति महात्मा गांधी का उपहार है, जिनकी दृष्टि एक आत्मनिर्भर गांव और आध्यात्मिक स्वच्छता के लिए सभी को चरखे के सूत से बांधना था। वेबिनार में भारत के स्वतंत्रता संग्राम में खादी के आयामों की पड़ताल की गई और समकालीन खादी और बापू के संदेश के प्रसार में बेंगलुरु स्थित राष्ट्रीय फैशन प्रौद्यागिकी संस्थान (NIFT) की यात्रा का उल्लेख किया गया।

बेंगलुरु स्थित निफ्ट की निदेशक सुश्री सुसान थॉमस और निफ्ट में डिपार्टमेंट ऑफ़ डिज़ाइन स्पेस में एसोसिएट प्रोफेसर श्री प्रशान्त कोचुवेतिल चेरियन ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की शुरूआत गांधीजी के 'थ्री पीस सूट' से की गई जब वे दक्षिण अफ्रीका में वकील थे। 1915 में जब वे भारत लौटे तो उन्होंने ठेठ गुजराती पोशाक पहननी शुरू कर दी। तब रवींद्रनाथ टैगोर ने 1915 में उन्हें 'महात्मा' कहा था।

महात्मा गांधी ने 1918 में भारत के गांवों में रहने वाले गरीब लोगों के लिए राहत कार्यक्रम के रूप में खादी के लिए अपना आंदोलन शुरू किया। आत्मनिर्भरता और अपने देश के लिए एक विचारधारा के रूप में कताई और बुनाई को आगे बढ़ाया गया था। सभी गांव सूत के लिए अपना कच्चा माल तैयार करेंगे। सभी

महिला और पुरुष कताई करेंगे और सभी गांव अपने स्वयं के उपयोग के लिए जो कुछ भी आवश्यक होगा, उसकी बुनाई करेंगे। गांधी ने इसे विदेशी सामग्रियों पर निर्भता के अंत के रूप में देखा और इस तरह पहला पाठ या वास्तविक स्वतंत्रता दी। उस समय पूरा कच्चा माल इंग्लैंड को निर्यात किया जाता था और फिर वहां से महंगे तैयार कपड़े के रूप में फिर से आयात किया जाता था। इससे स्थानीय आबादी को इसमें काम और लाभ नहीं मिलता था। खादी आंदोलन की शुरूआत केवल राजनीतिक नहीं थी बल्कि यह आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तनों का प्रतीक बन गई थी ।

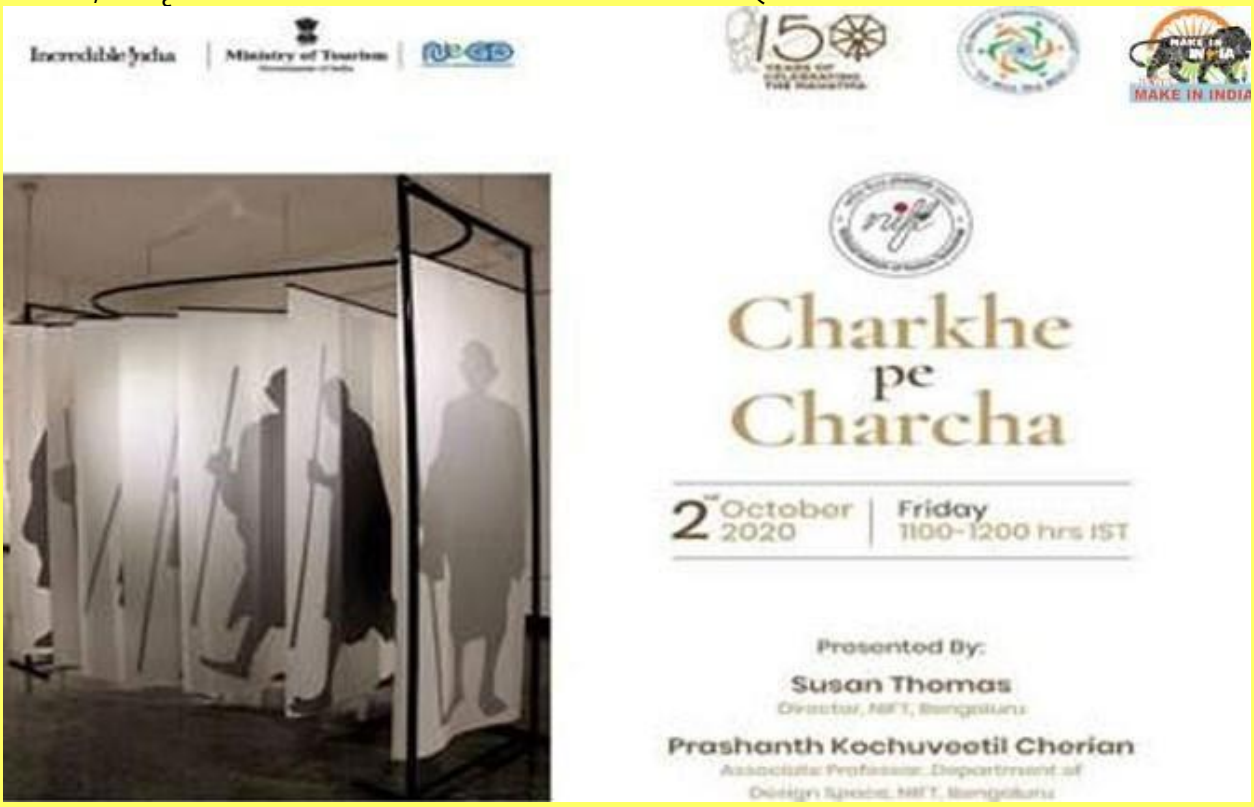

यह मदुरई ही था जिसने पूर्ण अर्थ में गांधी को महात्मा बनाया। इसके लिए, यहीं पर उन्होंने पश्चिमी परिधान का परित्याग किया और खादी पहनी, जो उनकी मृत्यु तक उनका प्रतीक चिन्ह बनी रही। 20 सितंबर, 1921 को मदुरई की अपनी दूसरी यात्रा के दौरान गांधी पश्चिम मासी स्ट्रीट में रुके थे और जब उन्होंने दिहाड़ी मजदूरों को बिना कमीज के काम करते हुए देखा तो वह उनकी दुर्दशा से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अपने वस्त्र त्याग दिए और 21 सितंबर की रात में चार मीटर की खादी की धोती पहनी।

अगले दिन 22 सितंबर, 1922 को वह कामराज स्ट्रीट में एक जगह पर लोगों को संबोधित करने गए। उस जगह को अब 'गांधी पोट्टल' कहा जाता है। संबोधन के दौरान उन्होंने केवल खादी वेष्टि (धोती) पहन रखी थी। 1921 में जिस स्थान पर वह रहे वहां अब खादी की दुकान है और इमारत में एक पत्थर पर इस परिधान के ऐतिहासिक परिवर्तन की कहानी बताई गई है।

1934-35 में उन्होंने गरीबों की मदद करने से लेकर पूरे गांवों को आत्मनिर्भर बनाने के विचार का विस्तार किया। 1942-43 में उन्होंने पूरे देश में बड़े पैमाने पर पूरे कार्यक्रम को फिर से आयोजित करने के लिए श्रमिक समूहों और गांव के लोगों के साथ सभाएं की। इस प्रकार खादी केवल कपड़े का टुकड़ा नहीं बल्कि जीवन का एक आधार बन गई।

श्री चेरियन ने 'खादी की कहानी' से अपनी प्रस्तुति की शुरुआत करते हुए बताया कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक के रूप में खादी का जन्म साबरमती आश्रम में हुआ। आश्रम के सभी निवासियों को कहा गया कि सभी को भारतीय धागों से बने हाथ से बुने हुए कपड़े पहनने चाहिए। सवाल था कि हाथ से काता जाने वाला सूत कैसे बनाया जाए। चरखा उपलब्ध नहीं था और न ही कोई ऐसा व्यक्ति था जो कताई सिखा सके।

आश्रम के सामने आ रही इस समस्या का हल गंगाबेन मजूमदार ने निकाला। मजूमदार से गांधीजी ब्रोच एजुकेशनल कॉन्फ्रेंस में मिले थे। उन्हें बड़ौदा राज्य के विजापुर में गांधीजी के लिए चरखा मिला। इस प्रकार, चरखा आश्रम में आया और खादी का उत्पादन शुरू हुआ। उसके बाद से गांधीजी ने केवल हाथ से बुने हुए धागे से बनी धोती पहनी, बल्कि खादी स्वदेशी की अंतिम परिभाषा बन गई।

अपर महानिदेशक सुश्री रुपिंदर बराड़ ने कहा कि हमें न केवल अपनी विरासत और संस्कृति पर गर्व करना चाहिए बल्कि खादी खरीद और पहन कर कारीगरों के उत्थान और प्रोत्साहन की दिशा में भी कुछ करना चाहिए। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम गांधीजी द्वारा दिखाई गई मूल्य प्रणालियों को जिएं और उन्हें दूर-दूर तक फैलाएं। 'देखो अपना देश' वेबिनार श्रृंखला एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत भारत की समृद्ध विविधता को प्रदर्शित करने का एक प्रयास है।

'देखो अपना देश'

"गांधी, अहमदाबाद और नमक मार्च" पर वेबिनार

04 अक्टूबर, 2020 : पर्यटन मंत्रालय ने इस साल राष्ट्रपिता की जयंती के अवसर पर उन्हें वेब स्क्रीन पर श्रद्धांजलि अर्पित की और एक अक्टूबर से शुरू हुए वेबिनार की एक श्रृंखला के साथ उनके दर्शनों और शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए 03 अक्टूबर 2020 से 'गांधी, अहमदाबाद और नमक मार्च' विषय पर एक सत्र का आयोजन किया।

1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद, श्री गोपाल कृष्ण गोखले ने गांधी जी को स्वतंत्रता आंदोलन शुरू करने के लिए पूरे भारत की यात्रा करने और अपने लिए एक जगह तय करने की सलाह दी। गांधी जी ने आखिरकार अहमदाबाद को चुना और 12 मार्च 1930 तक वहां रहे। इसके बाद वह छह अप्रैल की सुबह नमक कानून तोड़ने के लिए अपने प्रसिद्ध दांडी मार्च के लिए रवाना हुए और अंततः उन्हें पांच मई को गिरफ्तार कर पुणे ले जाए गए।

गुजरात पर्यटन के प्रबंध निदेशक और आयुक्त श्री जेनु देवन और दांडी पथ विरासत प्रबंधन केंद्र के सदस्य सचिव एवं सलाहकार और गुजरात विद्यापीठ के ओरिएंटल स्टडीज और हेरिटेज मैनेजमेंट रिसोर्स सेंटर के निदेशक श्री देबाशीष नायक ने यह वेबिनार प्रस्तुत किया।

श्री देबाशीष नायक ने बताया कि अहमदाबाद में अपने प्रवास के दिनों में गांधी जी को लोगों का समर्थन कैसे मिला। जब गांधी दक्षिण अफ्रीका से लौटे, तो उन्होंने अपना आधार स्थापित करने के लिए अहमदाबाद को चुना। 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत आने के कुछ महीनों के भीतर, गांधी ने अहमदाबाद में एक सत्याग्रह आश्रम स्थापित किया।

श्री देवाशीष नायक ने आगे कहा कि गांधी जी 1913 और 1930 के बीच अहमदाबाद में रहे। उन्होंने 1920 में गुजरात विद्यापीठ की नींव रखी और 1930 में यहीं से ऐतिहासिक दांडी मार्च शुरू किया था। अहमदाबाद में अपने प्रवास के वर्षों में उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को छोटे स्तर से लेकर एक बड़े जन आंदोलन में बदल दिया।

वेबिनार की शुरुआत में, गुजरात पर्यटन के प्रबंध निदेशक श्री जेनु देवन ने पर्यटन मंत्रालय के साथ गुजरात सरकार द्वारा महात्मा गांधी से जुड़े उन स्थानों की पहचान करने और पर्यटन मंत्रालय की सहायता

से स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत स्वीकृत अहमदाबाद-राजकोट-पोरबंदर-बारदोली-दांडी को कवर करने वाले गांधी परिपथ में किए गए पर्यटन अवसंरचना के विकास के बारे में बताया। उन्होंने उल्लेख किया कि कैसे गुजरात सरकार साइकिल यात्रा, आध्यात्मिक लाइव कॉन्सर्ट, दांडी में एक वीडियो शो आदि गतिविधियों के माध्यम से गांधी जी के दर्शन के प्रति युवाओं की भागीदारी पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

वक्ताओं ने इस बात का भी उल्लेख किया कि गांधी ने किस तरह अमेरिका के सबसे प्रसिद्ध नागरिक अधिकार नेता मार्टिन लूथर किंग जूनियर सहित पूरी दुनिया के लोगों को प्रभावित किया है। मार्टिन लूथर ने अपने नागरिक अधिकार आंदोलन में अहिंसा के गांधीवादी सिद्धांत को अपनाया था।

गांधीवादी दर्शन को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देने के उद्देश्य से, पर्यटन मंत्रालय गुजरात सरकार के साथ मिलकर देश भर में गांधी विरासत स्थलों को विकसित करने के लिए तैयार है। महात्मा गांधी की दांडी यात्रा की स्मृति में दांडी हेरिटेज कॉरिडोर और गांधीजी से जुड़े अन्य स्थानों पर पर्यटकों को आकर्षित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। दांडी यात्रा के 349 कि.मी. लंबे दांडी –साबरमती मार्ग के उन 21 स्थानों को, जहां गांधीजी ने 12 मार्च से 6 अप्रैल 1930 तक की ऐतिहासिक दांडी यात्रा के दौरान रात्रि विश्राम किया था, भी विकसित किया जाएगा। इन रात्रि पड़ावों पर मूलभूत सुविधाओं के साथ साधारण झोपड़ियां भी होंगी। माहौल सरल और मितव्ययी होगा जिसका मूल उद्देश्य गांधीवादी जीवन जीने के तरीके को महसूस कराना है।

इस मार्ग के पड़ावों में नडियाद, आनंद, नवसारी और सूरत के पास ताप्ती के तट को विकसित किया जाएगा। इन स्थानों पर स्मारक पत्थर होंगे, जिन पर उनके भाषण उत्कीर्ण होंगे। राज्य सरकार इन स्थानों पर आम, बरगद जैसे कुछ पेड़ों के संरक्षण और सुरक्षा की पहल भी कर रही है जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधी की यात्रा का हिस्सा थी।

उपमहानिदेशक डी. वेंकटेशन ने कहा कि महात्मा गांधी की विरासत भारत में पूरी तरह से सुरक्षित है। विभिन्न संग्रहालयों और स्मारकों से लेकर गांधी जी के आश्रम तक, उनके सत्य और अहिंसा के सिद्धांत और उनके महान जीवन की गवाही देते हैं। उन्हें समर्पित विभिन्न स्मारकों पर जाकर लाखों लोग प्रभावित होते हैं। मानव विकास में गांधी जी का योगदान बहुत महान और विविधतापूर्ण है जिसे अनदेखा कर दिया गया। दुनिया आज उसे मानवता से कहीं अधिक सम्मोहक सामाजिक नवोन्मेषक के रूप में पहचानती है।

राज्यों के पर्यटन मंत्रियों के साथ दो दिवसीय वर्चुअल बैठक

16 अक्टूबर, **2020** : माननीय पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री जी ने 15 और 16, अक्टूबर 2020 को नई दिल्ली में 21 राज्यों/ संघ शासित प्रदेशों के पर्यटन मंत्रियों/ अधिकारियों के साथ एक आभासी बैठक की। जिसमें राज्यों/ संघ शासित प्रदेशों के पर्यटन मंत्रियों/ अधिकारियों ने भाग लिया था। पर्यटन मंत्रालय के सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, महानिदेशक पर्यटन सुश्री मीनाक्षी शर्मा और पर्यटन मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण भी बैठक में शामिल हुए।

पर्यटन मंत्रालय हितधारकों के साथ पर्यटन क्षेत्र को सहायता प्रदान करने के लिए अथक प्रयास कर रहा है। मंत्रालय की ओर से विशेष रूप से घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देकर पर्यटन अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने हेतु पर्यटन और आतिथ्य उद्योग के हितधारकों के प्रतिनिधियों के साथ इनके समाधान और आगे बढ़ने के लिए निरंतर संवाद किया जा रहा है। मंत्रालय ने पर्यटन उद्योग की कठिनाइयों पर चर्चा करने के लिए इसके विभिन्न घटकों पर पिछले छह महीनों में विचार-मंथन बैठकों का आयोजन किया है।

इस बैठक में इन मुद्दों पर विचार विमर्श किया गया :

1) घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के बीच यात्रा को आसान बनाने की सुविधा,

2) राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिए किए गए उपाय,
3) सुरक्षा मानदंडों के पालन हेतु आतिथ्य उद्योग के लिए मूल्यांकन, जागरूकता और प्रशिक्षण प्रणाली (साथी) पर काम करना, और
4) पर्यटन क्षेत्र को पुनर्जिवित करने के लिए सुझाव देना तथा आतिथ्य उद्योग के राष्ट्रीय एकीकृत डेटाबेस (NIDHI) योजना पर काम करना जिसमें आतिथ्य इकाइयों का मजबूत डेटाबेस बनाने के लिए पर्यटन मंत्रालय की योजना शामिल है, आदि।

माननीय मंत्री जी ने इस अवसर पर कहा कि कोविड महामारी के कारण पर्यटन क्षेत्र सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा हितधारकों के साथ निरंतर संवाद तथा केन्द्र सरकार की पहलों के कारण इस क्षेत्र में धीरे धीरे सुधार हो रहा है और निकट भविष्य में इसके और गति पकड़ने की उम्मीद है।

उन्होंने पर्यटन मंत्रालय की 'साथी' और 'निधि' पहलों का उपयोग करने पर जोर दिया क्योंकि यह हमें पर्यटकों तथा आतिथ्य उद्योग के अधिक विश्वसनीय आंकड़े प्रदान कराती है और वर्तमान स्थिति में यह बहुत महत्वपूर्ण हो गई हैं। उन्होंने कहा कि पहले हमारे पास केवल 1400 होटल थे, लेकिन निधि पहल के कारण अब हमारे पास 27000 होटल हैं और इनकी संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। उन्होंने यह भी कहा कि साथी पहल के उपयोग से पर्यटकों में विश्वास पैदा होगा क्योंकि यह आतिथ्य उद्योग को सुरक्षित रूप से संचालित करने और कोविड महामारी से उत्पन्न खतरों को कम करने में मदद करता है।

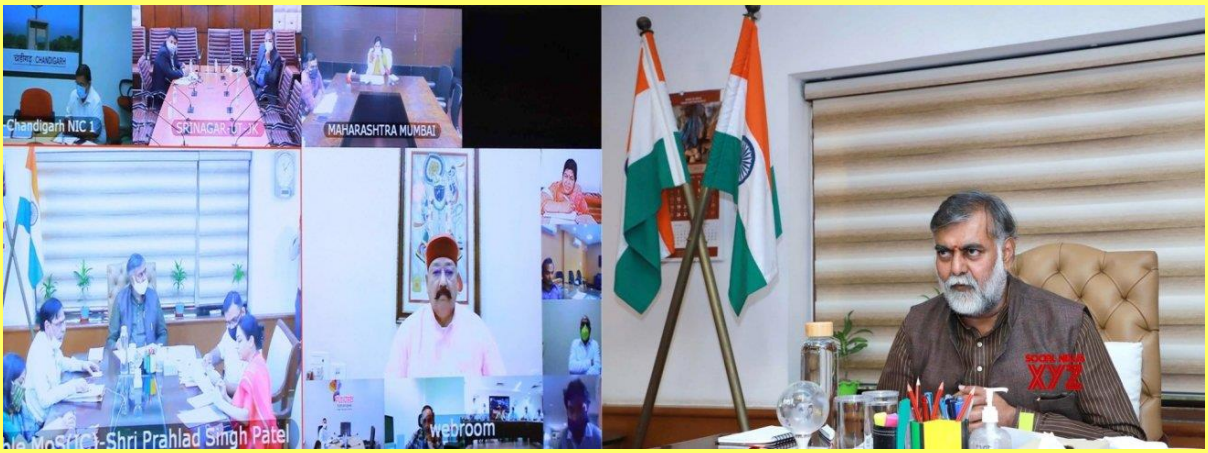

मंत्री जी ने इस अवसर पर चंडीगढ़ की ओर से किए गए प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि चंडीगढ़ में 110 होटल थे जिनमें से 108 'निधि' पर और 83 'साथी' पर पंजीकृत हो चुके हैं। उन्होंने राज्यों को सलाह दी कि वह अपने यहां पर्यटकों को आकर्षित करने और उनमें विश्वास बहाली के लिए इन दोनों प्लेटफार्मों के डेटा संकलन का इस्तेमाल करें।

उन्होंने राज्य सरकारों और संघ शासित प्रदेशों से अनुरोध किया कि वह राष्ट्रीय पर्यटन नीति के मसौदे पर जल्दी से जल्दी अपनी राय और सुझाव भेजें ताकि मंत्रालय इसे जल्दी अंतिम रूप दे सके।

पर्यटन मंत्रालय के 'देखो अपना देश' अभियान का उल्लेख करते हुए, उन्होंने राज्यों से घरेलू पर्यटन पर विशेष ध्यान केंद्रित करके इस अभियान में शामिल होने का आग्रह किया और राज्यों को अपने यहां पर्यटन स्थलों के प्रचार वाले 30-40 सेकेंड के वीडियो बनाने की सलाह दी क्योंकि आजकल पर्यटकों की पंसद ऐसी जगहों की हो गई हैं जहां अभी तक ज्यादा आना जाना नहीं हुआ है। उन्होंने राज्यों से अंतर्राज्यीय पर्यटकों की यात्रा को परेशानी मुक्त बनाने के लिए एक समान नियम अपनाने का भी आग्रह किया।

मंत्री जी ने गाइडों को प्रशिक्षित करने के लिए एक ऑनलाइन कार्यक्रम ''अतुल्य भारत पर्यटक सुविधा प्रमाणन'' के बारे में भी जानकारी दी जिसे इसे अखिल भारतीय स्तर पर रोजगार सृजित करने के एक संभावित माध्यम के रूप में देखा जाता है। वर्तमान में इस कार्यक्रम में लगभग 6000 व्यक्ति पंजीकृत हैं और इस तरह अंततः योग्य व्यक्ति ई-मार्केट प्लेस पर आ रहे हैं जिससे इस कार्यक्रम को भारत को पर्यटन गंतव्य के रूप में प्रस्तुत करने तथा उसके लिए बेहतरीन गाइड व्यवस्था के साथ पर्यटकों के अनुभव को बदलने की एक बड़ी क्षमता के रूप में देखा जाता है।

मेघालय के मुख्य मंत्री श्री कोनराड कोंगकल संगमा ने मेघालय द्वारा कोविड के समय का सदुपयोग करने का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने इस दौरान हितधारकों के प्रशिक्षण और उनमें क्षमता निर्माण, पर्यटन वेबसाइट को अपग्रेड किया, नए प्रचार वीडियो विकसित किए और राज्य के लिए बेहतर कनेक्टिविटी पर कार्य किया है । उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय संपर्क उड़ान योजना ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में कनेक्टिविटी में सुधार किया है और अब राज्य शिलांग से दिल्ली के लिए सीधी उड़ान शुरू करने की तैयारी कर रहा है।

केरल के पर्यटन मंत्री श्री कड़कम्पल्ली सुरेंद्रन ने पर्यटन क्षेत्र को प्रोतसाहित करने के लिए ऋण सहायता, संपत्ति कर जमा करने की समय सीमा बढ़ाए जाने, बिजली और पानी के बिलों के भुगतान में छूट सहित कई अन्य प्रोत्साहन उपायों का उल्लेख किया। राज्य ने 10 अक्टूबर से अंतर्राज्यीय आवाजाही के लिए पर्यटन उद्योग को खोल दिया है और बदले समय पर अपने नए विपणन अभियान के साथ तैयार है।

ओडिशा के पर्यटन मंत्री श्री ज्योति प्रकाश पाणिग्रही ने बताया कि देश के अन्य हिस्सों से पर्यटकों ने ओडिशा आना शुरु कर दिया है। लेकिन राज्य में अभी तक मंदिरों को पर्यटकों के लिए नहीं खोला गया है।

मिज़ोरम के पर्यटन मंत्री श्री पी.यू. रॉबर्ट रोमाविया रॉयटे ने उल्लेख किया कि वह यात्रियों की विश्वास बहाली के लिए नए तरीकों पर काम कर रहे हैं और इसके तहत राज्य में ''माइस'' पर्यटन, गोल्फ और साहसिक गतिविधियों के लिए नए उत्पाद विकसित किए गए हैं।

तमिलनाडु के पर्यटन मंत्री श्री थिरु वेल्लामंडी एन. नटराजन ने बताया कि राज्य ने एसओपी को वापस ले लिया है और राज्य अब पर्यटन को फिर से शुरू करने के लिए पर्यटकों का स्वागत करने के लिए तैयार है।

सिक्किम के पर्यटन मंत्री श्री बेडू सिंह पंथ ने बताया कि अब सिक्किम को अंतर्राज्यीय पर्यटन के लिए खोल दिया गया है। राज्य में पर्यटन गतिविधियां चरण बद्ध तरीके से शुरु की जाएंगी।

मंत्री जी ने उल्लेख किया कि पर्यटन मंत्रालय हितधारकों के साथ मिलकर पर्यटन क्षेत्र की मदद करने का अथक प्रयास कर रहा है और आतिथ्य उद्योग के प्रतिनिधियों के साथ निरंतर संवाद कर रहा है। विशेष रूप से घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने के माध्यम से मांग को पुनर्जीवित करके पर्यटन अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए समाधान और आगे बढ़ने के रास्ते निकाले जा रहे हैं। मंत्रालय ने उद्योग के कार्यक्षेत्र की कठिनाइयों पर चर्चा करने के लिए पर्यटन उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों के साथ पिछले छह महीनों में विचार-मंथन बैठकों का आयोजन किया है।

वैश्विक कोविड महामारी के दौरान बचाव के लिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा कई उपाय किए गए हैं। जिनमें देश में होटलों जैसी आवासीय इकाइयों का एक व्यापक राष्ट्रीय डेटाबेस तैयार किया जा रहा है। ऐसे डेटा की उपलब्धता से पर्यटन के संवर्धन और विकास, पर्यटल स्थलों की सम्पूर्ण जानकारी देने में मदद मिलेगी। इसके माध्यम से आवास के लिए, विभिन्न गंतव्यों की वहन क्षमता का आकलन, कुशल मानव संसाधनों के लिए आवश्यकताओं का आकलन और आपदा प्रबंधन योजनाएं तैयार करने में भी मदद मिलती है।

राज्य सरकारों और संघ शासित प्रदेशों के सहयोग से मंत्रालय अपने पोर्टल नेशनल इंटीग्रेटेड डेटाबेस ऑफ़ हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री (निधि) में देश में उपलब्ध आवास इकाइयों को पंजीकृत करने के लिए प्रयास कर रहा है। 13 अक्तूबर,2020 तक इस पोर्टल पर 25786 आवास इकाइयां पंजीकृत हो चुकी थी।

कोविड महामारी के खतरों से निपटने और आतिथ्य उद्योग को अपनी गतिविधियां सुरक्षित तरीके से संचालित करने में मदद करने के लिए मंत्रालय ने साथी पहल के माध्यम से भारतीय गुणवत्ता परिषद (QCI) के साथ भागीदारी की है। यह पहल माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के आह्वान के अनुरुप है। इससे सरकार द्वारा उद्योग को न केवल कोविड नियमों के बारे में जागरूक करना, बल्कि कर्मचारियों और मेहमानों के बीच विश्वास पैदा करना और आतिथ्य इकाइयों के कार्यस्थल पर सुरक्षा और स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्धता है।

अंत में राज्यों ने आश्वासन दिया कि वह गृह मंत्रालय और स्वास्थ्य मंत्रालय की सिफारिशों के अनुसार, यात्री सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए अनुशंसित प्रोटोकॉल के अनुरूप ही स्थानीय परिस्थितियों में अनुमति देंगे। राज्यों ने आतिथ्य क्षेत्र को आसान बनाने के लिए किए गए कार्यों को साझा किया और इस क्षेत्र को आगे ले जाने में पर्यटन मंत्रालय के साथ मिलकर काम करने के लिए सहमत हुए हैं। सभी ने इस बात की सराहना की कि घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 'देखो अपना देश' को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

ब्रिक्स पर्यटन मंत्रियों की बैठक

28 अक्टूबर, **2020** : पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री जी ने ब्रिक्स देशों के पर्यटन मंत्रियों की वर्चुअल बैठक में हिस्सा लिया। इस बैठक में ब्रिक्स के अन्य सदस्य देशों के पर्यटन मंत्री भी शामिल हुए। इस वर्चुअल बैठक के दौरान मंत्री जी ने कहा कि कोविड-19 महामारी के कारण सभी क्षेत्रों में विभिन्न आर्थिक गतिविधियों पर प्रतिकूल असर पड़ा है और विशेष रूप से वैश्विक स्तर पर पर्यटन क्षेत्र के लिए कई चुनौतियां खड़ी हो गई हैं। भारत भी ऐसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी और साहसिक नेतृत्व के कारण भारत सफलतापूर्वक इस महामारी का प्रबंधन करने में सक्षम रहा है।

उन्होंने बताया कि भारतीय पर्यटन, यात्रा और आतिथ्य उद्योग में काफी विविधताएं हैं। इसमें सूक्ष्म, लघु, मध्यम और बड़े उद्यम हैं। हमारे प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत के लिए एक दृष्टिकोण सामने

रखा है। मंत्रालय समाधान निकालने और खासतौर से घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देकर, फिर से मांग को बढ़ाकर पर्यटन अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए, पर्यटकों में आत्मविश्वास और भरोसा पैदा करने के लिए पर्यटन और आतिथ्य उद्योग के हितधारकों के प्रतिनिधियों के साथ लगातार विचार-विमर्श करता रहा है।

भारत ने 18 देशों के साथ बबल अरेंजमेंट किया है। भारत ने कारोबार, सम्मेलन, रोजगार, अध्ययन, अनुसंधान और चिकित्सा उद्देश्यों के लिए मौजूदा वीजा को भी बहाल कर दिया है। स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ पर्यटन मंत्रालय ने आगंतुकों और कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यात्रा और आतिथ्य क्षेत्र के सभी सेवा प्रदाताओं को शामिल करते हुए कोविड-19 सुरक्षा और स्वच्छता प्रोटोकॉल और परिचालन दिशानिर्देश तय किए हैं।

अंत में, मंत्री जी ने इस चुनौतीपूर्ण समय में ब्रिक्स बैठक की सफल अध्यक्षता के लिए रूसी संघ की सराहना की और 2021 में भारत की अध्यक्षता के दौरान सभी ब्रिक्स सदस्य देशों के साथ मिलकर काम करने की तत्परता व्यक्त की।

केरल के गुरुवायुर में "पर्यटक सुविधा केंद्र" का उद्घाटन

04 नवम्बर, 2020 : माननीय मंत्री जी ने पर्यटन मंत्रालय की प्रशाद योजना के तहत आज वर्चुअल माध्यम से "केरल में गुरुवायुर का विकास" परियोजना के तहत बनाए गए "पर्यटक सुविधा केंद्र" का उद्घाटन किया। विदेश राज्य मंत्री श्री वी. मुरलीधरन और केरल सरकार के सहकारिता एवं पर्यटन मंत्री श्री के. सुरेंद्रन भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

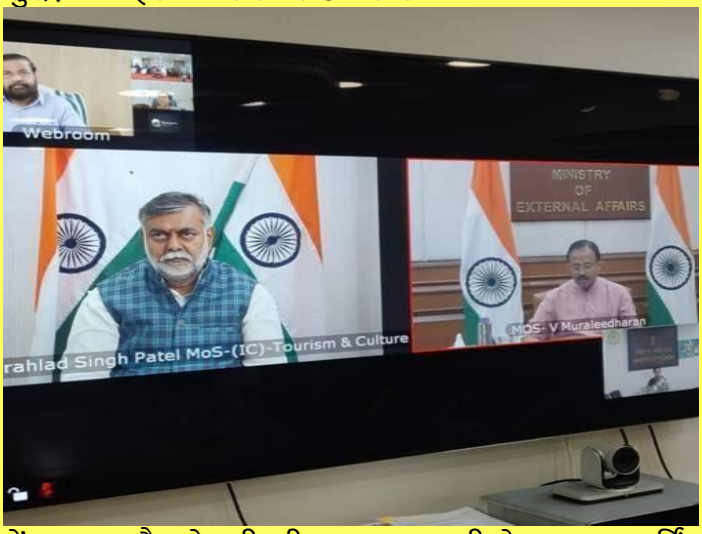

उन्होंने बताया कि पर्यटन मंत्रालय ने साल 2014-15 में प्रशाद योजना की शुरुआत की है। इसका उद्देश्य पहचान किए गए तीर्थ और विरासत स्थलों का समेकित विकास करना है, जिसमें प्रवेश बिंदु (सड़क, रेल और जल परिवहन), सूचना/ व्याख्या केंद्र जैसी आधारभूत पर्यटन सुविधाएं, मुद्रा विनिमय/ एटीएम, परिवहन के पर्यावरण-अनुकूल तरीके, नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों से क्षेत्र में प्रकाश और रोशनी की व्यवस्था, मल्टी लेवल कार पार्किंग, पीने का पानी, शौचालय, क्लॉक रूम, वेटिंग रूम, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, क्राफ्ट बज़ार, स्मारिका दुकानें, कैफेटेरिया, वर्षाश्रय, दूरसंचार सुविधाएं, इंटरनेट कनेक्टिविटी आदि का विकास करना है। योजना के तहत मार्च 2017 में "गुरुवायुर के विकास" की परियोजना को पर्यटन मंत्रालय ने 45.36 करोड़ रुपये की लागत पर स्वीकृति प्रदान की थी।

मंत्री जी ने अंतर्राष्ट्रीय मानकों की सुविधाएं बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा जारी की गई निधियों के सबसे अच्छे उपयोग के लिए राज्य सरकार की प्रशंसा की। उन्होंने पर्यटन मंत्रालय से पर्यटन क्षेत्र के तहत हर आवश्यक सहयोग और समर्थन के लिए राज्य सरकार को आश्वासन दिया।

'साहसिक पर्यटन के 12 माह' पर वेबिनार

अतिथि देवो भव

28 नवम्बर, 2020 : पर्यटन मंत्रालय ने 'देखो अपना देश' वेबिनार श्रृंखला के तहत साहसिक पर्यटन पर केन्द्रित "साहसिक पर्यटन के 12 माह" पर 28.11.2020 को एक वेबिनार का आयोजन किया, जिसमें भारत को पूरे वर्ष पर्यटन गंतव्य स्थान के तौर पर रेखांकित किया गया। समृद्ध प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों से भरपूर भारत को वैश्विक पर्यटन और पर्यटन सूचकांक में 34वां स्थान प्राप्तं है। विश्व आर्थिक मंच ने पूरे विश्व में प्राकृतिक धरोहर सूचकांक में भारत को पांचवा उत्तम गंतव्य स्थान का दर्जा प्रदान किया है। देश में असीमित प्राकृतिक संसाधन है जिनकी खोज की जानी बाकी है और इसे एक अनुभव के तौर पर लेते हुए भारत में साहसिक पर्यटन की अपार संभावनाएं प्रदान करता है। 'देखो अपना देश' वेबिनार श्रृंखला एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत देश की समृद्ध विविधता को दर्शाने का एक प्रयास है और इस वर्चुअल प्लेटफॉर्म के द्वारा एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना को लगातार प्रचार किया जा रहा है।

यह वेबिनार वर्चुअल आधार पर किसी भी व्यक्ति को देश की मजबूती, क्षमता और पर्वतों, जंगलों, नदियों, मरुस्थलों, जंगलों, द्वीपों, नहरों, वन्यजीव एवं 31 से अधिक साहसिक गतिविधियों के छिपे रहस्यों के बारे में बताता है जो किसी भी भारतीय और विदेशी पर्यटक को लुभाएगा।

इस वेबिनार को श्री तेजबीर सिंह आनंद, प्रबंध निदेशक हॉलिडे मूड्स एडवेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड ने प्रस्तुत किया। श्री तेजबीर सिंह को भारतीय पर्यटन उद्योग के क्षेत्र में तीन दशकों से अधिक का अनुभव प्राप्ता है और उन्हें भारतीय एडवेंचर्स टूर्स ऑपरेटर्स एसोसिएशन (**ATOAI)** ने 'हॉल ऑफ फेम अवार्ड' से सम्मानित किया है।

श्री तेजबीर सिंह ने साहसिक पर्यटन की परिभाषा देते हुए अपने प्रस्तुतिकरण की शुरुआत की और बताया कि साहसिक पर्यटन को 'चुनौतीपूर्ण अभियानों के मृदु अनुभव' के रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है और इसके आवश्यक तत्व बहुत ही अहम है जिनमें प्रकृति और इसमें शामिल की जाने वाली गतिविधियां, उस स्थान विशेष की संस्कृति और अंत में पर्यटक का अपने अनुभव शामिल होते हैं, जो चुनौतियों के आधार पर निर्भर करते हुए नए और विशिष्ट हो सकते हैं ।

भारतीय एडवेंचर टूर्स ऑपरेटर्स एसोसिएशन (**ATOAI)** की स्थापना देश में साहसिक पर्यटन के क्षेत्र में अपार संभावनाओँ के बारे में जागरुक करने के उद्देश्य से की गई थी और इसका उद्देश्य इसे सुरक्षित, संवेदनशील और पर्यावरण अनुकूल तरीके से हासिल करना है। यह एसोसिएशन देश में साहसिक पर्यटन की क्षमताओं के बारे में विदेशी पर्यटकों को जागरुक करने के लिए भी कार्य करती है।

भारत विश्व के उन कुछ गिने-चुने देशों में से एक है, जिसका प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक आकर्षण हर किसी को लुभाता है और हर प्रकार के कल्पना योग्य परिदृश्य के बारे में अनेक अवसर प्रदान करता है। हिमालय की हमेशा बर्फ से ढके रहने वाली चोटियों से लेकर पूर्ण वेग से बहती नदियां, कल-कल बहते झरने, घने जंगल, वन्य जीवन से भरपूर वन्य क्षेत्र, खूबसूरत घाटियां, विशाल समुद्री तट, चांद को निहारने के जादुई दृश्य, पश्चिम के विशाल रेगिस्तान से लेकर प्राचीन परंपराएं और विविध रंगो युक्त संस्कृति के उत्सव सभी यात्रियों के लिए अनोखा रोमांच प्रस्तुत करते हैं।

हमारी प्राकृतिक विरासत के संवर्धन के साथ ही, इसकी क्षमता को बचाने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि एक ही गंतव्य पर बहुत सारे पर्यटकों को लाने से बचा जाना चाहिए। यदि हमारी प्राकृतिक विरासत ही खतरे में पड़ जाएगी तो यह पर्यटकों के लिए बहुत ही खराब और आसपास के गंदे क्षेत्रों के अनुभव का कारण बनेगी। हमें किसी भी स्थान पर एक साथ अधिकतम लोगों को वहन करने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आवश्यक पहल करने की आवश्यकता है। एक पर्यटक के लिए सबसे अच्छा अनुभव प्राकृतिक धरोहर से रूबरू होना है।

अपर महानिदेशक सुश्री रूपिंदर बरार ने वेबिनार को समाप्त करते हुए कहा कि साहसिक पर्यटन और संस्कृति के नजरिए से भारत पूरे वर्ष एक पसंदीदा गंतव्य स्थान है। आज हम वर्चुअल रूप से यात्रा कर रहे हैं लेकिन वह दिन दूर नहीं जब हम अपने सामान को पैक करके सचमुच की यात्रा में शामिल होंगे।

'एसोसिएशन ऑफ बौद्धिस्ट टू ऑपरेटर्स का अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन'
मंत्री जी द्वारा आभासी माध्यम से उद्घाटन

10 दिसंबर 2020 : माननीय पर्यटन मंत्री जी ने नई दिल्ली में वर्चुअल माध्यम से एसोसिएशन ऑफ बुद्धिस्ट टूर ऑपरेटर्स- (ABTO) के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। बिहार के बोधगया में 10-12 दिसंबर 2020 तक तीन दिवसीय सम्मेलन का पर्यटन मंत्रालय की साझेदारी में आयोजन किया गया था।

इस अवसर पर उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि सरकार देश में बौद्ध पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रयास कर रही है। इस दिशा में बीते छह वर्षों में किए गए सरकारी उपायों पर रोशनी डालते हुए उन्होंने उल्लेख किया कि बौद्ध स्थलों के विकास के लिए मंत्रालय ने स्वदेश दर्शन योजना के तहत 350 करोड़ रुपये और प्रसाद योजना के तहत 900 करोड़ रुपये से ज्यादा की राशि स्वीकृत की है।

पर्यटन के क्षेत्र में अन्य उपायों को रेखांकित करते हुए, उन्होंने बताया कि मध्य प्रदेश के सांची स्मारक में सिंहली भाषा में और श्रावस्ती व सारनाथ में चीनी भाषा में संकेतक लगाए गए हैं और मंत्रालय ने तय किया है कि जहां कहीं भी किसी एक देश से आने वाले पर्यटकों की संख्या एक लाख से ज्यादा है, वहां पर उनकी सुविधा और सहूलियत के लिए उनकी भाषा में संकेतक लगाए जाएंगे।सरकार सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर पर्यटकों को सही जानकारी देने और उनकी मदद के लिए सेवा प्रदाताओं को सुविधाएं देने का प्रयास कर रही है। उन्होंने यह भी कहा कि पर्यटन मंत्रालय के साथ काम करने में सभी हितधारक अपनी सलाह और उन्हें आने वाली किसी भी दिक्कत के बारे में बताएं, हम उनके सुझावों पर अपनी तरफ से उनका समाधान करने की पूरी कोशिश करेंगे ।

"बर्डिंग इन इंडिया" पर वेबिनार

12 दिसम्बर, 2020 : पर्यटन मंत्रालय ने 'देखो अपना देश' श्रृंखला के अंतर्गत "बर्डिंग इन इंडिया" शीर्षक से एक वेबिनार का आयोजन किया जिसका उद्देश्य भारत में पक्षियों से जुड़े अवसरों पर ध्यान केंद्रित करना था। भारत जैव विविधता की दुनिया में सबसे समृद्ध है। यह हिमालय, रेगिस्तान, समुद्रतट, वर्षावन और उष्णकटिबंधीय द्वीपों से लेकर लगभग सभी प्रकार के पारिस्थैतिक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है और यहां 1300 से अधिक विदेशी पक्षी प्रजातियों के साथ-साथ, भारत में ही मिलने वाली कुछ विशेष प्रजातियों जैसे इंडियन रोलर, हॉर्नबिल्स, सारस क्रेन, ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, कठफोड़वा, नीलकंठ के अलावा कई अन्यर मनमोहक पक्षियों का प्राकृतिक वास औार उत्पत्ति का स्थान है।

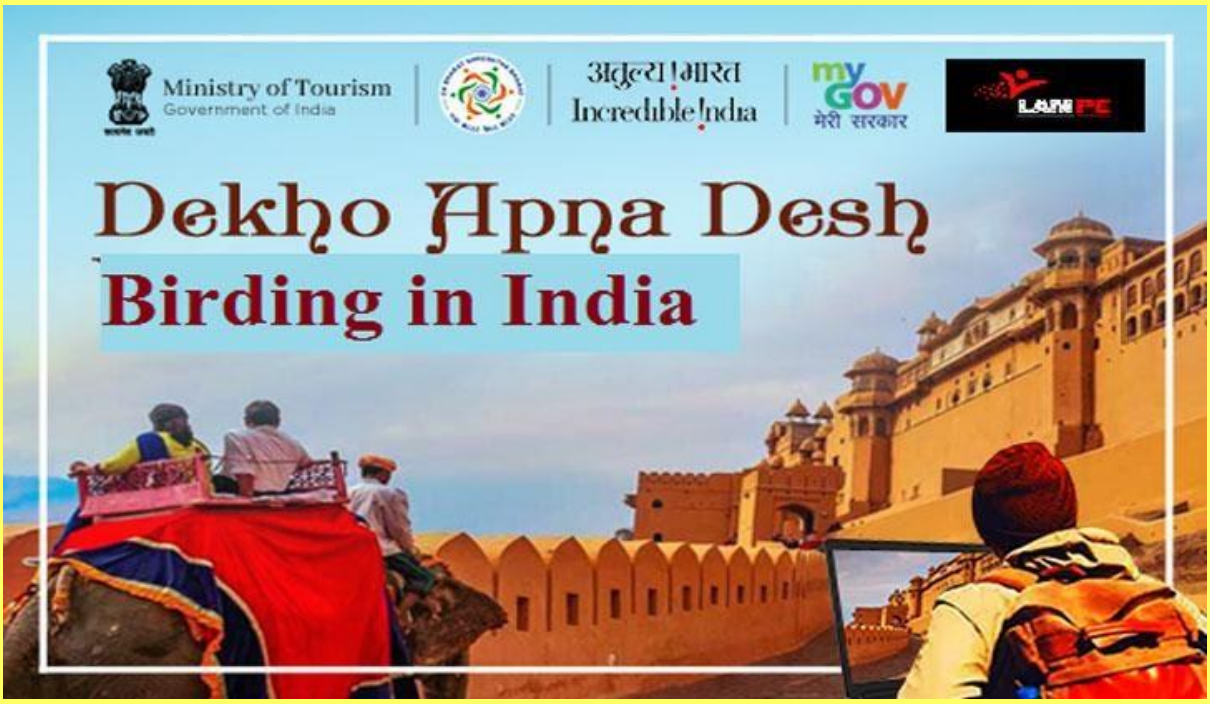

वेबिनार की प्रस्तुति इस क्षेत्र में अध्ययन की रूचि और दुर्लभ पक्षियों के दस्तावेजों का संग्रहण करने वाले प्रकृतिवादी, वन्यजीव फोटोग्राफर और एक फिल्म निर्माता के रूप में सक्रिय श्री सौरभ सावंत द्वारा की गई। उनके शोध कार्य में मुख्य रूप से पक्षी, उभयचर और दंतपक्षी शामिल हैं। उन्होने बताया कि भारतीय संस्कृति में पक्षी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पौराणिक कथाओं में, विभिन्न पक्षियों को देवीयों और देवताओं के वाहन के रूप में दर्शाया गया है। पक्षी भी युगों से मानव के बहुत करीब रहे हैं और यह पाषाण युग से लेकर आधुनिक युग तक रॉक पेंटिंग, गुफा पेंटिंग, मुगल पेंटिंग में उकेरे चित्रों में मनुष्य के जीवन के लिए बहुत प्रेरणादायक होने के साथ-साथ उनका अभिन्न अंग रहे हैं।

पंछी प्रेक्षण यानि बर्डिंग एक ऐसी गतिविधि है जो हमें न सिर्फ प्रकृति और स्थानीय समुदायों के करीब ले जाती है अपितु यह हमारी संवेदनाओं को और भावपूर्ण बनाती है। एक उत्साहपूर्ण यात्रा में स्थानीय संस्कृति की जानकारी लेना और उसे समझना, स्थानीय समुदायों के साथ रहना और उनके परिवेश और खान-पान का अध्ययन करना, वृक्षों पर बने मोखों में रहने वाले पक्षियों का अध्य यन करना और पशु-पक्षियों की आवाजें सुनना, यह सब अनुभवों की एक बेहतरीन दुनिया है।

पंछी देखना (बर्ड वाचिंग) पर्यटन दुनिया भर में एक बिलियन डॉलर का उद्योग है। पंछी देखने के उद्देश्य से हर वर्ष लाखों देशी-विदेशी यात्राएं की जाती हैं। दुनिया भर में पक्षियों की लगभग 11,000 प्रजातियां हैं और इनमें से 1300 से अधिक प्रजातियां भारत में पाई जाती हैं। भारत में हिमालय से लेकर रेगिस्तान, पश्चिमी घाट, दक्षिणी प्रायद्वीप, गंगा के मैदान, उत्तर-पूर्व क्षेत्र और द्वीपों के विभिन्न क्षेत्रों में जैव विविधता की व्या,पक क्षमता है। भारत में स्तनधारी, पक्षी, सरीसृप, उभयचर और तितलियों की अनुमानित 91,000 प्रजातियां है। इन प्रजातियों और पर्यावरण की रक्षा करने के लिए जागरूकता पैदा करने हेतु सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा विभिन्न स्तरों पर प्रयास किए जा रहे हैं।

पक्षियों के औपचारिक वैज्ञानिक अध्ययन को 'ऑर्निथोलॉजी' कहा जाता है। पक्षियों को निहारने की प्रक्रिया में उनकी पहचान करना और मन बहलाव के लिए उनके व्यवहार को समझना शामिल है। पक्षियों के प्रति आकर्षण तेजी से बढ़ रहा है और इसका आनंद सभी आयु समूहों द्वारा लिया जा रहा है।

राष्ट्रीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य पर्यटन संवर्धन बोर्ड की 5वीं बैठक

14 दिसंबर 2020 : माननीय पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री जी राष्ट्रीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य पर्यटन संवर्धन बोर्ड की 5वीं बैठक में वर्चुअल रूप से शामिल हुए। राष्ट्रीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य पर्यटन संवर्धन बोर्ड का गठन चिकित्सा पर्यटन की प्रगति में आने वाली बाधाओं को दूर करने और चिकित्सा पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन और 'आयुष' (यानी आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध तथा होमियोपैथी) के अंर्तगत आने वाली भारतीय चिकित्सा प्रणाली के किसी अन्य प्रारूप को भी आगे बढ़ाने के लिए एक समर्पित संस्थागत संरचना उपलब्ध कराने के उद्देश्य से किया गया था। इस बैठक में मेदांता के डॉ. नरेश त्रेहन, एम्स के निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया, नारायण हेल्थ के अध्यक्ष डॉ. देवी प्रसाद शेट्टी जैसे जाने-माने डॉक्टर और बोर्ड के अन्य सदस्य शामिल हुए।

मंत्री जी ने बताया कि योग और आयुर्वेद को बढ़ावा देने का यह उचित समय है। योग और आयुर्वेद लोगों की समय की जरूरत बनते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत में ऐसे 34 अस्पताल हैं जो जॉइंट कमीशन इंटरनेशनल (**JCI)** से मान्यता प्राप्त हैं। इसके अलावा, 578 अस्पताल स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (**NABH)** के तहत आते हैं।

माननीय मंत्री जी ने कहा कि आयुष्मान भारत के तहत बड़ी तादाद में अस्पतालों का उन्नयन किया गया है। इस प्रकार अब यह अस्पताल भी **NABH** में शामिल हो जाएंगे और इनका स्तर भी **JCI** स्तर का हो जाएगा। इससे चिकित्सा पर्यटन के लिए भारत आने वाले लोगों के पास अस्पताल चयन के अधिक विकल्प होंगे।

चिकित्सा और स्वारूथ्य पर्यटन में तेजी से वृद्धि हो रही है। वैश्विक चिकित्सा पर्यटन बाजार, जो 2016 में 19.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर का था, इसके 2021 तक 18.8 प्रतिशत वृद्धि के आधार पर 46.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाने का अनुमान है। एशिया-प्रशांत का इस वैश्विक बाजार में 40 प्रतिशत का सबसे अधिक योगदान है।

विश्व के 130 से अधिक देश इस वैश्विक बाजार का अंग बनने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। दुनिया के लोकप्रिय पर्यटन स्थरलों में भारत, ब्रुनेई, क्यूबा, कोलंबिया, हांगकांग, हंगरी,जॉर्डन,
मलेशिया, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, थाईलैंड और उत्तरी अमेरिका आदि शामिल हैं। चिकित्सा पर्यटन में यात्रा और पर्यटन के साथ-साथ प्राथमिक और मुख्यत: जैव चिकित्सा प्रक्रियाएं शामिल हैं। उन्होंने कहा कि केवल तीन वर्षों की अवधि में ही भारत आने वाले चिकित्सा पर्यटकों की संख्या दोगुनी हो गई है। भारत पर्यटन सांख्यिकी 2018 की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2017 में पश्चिम एशिया से लगभग 22 प्रतिशत पर्यटक आगमन चिकित्सा के उद्देश्य से ही हुआ। इसके बाद, अफ्रीका से 15.7 प्रतिशत पर्यटक चिकित्सा के उद्देश्य से भारत आए थे।

गोवा में घरेलू पर्यटन पर रोड शो

19 दिसम्बर, 2020: पर्यटन मंत्रालय ने भारतपर्यटन कार्यालय, गोवा के माध्यम से घरेलू पर्यटन रोड शो का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का आयोजन गोवा पर्यटन और ट्रैवल एंड टूरिज़्म एसोसिएशन ऑफ गोवा (टीटीएजी) के सहयोग से किया गया। यह पश्चिमी और मध्य क्षेत्र में घरेलू पर्यटन रोड शो की श्रृंखला का दूसरा आयोजन था। इस रोड शो का विशेष उद्देश्य महाराष्ट्र और गोवा के टूर ऑपरेटरों के बीच लाभकारी सम्पर्क कायम करना था।

महाराष्ट्र टूर ऑपरेटर्स के प्रतिनिधि मंडल में 15 टूर ऑपरेटर शामिल थे, जो सड़क यात्रा का अनुभव महसूस करने के लिए सड़क मार्ग से गोवा आए थे। अब इस तरह की सड़क यात्राएं देश भर में लोकप्रिय हो रही हैं। ट्रैवल एंड टूरिज़्म एसोसिएशन ऑफ गोवा (टीटीएजी) के 30 सदस्यों ने इस रोड शो में भाग लिया।

पर्यटन मंत्रालय में अपर महानिदेशक सुश्री रूपिंदर बराड़ के ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि घरेलू पर्यटन को सार्थक, दीर्घकालीन और संपूर्ण रूप से विकसित किए जाने पर यह किस प्रकार से वर्ष भर अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए भारत में एक असाधारण मंच प्रदान करता है।

इससे अभिप्राय है कि चाहे आवास, आतिथ्य या ग्राहक सेवा हो अथवा गुणवत्ता इन सभी के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। उन्होंने मंत्रालय के द्वारा पर्यटन के क्षेत्र में की जा रही विभिन्न पहलों जैसे 'देखो अपना देश' अभियान और विख्यात 'देखो अपना देश – वेबिनार' श्रृंखला के बारे में भी जानकारी दी।

गोवा सरकार के पर्यटन सचिव श्री जे. अशोक कुमार ने गोवा सरकार की नई पर्यटन नीति के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इसका उद्देश्य राज्य में पर्यटन को तटीय क्षेत्रों से आंतरिक क्षेत्रों तक स्थानांतरित करना, समुद्र तटों की स्वच्छता के लिए एक समर्पित एजेंसी और समुद्र तटों के लिए एक समर्पित पुलिस बल बनाना है।इस रोड शो के आयोजन में होटल प्रबंध संस्थान, गोवा, गोवा टूरिज्म, टीटीएजी द्वारा उत्कृष्ट सहयोग दिया गया। ट्रैवल एंड टूरिज्म एसोसिएशन ऑफ गोवा के अध्यक्ष श्री नीलेश शाह ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया।

'देखो अपना देश' **"भारतीय पाक शैली का राज़ और लुत्फ"**

26 दिसंबर, 2020 को आयोजित देखो अपना देश वेबीनार श्रृंखला का शीर्षक था "भारतीय पाक शैली का राज और उसका लुत्फ" जो भारतीय व्यंजनों और उनके महत्व पर केन्द्रित था। भारत में बेशुमार व्यंजनों, खाना पकाने की शैलियों का एक जीवंत संकलन है और जिसकी विशेषता स्पष्ट रूप से स्थानीय रूप से उपलब्ध मसालों, अनाज, फलों और सब्जियों के सूक्ष्म और परिष्कृत उपयोग से पता चलती है। भारतीय भोजन एक संतुलित भोजन है क्योंकि यह सभी प्रकार के स्वादों जैसे नमकीन, मीठा, कड़वा या मसालेदार व्यंजनों से संतुष्टि प्रदान करता है।

म.प्र. 1982 बैच कैडर की सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी डॉ. अरुणा शर्मा ने वेबिनार प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत में परिदृश्य, संस्कृति तथा भोजन हर सौ किलोमीटर में बदल जाते हैं । भारत में खाद्य संस्कृति बहुत ही जीवंत और विभिन्न रूपों और शैली में, घर के पके हुए भोजन से लेकर, स्ट्रीट फूड के बढ़िया भोजन के अनुभव तक उपलब्ध है। यह कितना सच है! हमारे असाधारण देश में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक खाना पकाने की शैलियों और व्यंजनों की अंतहीन किस्में हैं। भारतीय भोजन स्थानीय रूप से उपलब्ध अनाजों, सब्जियों, मसालों आदि के साथ पोषण के समग्र दृष्टिकोण पर आधारित है। उन्होंने मुख्य रूप से स्थानीय स्तर पर उगाए जाने वाले खाद्यान्नों, सब्जियों और मसालों के महत्व और प्रतिरक्षा निर्माण में उनके महत्व का उल्लेख किया।

वेबिनार के समापन पर अपर महानिदेशक सुश्री रूपिन्दर बराड़, ने देश भर में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के व्यंजनों के बारे में बताते हुए कहा कि भारत के नागरिकों को पर्यटन उद्योग का हिस्सा बनाने के लिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा एक डिजिटल पहल देखो अपना देश श्रृंखला देश की सुंदर विविध संस्कृति पर प्रकाश डालती है और एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना को उजागर करती है।

'एक विरासत अपनाएं: अपनी धरोहर, अपनी पहचान'
परियोजना की समीक्षा बैठक

28 दिसम्बर, 2020: पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री जी ने 'एक विरासत अपनाएं: अपनी धरोहर, अपनी पहचान' परियोजना की समीक्षा बैठक की। पर्यटन मंत्रालय के सचिव श्री योगेंद्र त्रिपाठी, पर्यटन मंत्रालय की महानिदेशक सुश्री मीनाक्षी शर्मा, पर्यटन मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों सहित भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रतिनिधि भी इस बैठक में उपस्थित थे।

समीक्षा बैठक में विभिन्न स्मारकों की वर्तमान स्थिति और प्रगति के बारे में एक प्रस्तुति दी गई। माननीय मंत्री जी ने परियोजनाओं को तय समय में पूरा करने पर जोर देते हुए, अधिकारियों को समय-समय पर नोडल विभागों के साथ समझौता ज्ञापनों के तहत प्रस्तावित सुविधाओं की समीक्षा करने के निदेश दिए।

मंत्री जी आगे कहा कि 'एक विरासत अपनाएं' एक अच्छी पहल है और इसे कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व (CSR) से लाभ मिलने की आशा है। यह परियोजना कम ख्याति वाले स्मारकों में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने में मदद करेगी।

पर्यटन मंत्रालय 'एक विरासत अपनाएं: अपनी धरोहर, अपनी पहचान' परियोजना का संचालन कर रहा है। यह परियोजना पूरे देश में विरासत/ प्राकृतिक/ पर्यटन स्थलों पर पर्यटन सुविधाओं को योजनाबद्ध और चरणबद्ध तरीके से विकसित करने और इन्हें पर्यटकों के अनुकूल बनाने के लिए पर्यटन मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और राज्यों/ संघ शासित प्रदेशों की सरकारों द्वारा किया जा रहा एक सहयोगात्मक प्रयास है। इस परियोजना का उद्देश्य सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ ट्रस्टों, गैर-सरकारी संगठनों, एकल और अन्य पक्षधारकों को 'स्मारक मित्र' बनने के लिए प्रेरित करना है।

इसके अलावा यह सीएसआर के तहत एक सतत निवेश मॉडल के संदर्भ में अपनी रूचि और व्यवहार्यता के अनुरूप इन स्थलों पर बुनियादी और उन्नत पर्यटन सुविधाओं के विकास और उन्नयन की जिम्मेदारी के साथ ही इनके संचालन और प्रबंधन का भी काम देखती हैं।

परियोजना के तहत देशभर में 25 स्थलों और दो तकनीक हस्तक्षेपों के लिए 12 स्मारक मित्रों के साथ 27 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इन स्थलों पर सुविधाओं के कार्यान्वयन के लिए सौंपे गए समझौता ज्ञापनों में कई मूलभूत सुविधाएं जैसे स्थलों का सौंदर्यीकरण, रोशनी, बेंचों की व्यवस्था, एप आधारित बहुभाषायी ओडियो गाइड, डिजिटल टिकट कियोस्क की स्थापना, विवरणात्मक/ निर्देशात्मक संकेतक और वाई-फाई, स्वच्छ पेयजल, सफाई, कूड़ादान, कचरा प्रबंधन, शौचालय की सुविधा आदि के

साथ कार्यान्वयन के तहत अन्य सुविधाओं में आगंतुक सुविधा केंद्र, साउंड एंड लाइट शो, 3-डी प्रोजेक्शन मैपिंग (आंतरिक एवं बाहरी), स्नैक काउंटर एवं स्मारिका की दुकानें भी शामिल हैं।

आगामी अंक के आकर्षण

अंडमान एवं निकोबार के कुछ अनदेखे रहस्य **: सुन्दर लाल 'सुनहरी'**
स्वर्ण त्रिभुज के अज्ञात गंतव्य - आडिशा पर्यटन **: अबिनाश दाश**
भूतनाथ - एक कहानी **: सुशांत सुप्रिय**
खजुराहो यात्रा - एक अविस्मरणीय दैवीय अनुभव **: डॉ. विदुषी शर्मा**
मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर **: आशाबेन पटेल**
स्वर्णनगरी जैसलमेर से निकली आशा की किरण **: डा. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा**
छत्तीसगढ़ के व्यंजन : **सल्ला विजयकुमार और श्रीमती यशोधरा पांडा**

'देखो अपना देश' वेबिनार श्रृंखला की प्रस्तुति इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के साथ तकनीकी साझेदारी में राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस विभाग द्वारा की गई है। इन वेबिनारों के सत्र https://www.youtube.com/channel/UCbzIbBmMvtvH7d6Zo_ZEHDA/featured पर उपलब्ध होने के साथ-साथ पर्यटन मंत्रालय के सभी सोशल मीडिया हैंडल पर भी उपलब्ध हैं।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने 15 -16 अक्टूबर, 2020 को नई दिल्ली में राज्यों के पर्यटन मंत्रियों के साथ एक आभासी बैठक की अध्यक्षता की । इस अवसर पर सचिव (पर्यटन) श्री योगेंद्र त्रिपाठी तथा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

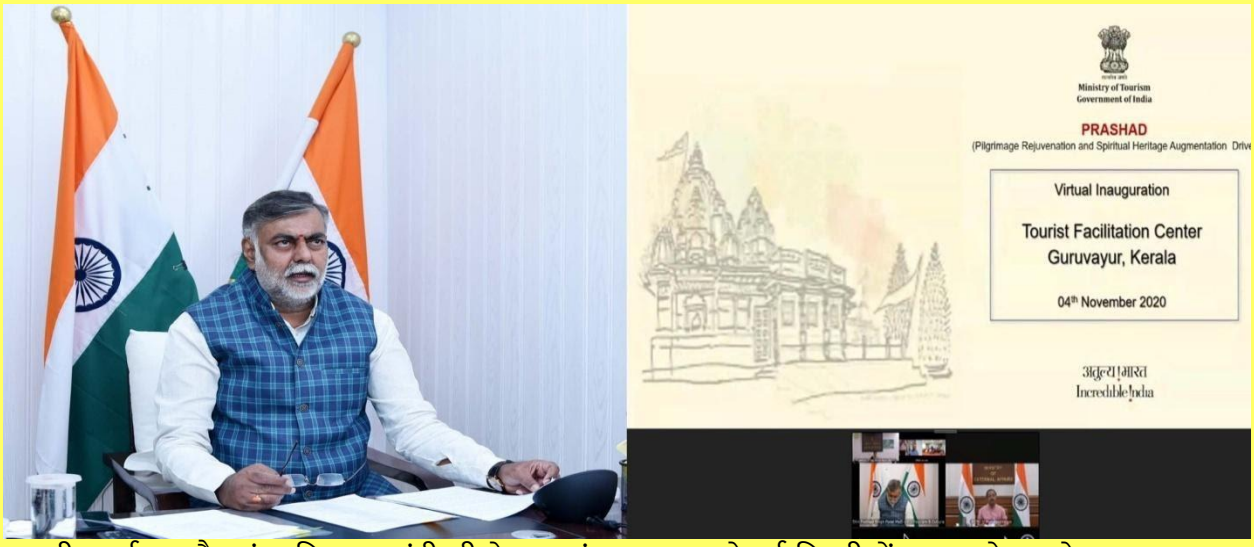

माननीय पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री जी ने 04 नवंबर, 2020 को नई दिल्ली में प्रशाद योजना के तहत गुरुवयूर, केरल में "पर्यटक सुविधा केंद्र" सुविधा का वर्चुअल उद्घाटन किया।

माननीय पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री जी ने 10 दिसंबर, 2020 को नई दिल्ली में बौद्ध टूर ऑपरेटरों का संघ(ABTO) के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का वर्चुअल उद्घाटन किया।

पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री जी ने 14 दिसंबर, 2020 को नई दिल्ली में राष्ट्रीय चिकित्सा एवं कल्याण पर्यटन संवर्धन बोर्ड की 5वीं बैठक की अध्यक्षता की। सचिव(पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी तथा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री जी ने 28 दिसंबर, 2020 को नई दिल्ली में पर्यटन और संस्कृति मंत्रालयों तथा भारतीय पुरातत्वम सर्वेक्षण के अधिकारियों के साथ 'एक विरासत को अपनाएं' पर समीक्षा बैठक की अध्य क्षता की ।

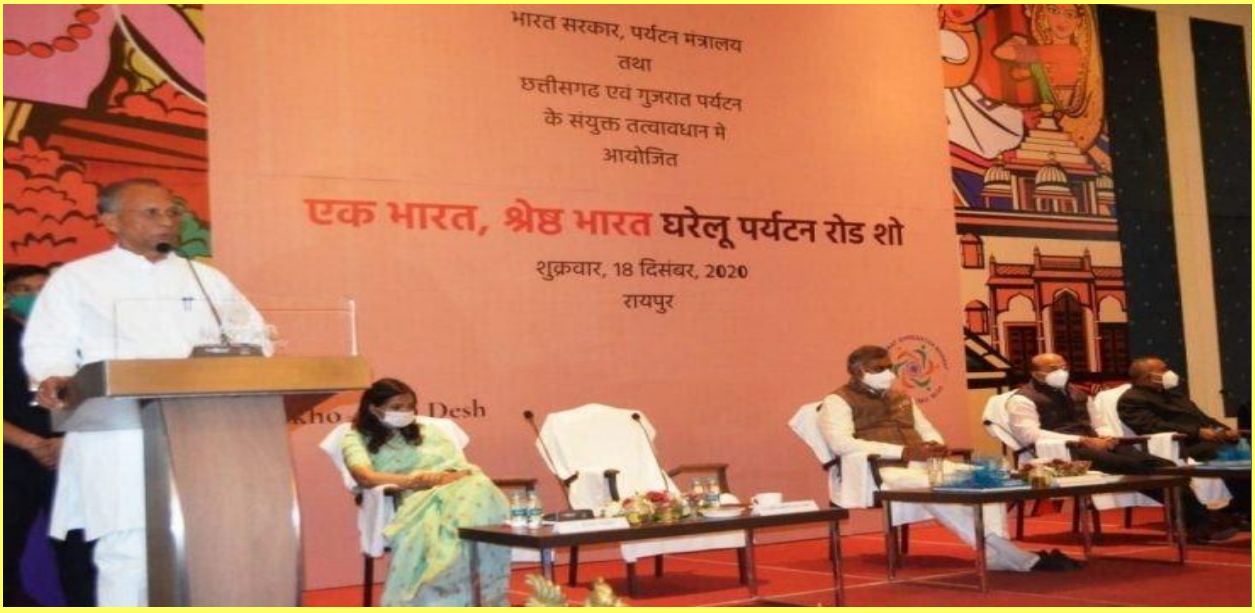

पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार ने 18 दिसंबर को रायपुर, छत्तीसगढ़ में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत - घरेलू पर्यटन रोड शो' का आयोजन किया था। इस अवसर पर पर्यटन राज्यमंत्री तथा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी सम्मिलित हुए ।

सावधान मत भूलिए.... अभी कोरोना महामारी खत्म नहीं हुई है

संभलकर रहिए, गई नहीं है महामारी ! छोटी सी लापरवाही पड़ सकती है भारी

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

नेता जी सुभाष द्वीप पर अवशेष

अष्टलक्ष्मी मंदिर में नृत्योत्सव

रामनायकन इको-पार्क, कृष्णागिरी

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, कमरा नं-2, 7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,
36, जनपथ, नई दिल्ली -110001

पर्यटक हैल्पलाइन 1800111363 लघु कोड : 1363 [24X7]